राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला



प्रधान सम्पादक—फतहसिंह, एम०ए०, डी० लिट्०

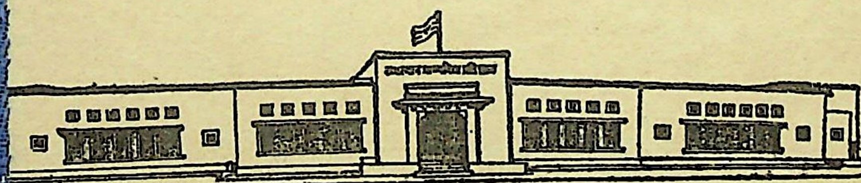
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ३

ठक्कुर-सङ्ग्रामसिंह-विरचित

बालशिक्षा

[शर्ववर्माचार्यप्रणीत कातन्त्रव्याकरणसूत्र एवं परिशिष्टों सहित]



प्रकाशक
राजस्थान-राज्य-संस्थापित
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.
जोधपुर (राज०)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—फतहसिंह, एम०ए०, डी०लिट्०
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ३

ठक्कुर-संग्रामसिंह-विरचित

बालशिक्षा

(शर्ववर्माचार्यप्रणीत कातन्त्रव्याकरणसूत्र एवं परिशिष्टों सहित)

सम्पादक
पुरातत्त्वाचार्य श्री मुनि जिनविजय

प्रकाशक
राजस्थान-राज्य-संस्थापित
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)
RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.
१९६८ ई०
प्रथमावृत्ति : ७५०　　मूल्य : ७.७५

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थानराज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन

संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध

विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम०ए०, डी० लिट्०

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क ३

ठक्कुर-सङ्ग्रामसिंह-विरचित

बालशिक्षा

[शर्ववर्माचार्यप्रणीत कातन्त्रव्याकरणसूत्र एवं परिशिष्टों सहित]

प्रकाशक

राजस्थानराज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

प्रधान-संपादकीय वक्तव्य

प्रस्तुत ग्रन्थ का मुद्रण सन् १९५१ में प्रारंभ हो गया था और १९६२ में इसके प्रकाशन की भी पूरी तैयारी हो चुकी थी, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि किसी शोधपूर्ण भूमिका के अभाव में इसका प्रकाशन नहीं किया गया, यह उचित ही था क्योंकि प्रस्तुत ग्रन्थ कलिकाल-सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य के उस महान् परंपरा की एक कड़ी कहा जा सकता है जिसका प्रारम्भ उन्होंने अपने शब्दानुशासन-नामक महाग्रंथ में प्राकृत-व्याकरण का समावेश करके किया था। फिर भी ग्रंथ के प्रकाशन को और अधिक विलंबित करना एक महान् अपराध होगा। अतः इसे इसी साधारण भूमिका के साथ प्रकाशित किया जा रहा है।

यह ग्रन्थ भाषाविज्ञान की दृष्टि से विशेष महत्त्व का है, क्योंकि इस ग्रन्थ में संस्कृत-व्याकरण-शिक्षा के सन्दर्भ में कई स्थानों पर तत्कालीन भाषा-शब्दों का भी प्रयोग हुआ है उदाहरण के लिये, संस्कारप्रक्रम-नामक सप्तम अध्याय में अनेक अव्यय तथा क्रियापदों को तत्कालीन भाषा से संगृहीत करके उनके संस्कृत–पर्याय दिये गये हैं। सर्वप्रथम पं० लालचंद भगवानदास गाँधी ने इस तथ्य की ओर पुरातत्त्व पुस्तक ३ अंक १ पृष्ठ ४० से ५३ पर निर्देश किया था। यहाँ पर तत्कालीन भाषा के निम्नलिखित क्रियापदों की ओर ध्यान आकृष्ट किया जाता है:—

"राखइ, बोलइ, नासइ, बूझइ, सीखइ, विचारइ, कहइ, सोहइ, ऊगइ, अथमइ, पूजइ, बरसइ, घसइ भेठइ, उलीचइ, लाजइ, फिरइ, सूंघइ, बुहारइ, बांधइ, निंदइ, पूरइ, सरइ, परिणइ, भावइ, भासइ, पोयइ, तूसइ, रूसइ, पूछइ, नाचइ, पीडइ, भीजइ, गांठइ, पढइ, हुयइ, जुडइ, पेलइ, ओढइ, रमइ, रोवइ ढोलइ, धापइ, लाडइ, लुनइ, सोझइ, वरइ, मथइ, ढांकइ, पहिरइ, छेदइ, हकारइ, धूजइ, करइ, मांजइ, धूपइ, मलइ; मरदइ, छूटइ, ऊठइ, नीठइ, वारइ, सकइ, चोरइ वखाणइ, वघारइ, जांमइ, मरइ, कुपइ, देखइ, जोवइ पोसइ, सीवइ पीसइ, मारइ, हिनहिनाइ, गूंथइ, सूजइ, दोहइ, दूसइ, थरकइ, वाजइ, छींकइ, छेकइ हाकइ, फूंकइ, छांटइ, लोपइ, घूमइ, पाचइ, फाटइ, निमटइ, उवटइ, आवइ, गाजइ"

ये सभी क्रियापद वर्तमानकालिक अन्यपुरुष–एकवचन के रूप हैं और इनको अवधी, व्रज, पूर्वी, राजस्थानी, पश्चिमी राजस्थानी तथा गुजराती की संपत्ति समान रूप से माना जा सकता है। इसमें कोई आश्चर्य की बात

नहीं है, क्योंकि अतिप्राचीनकाल में भारतवर्ष की जिस धार्मिक परियात्रा का विधान था वह आधुनिक उत्तरप्रदेश के क्षेत्रों से कुरुक्षेत्र होती हुई सिन्धुनदी के किनारे-किनारे गुजरात से समुद्र–तट का आश्रय लेकर जाती थी। अतः इन प्रदेशों में गमनागमन करने वाले अनेक साधु, सन्त तथा धर्मप्रेमी गृहस्थ भारतवर्ष के कोने-कोने से आकर परस्पर सम्पर्क स्थापित करते होंगे; जिसके फलस्वरूप एक सम्पर्क-भाषा का विकसित होना स्वाभाविक था। जिस समय (सन् १२७६ ई०) में यह पुस्तक लिखी गई उस समय निस्सन्देह संस्कृत केवल विद्वानों की ही सम्पर्क-भाषा रह गई थी और संभवतः जन-साधारण को भाषा संस्कृत से बहुत दूर चली गई थी। संस्कृत से जनभाषा की दूरी दूर करने के लिये ही सम्भवतः इस पुस्तक के लेखक ने "संस्कारप्रक्रम" अध्याय में भाषा-शब्दों का संस्कृत के साथ मेल बिठाने का प्रयत्न किया। प्राकृतशब्दों का इस प्रकार संस्कार करने की प्रवृत्ति बहुत प्राचीन काल से चली आ रही है और इसको हम ऋग्वेद में प्रयुक्त 'संस्कृत' आदि शब्दों की पृष्ठभूमि में भी देख सकते हैं; अतः पाणिनीय-व्याकरण द्वारा हुए महान् प्रयत्न को एकाकी, प्रथम तथा अन्तिम प्रयत्न नहीं कह सकते।

प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखक ठक्कुर संग्रामसिंह श्रीमालवंशीय कूरसिंह के पुत्र थे। उन्होंने स० १३३६ में इस ग्रन्थ की रचना की। ग्रन्थकार ने इसको 'बालशिक्षा' नाम दिया है और अन्त में इसको एक 'लक्षण-द्रव्य-संग्रह' कहा है। ग्रंथ के प्रारंभ में 'ओं नमः श्रीसरस्वत्यै' कह कर प्रथम श्लोक में 'परब्रह्म' की वन्दना करके शार्ववर्मिक कातन्त्र से संक्षेप में बालशिक्षा के प्रणयन की प्रतिज्ञा की गई है। संभवतः इस प्रारंभिक नमस्कार के आधार पर पं० मोहनलाल दलीचद देसाई ने अपने 'जेन साहित्य नो संक्षिप्त इतिहास' में ग्रन्थकार को अजैन होने का संदेह व्यक्त किया है, परन्तु अन्तिम प्रशस्ति के पद्य ५ में 'वर्धमानाधिकश्रीः' के आधार पर सम्भवतः उसके जैन होने का भी संदेह किया जा सकता है। अस्तु, यह तो निश्चित है कि ग्रन्थकार भारतभूमि का एक ऐसा पुत्ररत्न था जो जैनाजैनादि-भेदभाव से ऊपर उठकर राष्ट्रीय दृष्टि से सोच सकता था और वर्तमान भेदबुद्धिविधायिनी प्रवृत्ति के विपरीत एकमात्र राष्ट्रीय दृष्टि से भाषा-प्रश्न पर विचार करके तत्कालीन जनसाधारण की भाषाओं को सुसंस्कृत रूप प्रदान करने के लिये अपने व्याकरण में 'संस्कारप्रकम' को लिख सकता था।

जिस कातन्त्रव्याकरण के आधार पर लेखक ने अपने इस ग्रन्थ का प्रणयन किया है उसको तथा चान्द्रव्याकरण को लेकर कुछ पाश्चात्य विद्वानों* ने उसी आर्यानार्य-भेदभाव को प्रचारित करने का प्रयत्न किया है जिसको कि हम फादर हेरास के नेतृत्व में प्रचारित तथा सिन्धुघाटी की सभ्यता पर आश्रित प्रवृत्ति में सुविकसित रूप में देखते हैं। यह प्रवृत्ति भारतवर्ष को यह सिखाना चाहती है कि भारतीय संस्कृति में जैन, बौद्ध, शैव, शाक्त जैसे आगमों और एकेश्वरवाद तथा योग आदि के सिद्धान्तों के जन्मदाता एक विदेशी अथवा स्वदेशी द्राविड-संस्कृति थी और अपने को हिन्दू कहने वाले लोग आज जिस धर्म और दर्शन पर गर्व करते हैं उसमें उनका अपना कुछ भी नहीं है। हमारे राष्ट्रीय स्वावलम्बन और स्वाभिमान के अपहरण का यह योजनाबद्ध प्रयास बड़ी सावधानी से चलता आ रहा है और दुःख की बात यह है कि हमारे विद्वान् इसको नवीनतम खोज समझकर बेसमझे-बूझे अपनाते चले जा रहे हैं। सच्ची बात यह है कि भारतवर्ष की संस्कृति में भाषा, धर्म, जाति, नस्ल, भेष तथा रूपरंग के भेदभाव को कभी माना ही नहीं गया और इस देश में रहने वाली समस्त जनता को भारतीय-सन्तति अथवा भारतीय-प्रजा कहा गया। जैसा कि इस प्रतिष्ठान से प्रकाशित चान्द्रव्याकरण की भूमिका में कहा गया है। कातन्त्र-शब्द प्राचीन 'काशकृत्स्नतंत्र' का संक्षिप्त रूप है और इसमें भी किसी समय पाणिनीय व्याकरण के समान ही वैदिक-व्याकरण का समावेश था। ऐसा कहने से मेरा अभिप्राय ऐसा कदापि नहीं कि इस व्याकरण का कर्त्ता जैन अथवा अजैन था मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि यह ग्रन्थकार जैनाजैनादि-भेदभाव से परे उसी प्रकार एकमात्र भारतीय थे जिस प्रकार भारतवर्ष के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद, जिसमें जैन, बौद्ध, शाक्त, शैव, वैष्णव, सौर, गाणपत्य आदि सभी आगमों के बीज उपलब्ध होते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम विदेशों द्वारा दिखाई गई भेदबुद्धि को छोड़कर ऐक्यविधायिनी शुद्ध भारतीय बुद्धि को अपनावें। यही राष्ट्र की मांग है, यही भारतीय संस्कृति की पुकार है।

इस ग्रन्थ के सम्पादन में सर्वश्री मुनिजिनविजय, श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी, श्रीठाकुरदत्त जोशी तथा विभाग के अन्य व्यक्तियों ने जो परिश्रम किया है उसके लिये मैं हार्दिक आभार प्रकट करता हुआ, इस ग्रन्थ को सुविज्ञ पाठकों के कर-कमलों में समर्पित करता हूं।

सूर्यसप्तमी, सं० २०२४, जोधपुर. —फतहसिंह

*देखिये, बर्नेल कृत दी ऐन्द्र स्कूल ऑफ संस्कृत ग्रामर.

विषयानुक्रम

———

ठक्कुर संग्रामसिंह विरचिता

बा ल शि क्षा

*

॥ ॐ नमः श्रीसरस्वत्यै ॥

श्रीमन्नत्वा परं ब्रह्म बालशिक्षां यथाक्रमम् ।
संक्षेपाद् रचयिष्यामि 'कातन्त्रात्' शार्ववर्म्मिकात् ॥ १ ॥
आदौ सञ्ज्ञां[1] ततः सन्धिः[2] स्यादयः[3] कारकाणि[4] च ।
समासा[5]श्चोक्तिविज्ञानं[6] संस्कार[7]स्त्यादयस्तथा ॥ २ ॥
इत्यष्टप्रक्रमोपेतामेतां कुर्वन्तु हृद्गृहे ।
कातन्त्रभास्कराभावे यथा दीपश्रियं जनाः ॥ ३ ॥

*

[प्रथमः सञ्ज्ञाप्रक्रमः ।]

'सिद्धो वर्णसमाम्नायः ।' वर्णसञ्ज्ञा* ।

सञ्ज्ञासूत्राणि यथा – 'तत्र चतुर्दशादौ स्वराः ।'

स्वर केता १४ । 'तत्र चतुर्दशादौ स्वराः ।' स्वरसञ्ज्ञा ।

समान १० । 'दश समानाः ।' समानसञ्ज्ञा ।

सवर्ण १० । 'तेषां द्वौ द्वावन्योऽन्यस्य सवर्णौ ।' सवर्णसञ्ज्ञा ।

ह्रस्व ५ । 'पूर्वो ह्रस्वः ।' ह्रस्वसञ्ज्ञा ।

दीर्घ ५ । 'परो दीर्घः ।' दीर्घसञ्ज्ञा ।

नामीआ १२ । 'स्वरोऽवर्णवर्जो नामी ।' नामिसञ्ज्ञा ।

संध्यक्षर ४ । 'एकारादीनि सन्ध्यक्षराणि ।' सन्ध्यक्षरसञ्ज्ञा ।

व्यञ्जन ३३ । 'कादीनि व्यञ्जनानि ।' व्यञ्जनसञ्ज्ञा ।

वर्ग ५ क च ट त प । 'ते वर्गाः पञ्च पञ्च पञ्च ।' वर्गसञ्ज्ञा ।

अघोष १३ । 'वर्गाणां प्रथमद्वितीयाः शषसाश्चाघोषाः ।' अघोषसञ्ज्ञा ।

घोषवंत २० । 'घोषवन्तोऽन्ये ।' घोषवन्तसञ्ज्ञा ।

'अनुनासिका ङ ञ ण न माः ।' अनुनासिकसञ्ज्ञा ।

---

* वर्णाः ५२ तथा चोक्तम्–

व्यञ्जनानि त्रयस्त्रिंशत् स्वराश्चैव चतुर्दश । अनुस्वारविसर्गौ च जिह्वामूलीय एव च ॥ १ ॥
गजकुम्भाकृतेर्वर्णः प्लुतश्च परिकीर्तितः । एवं वर्णा द्विपञ्चाशन् मातृकायामुदाहृताः ॥ २ ॥

'अन्तस्थाः य र ल वाः ।' अन्तस्थासञ्ज्ञा ।
'ऊष्माणः श ष स हाः ।' ऊष्मसञ्ज्ञा ।
'अः इति विसर्जनीयः ।' विसर्जनीयसञ्ज्ञा ।
'ᳵकः इति जिह्वामूलीयः ।' जिह्वामूलीयसञ्ज्ञा ।
'ᳶपः इत्युपध्मानीयः ।' उपध्मानीयसञ्ज्ञा ।
'अं इत्यनुस्वारः ।' अनुस्वारसञ्ज्ञा ।
'विभक्त्यन्तं पदम् ।' 'पूर्वपरयोरर्थोपलब्धौ पदम् ।' पदसञ्ज्ञा ।
लिंगु ३ स्त्रीलिंगु । पुंलिंगु । नपुंसकलिंगु । भलु पुलिंगु । भली स्त्रीलिंगु । भलुं नपुंसकलिंगु ।

प्रायसो(शो) लिङ्गाभिज्ञानमिदम् ।
'धातुविभक्तिवर्जमर्थवल्लिङ्गम् ।' लिङ्गसञ्ज्ञा ।
स्यादौ वचन २१ । 'पञ्चादौ घुट् ।' 'जस्शसौ नपुंसके ।' घुट्सञ्ज्ञा ।
'आमन्त्रिते सिः सम्बुद्धिः ।' सम्बुद्धिसञ्ज्ञा ।
'इदुदग्निः ।' अग्निसञ्ज्ञा ।
'ईदूत् स्त्र्याख्यौ नदी ।' नदीसञ्ज्ञा ।
'आ श्रद्धा ।' स्त्रीलिंगतणा आकार श्रद्धासञ्ज्ञा ।
'अन्त्यात् पूर्व उपधा ।' उपधासञ्ज्ञा ।
'व्यञ्जनान्नोऽनुषङ्गः ।' अनुषङ्गसञ्ज्ञा ।
धुट् २४ । 'धुड्व्यञ्जनमनन्तःस्थानुनासिकम् ।' धुट्सञ्ज्ञा ।

*

'यः करोति स कर्त्ता ।' स्वतन्त्रकर्तृसञ्ज्ञा ।
'कारयति यः स हेतुश्च ।' हेतुकर्तृसञ्ज्ञा ।
'यत् क्रियते तत् कर्म्म ।' कर्म्मसञ्ज्ञा ।
'येन क्रियते तत् करणम् ।' करणसञ्ज्ञा ।
'यस्मै दित्सा रोचते धारयते वा तत् संप्रदानम् ।' संप्रदानसञ्ज्ञा ।
'यतोऽपैति भयमादत्ते वा तदपादानम् ।' 'ईप्सितं च रक्षार्थानाम् ।' अपादानसञ्ज्ञा ।
'य आधारस्तदधिकरणम् ।' अधिकरणसञ्ज्ञा ।
एवं षट्कारकाणां सञ्ज्ञा ।

---

*

'पदे तुल्याधिकरणे, विज्ञेयः कर्मधारयः ।' कर्मधारयसमाससञ्ज्ञा ।
'संख्यापूर्वो द्विगुरिति ।'† द्विगुसञ्ज्ञा ।
'विभक्तयो द्वितीयाद्या नाम्ना परपदेन तु ।
समस्यन्ते समासे हि ज्ञेयस्तत्पुरुषः स च' ॥ तत्पुरुषसञ्ज्ञा ।
'स्यातां यदि पदे द्वे तु यदि वा [स्यु]र्बहून्यपि ।
तान्यन्यस्य पदस्यार्थे बहुव्रीहिः; विदिक् तथा ॥' बहुव्रीहिसञ्ज्ञा ।
'द्वन्द्वः समुच्चयो नाम्नोर्बहूनां वापि यो भवेत् ।' द्वन्द्वसञ्ज्ञा ।
'पूर्वं वाच्यं भवेद् यस्य सोऽव्ययीभाव इष्यते ।' अव्ययीभावसञ्ज्ञा ।

एवं षट् समासानां सञ्ज्ञा ॥ ७ ॥ एवं चतुष्कसञ्ज्ञा ॥

*

'अथ परस्मैपदानि ।' परस्मैपदसञ्ज्ञा ।

'नव पराण्यात्मने ।' आत्मनेपदसञ्ज्ञा ।

पुरुष ३ । 'त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमो[त्तमाः।] पुरुषसञ्ज्ञा ।

'अदाब् दाधौ दा ।' दाण् । देङ् । डुदाञ् । दो । धेट् । डुधाञ् । एषां दासञ्ज्ञा ।

'क्रियाभावो धातुः ।' धातुसञ्ज्ञा ।

दश त्यादिविभक्तीनां वर्त्तमानादिसञ्ज्ञा ।

'षडाद्याः सार्वधा[तुकम् ।' वर्तमाना] । सप्तमी । पञ्चमी । ह्यस्तनी । आसां सार्वधातुकसञ्ज्ञा ।

सन् । यिन् । काम्य । आयि । इन् । चेक्रीयितसञ्ज्ञा य । आय । पक्षे णीयङ् । इनङ् । एवं नवानां 'ते धातवः ।' इति धातुसञ्ज्ञा ।

'इन् कारितं धात्वर्थे ।' कारितसञ्ज्ञा ।

'धातोर्यशब्दश्चेक्रीयितं क्रियासमभिहारे ।' चेक्रीयितसञ्ज्ञा ।

'अन् विकरणः कर्तरि ।' 'दिवादेर्यन् ।' 'नुः स्वादेः ।' 'स्वराद् रुधादेः परो नु(न)शब्दः ।' 'तनादेरुः ।' 'ना क्र्यादेः ।' 'आन व्यञ्जनान्ताद्धौ ।' एवं विकरणसञ्ज्ञा ।

'पूर्वोऽभ्यासः ।' अभ्याससञ्ज्ञा ।

'द्वयमभ्यस्तम् ।' 'जक्षादिश्च ।' अभ्यस्तसञ्ज्ञा ।

सि(शि)ट् ४ । 'शिडिति शादयः ।' सि(शि)ट्सञ्ज्ञा ।

संप्रसारण ३ । यवराणां इ उ ऋ । 'संप्रसारणं य्वृतोऽन्तः स्था निमित्ताः ।' संप्रसारणसञ्ज्ञा ।

गुण ३ । अर् । ए । ओ । 'अर् पूर्वे द्वे च सन्ध्यक्षरे गुणः ।' गुणसञ्ज्ञा ।

---

†'संख्यापूर्वो द्विगुरिति ज्ञेयः, तत्पुरुषावुभौ ।' इत्येतादृशः श्लोकार्द्धः कातन्त्रव्याकरणपुस्तके समुपलभ्यते ।

वृद्धि ३ । आर् । ऐ । औ । 'आरुत्तरे च वृद्धिः ।' [वृद्धिसञ्ज्ञा ।]
एवं आख्याते सञ्ज्ञा १७ ।

*

'क्तं-क्तवन्तू निष्ठा ।' निष्ठासञ्ज्ञा ।
'क्त्वा मकारान्तोऽव्ययम् ।' अव्ययसञ्ज्ञा ।
'सप्तम्युक्तमुपपदम् ।' उपपदसञ्ज्ञा ।
'कृत् ।' कृत्प्रत्ययसञ्ज्ञा ।
तेषां मध्ये तव्य । अनीय । य । क्यप् । घ्यण् । एवं कृत्य ५ । 'ते कृत्याः ।' कृत्यसञ्ज्ञा ।
'आनोऽत्रात्मने ।' आत्मनेपदसञ्ज्ञा ।
एवं कृति सञ्ज्ञा ६ । एवं वृत्तिसञ्ज्ञा ६४ ॥ छ ॥ ग्रन्थाग्रं श्लोक ४१ अक्षर २४ ॥

॥ इति ठ०सङ्ग्रामसिंहविरचितायां बालशिक्षायां सञ्ज्ञाप्रक्रमः प्रथमः ।

*

[द्वितीयः सन्धिप्रक्रमः ।]

अ आ अवर्णः । अवर्णे परे 'समानः सवर्णे दीर्घीभवति परश्च लोपम् ।' 'अवर्ण इवर्णे ए ।' 'उवर्णे ओ ।' 'ऋवर्णे अर् ।' 'लृवर्णे अल् ।' 'एकारे ऐ ऐकारे च ।' 'ओकारे औ औकारे च ।' एवं अवर्णान्तस्य सूत्र ६ ।

इ ई इवर्णः । इवर्णे परे 'समान' इत्यादिना दीर्घः । अन्यस्वरे 'इवर्णो यमसवर्णे न च परो लोप्यः ।'

उ ऊ उवर्णः । उवर्णे परे 'समान' इत्यादिना दीर्घः । अन्यस्वरे 'वमुवर्णः ।' असवर्णे न च परो लोप्यः ।

ऋ ॠ ऋवर्णः । ऋवर्णे परे 'समान' इत्यादिना दीर्घः । अन्यस्वरे 'रमृवर्णः ।'

लृ ॡ लृवर्णः । लृवर्णे परे 'समान' इत्यादिना दीर्घः । अन्यस्वरे 'लम्लृवर्णः ।' 'समानादन्योऽसवर्णः ।' अतः सन्ध्यक्षराणां समानवर्णत्वाभावात् स्वरे परे 'ए अय् ।' 'ऐ आय् ।' 'ओ अव् ।' 'औ आव् ।' एवं स्वरसन्धिसूत्र १५ ।

'अयादीनां यवलोपः । पदान्तेन वा लोपे तु प्रकृतिः ।' इति विधिनिषेधयोः सूत्रम् ।

'एदोत्परः पदान्ते लोपमकारः ।' इति विशेषसन्धिसूत्रम् ।

'न व्यञ्जने स्वराः सन्धेयाः ।' तथा 'ओदन्ताः ।' इत्यादि सूत्र ४। इति निषेधसूत्राणि ।

॥ इति सन्धिप्रक्रमे प्रथमः स्वराधिकारः ॥

*

'वर्गप्रथमाः पदान्ताः स्वरघोषवत्सु तृतीयान् ।' 'पञ्चमे पञ्चमांस्तृतीयान्न वा ।' 'वर्गप्रथमेभ्यः शकारः स्वरयवरपरश्छकारं च न वा ।' 'तेभ्य एव हकारः । पूर्वचतुर्थं न वा ।' एवं वर्गप्रथमानां सूत्र ४ ।

पररूपं 'तकारो लचटवर्गेषु ।' 'चं शे ।' इति तकारान्तसूत्र २ । प्राक् चतुष्टयसमं षट् ।

'ङणना ह्रस्वोपधाः स्वरे द्विः ।' ङणनान्तसूत्रम् ।

'नोऽन्तश्चछयोः शकारमनुस्वारपूर्वम् ।' 'टठयोः षकारम् ।' 'तथयोः सकारम् ।' 'ले लम् ।' 'जझञशकारेषु ञकारम् ।' 'शि न्चौ वा ।' 'डढणपरस्तु णकारम् ।' एवं नकारान्तस्य सूत्र ८ ।

'मोऽनुस्वारं व्यञ्जने ।' 'वर्गे तद्वर्गपञ्चमं वा ।' इति मकारानुस्वारान्तयोः सूत्र २ । एवं व्यञ्जनसन्धिसूत्र १६ ।

पदचतुष्टयवर्गान्तं तकारान्तं पदद्वयम् ।
अष्टसंख्यं नकारान्तं मकारान्तं पदद्वयम् ॥

॥ इति सन्धिप्रक्रमे द्वितीयो व्यञ्जनाधिकारः ॥

*

'विसर्जनीयश्चे छे वा शम् ।' 'टे ठे वा षम् ।' 'ते थे वा सम् ।' 'कखयोर्जिह्वामूलीयं न वा ।' 'पफयोरुपध्मानीयं न वा ।' 'शे षे से वा वा पररूपम् ।' एवं अघोषे परे विसर्गसूत्र ६ ।

'उमकारयोर्मध्ये ।' 'अघोषवतोश्च ।' 'अपरो लोप्योऽन्यस्वरे यं वा ।' एवं अकारात्परविसर्गसूत्र ३ ।

'आभोभ्यामेवमेव स्वरे ।' 'घोषवति लोपम् ।' इत्याकार-भोशब्दपरविसर्गसूत्र २ ।

'नामिपरो रम् ।' 'घोषवत्स्वरपरः ।' इति नाम्यन्तपरविसर्गसूत्र २।

'रप्रकृतिरनामिपरोऽपि ।' इति रेफविसर्गस्य अनघोषे रेफः ।

'एषसपरो व्यञ्जने लोप्यः ।' इति विशेषसन्धिसूत्र २ । एवं विसर्गसन्धिसूत्र १५ ।

'न विसर्जनीयलोपे पुनः सन्धिः ।' इति सन्धिनिषेधसूत्रम् ।

'रो रे लोपं स्वरश्च पूर्वो दीर्घः ।' 'द्विर्भावं स्वरपरश्छकारः ।' इति विशेषसन्धिसूत्र २ ।

॥ इति सन्धिप्रक्रमे तृतीयो विसर्गाधिकारः ॥ ग्रंथ २६ ॥

॥ इति ठ० संग्रामसिंहविरचितायां बालशिक्षायां
सन्धिप्रक्रमो द्वितीयः ॥ ७ ॥

*

[तृतीयः स्यादिप्रक्रमः ।]

पुं-स्त्री-क्लीवाख्यलिङ्गानि तत्पराः स्युर्विभक्तयः ।
स्यादयः सप्त तद्योगे शब्दनिष्पत्तिरुच्यते ॥

विभक्तयो यथा–

प्रथमा सि औ जस् ।
द्वितीया अम् औ शस् ।
तृतीया टा भ्यां भिस् ।
चतुर्थी ङे भ्याम् भ्यस् ।
पञ्चमी ङसि भ्याम् भ्यस् ।
षष्ठी ङस् ओस् आम् ।
सप्तमी ङि ओस् सुप् ।

एवं वचन २१ । सि एकवचनु । औ द्विवचनु । जस् बहुवचन । इत्थं सर्वत्र ।

अत्र अदन्ताः पुंलिङ्गाः–

वृक्षः वृक्षौ वृक्षाः ।
वृक्षं वृक्षौ वृक्षान् ।
वृक्षेण वृक्षाभ्याम् वृक्षैः ।
वृक्षाय वृक्षाभ्यां वृक्षेभ्यः ।
वृक्षात् वृक्षाभ्यां वृक्षेभ्यः ।
वृक्षस्य वृक्षयोः वृक्षाणाम् ।
वृक्षे वृक्षयोः वृक्षेषु ।

आमन्त्रणे हे वृक्ष हे वृक्षौ हे वृक्षाः ।

'रषृवर्णे ।' इत्यादिना नस्य णत्वं यथाप्राप्तं कार्यम् । एवं घट-पटादयः । यथा–घटेन । घटानाम् । इत्यादि ।

अथ विशेषाः - पाद - मास - निशा - हृदय - यूष - दोषाणां पद् - मास् - निश् - [हृत्] - यूष् - दोषन् । 'शसादावचि वा ।' इति । पादान्, पदः । पादेन, पदा । पादाभ्याम्, पादैः । इत्यादि ।

एवं मासान्, मासः । मासेन, मासा । इत्यादि ।

दार - प्राण - लाजाः बहुवचनान्ताः ।

क्लीबाः - कुण्डम्, कुण्डे, कुण्डानि २ । शेषं पुंलिङ्गवत् ।

एवं चित्त-वित्तादयः ।

वि० हृदय 'शसादावचि वा ।' हृद् । हृदयानि, हृन्दि । हृदयेन, हृदा । इत्यादि ।

रक्त - कृष्णादयस्त्रिलिङ्गाः । पुंसि वृक्षवत् । स्त्रियां 'स्त्रियामादा ।' इति आप्रत्यये आदन्तेषु वक्ष्यमाणः श्रद्धावत् । क्लीबे कुण्डवत् ।

विशेषः अल्पादिगणः - अल्प प्रथम चरम तय अय कतिपय नेम अर्द्ध पूर्वादयश्च । जसि, पुंसि अल्पे, अल्पाः । एवमल्पादयः ।

किन्तु तय - अयौ प्रत्ययौ तदन्ताः शब्दाः ग्राह्याः ।

संख्याया अवयवे तयट् - एकतय द्वितय त्रितय चतुष्टय पञ्चतय इत्यादि । द्वि - त्रिभ्यामयट् - द्वयत्रयौ । तथा द्वयशब्दस्य व्याकरणाद् द्वयानामिति निष्पत्तिः । परं द्वयेषामित्यपि दृश्यते । तथा च माघे -

'वृष्ट्या द्वयेषामपि मेदिनीभृताम् ।'

नदाद्यर्थष्टानुबन्धः स्त्रियां द्वयी, द्वितयी । ईप्रत्यये सर्वे वक्ष्यमाणनदीवत् ज्ञेयाः ।

अर्द्धशब्दोऽसमभागे वर्त्तमानः पुंलिङ्गः । समभागे तु क्लीबः ।

नेम - पूर्वादयः सर्वनामगणे द्रष्टव्याः ॥ ७ ॥

सर्व विश्व उभ उभय अन्य अन्यतर इतर डतर डतम त्वत् त्व नेम सम सिम पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि । व्यवस्थायामसञ्ज्ञायाम् । स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् । अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः । त्वत् । त्यद् तद् यद् अदस् इदम् एतद् एक किम् द्वि युष्मद् अस्मद् भवन्तः ।

एषां वि० जसि सर्वे । ङयि सर्वस्मै । ङसौ सर्वस्मात् । आमि सर्वेषाम् । ङौ सर्वस्मिन् । 'अव्ययसर्वनाम्नः स्वरादन्त्यात् पूर्वोऽक् कः ।' इत्यकि सर्वकः, सर्वकौ, सर्वके । इत्यादौ सर्ववत् । स्त्रियामादन्तेषु द्रष्टव्यः । क्लीबे कुण्डवत् । अकि सर्वकमित्यादि ।

अस्मिन् गणे एवमदन्ताः । तत्रापि सर्वो नाम कश्चित् । सर्वमतिक्रान्ताय सर्वाय । अतिसर्वाय । इत्थमेतेषां सञ्ज्ञारूपाणां गौणानां सर्वनामत्वं नहि ।

उभयशब्दः संख्याधिकारे द्रष्टव्यः । उभये इति नित्यं भाषायाम् । नाल्पादिविकल्पः । स्त्रियामुभयी ।

क्लीबे अन्यस्य स्यमोः अन्यत् । २ । हे अन्यत् । एवमन्यादयः पञ्च । तेषु डतर - डतमौ प्रत्ययौ । तदन्ताः शब्दा ग्राह्याः । यत् - तद् - एकेभ्यो द्वयोरेकस्य निर्धारणे डतरः । जातौ वा बहूनां डतमः । तौ च । किमः । यतरः । यतमः । ततरः । ततमः । एकतरः । एकतमः । कतरः । कतमः । इत्यादयो मन्तव्याः । गणकृत्यस्यानित्यत्वात् एकतरस्य नुरागमो न स्यात् । एकतरं कुलमस्ति । वृत् करणं गणसमाप्त्यर्थम् । त्वशब्दोऽन्यार्थः । नेमशब्दोऽर्द्धवाची । अल्पादित्वात् । नेमे नेमाः । समः सर्वसमानयोः । सिमः सर्वार्थोऽश्वार्थश्च । सर्वार्थादन्यत्र सिमे देशे यजति । सिमाय अश्वाय । अल्पादित्वात् । पूर्वे, पूर्वाः । 'विभाष्येते पूर्वादेः ।' इति पूर्वस्मात्, पूर्वात् । पूर्वस्मिन् पूर्वे । इत्थं नव पूर्वादयः । एषु सप्तानां व्यवस्थायामसञ्ज्ञायां सर्वनामत्वम् । पूर्वादयः शब्दा व्यवस्थायां गम्यमानायां असञ्ज्ञारूपाः सर्वनामसञ्ज्ञारूपा भवन्ति । इति । स्वाभिधेयापेक्षो विधिनियमो व्यवस्था । अन्यत्र दक्षिणाय गाथकाय देहि, प्रवीणायेत्यर्थः । दक्षिणायै द्विजाः स्पृहयन्ति । अनभिधानसञ्ज्ञा । सञ्ज्ञायां उत्तरा एव कुरवः । उत्तराय कुरुदेशाय । स्वशब्द आत्मन्यात्मीये धने ज्ञातौ च । अज्ञातिधनाख्यायामिति वचनात् । स्वाय ज्ञातये । स्वाय धनाय । अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः । अन्तरस्मै गृहाय । नगरबाह्याय चाण्डालादिगृहायेत्यर्थः । अन्तरस्मै साटकाय । अन्यत्र ग्रामयोरन्तरात्तापस आयातः, मध्यादित्यर्थः । द्विशब्दः संख्याधिकारे त्यदादयश्च व्यञ्जनाधिकारे द्रष्टव्याः । 'तीयाद्वा वक्तव्यम् ।' इति । द्वितीयस्मै, द्वितीयाय । द्वितीयस्मात्, द्वितीयात् । द्वितीयस्मिन्, द्वितीये । स्त्रियामादन्तेषु ज्ञेयः । एवं तृतीयोऽपि ।

पञ्चालस्यापत्यं पाञ्चालः, पाञ्चालौ । 'रूढानां बहुत्वे स्त्रियामपत्यप्रत्ययस्य ।' इति लुकि वृद्ध्यभावे बहुत्वे पञ्चालाः । पञ्चालान् । इत्यादि । स्त्रियां पञ्चाल्यः । क्लीबे पञ्चालानि कुलानि । अनपत्येऽणि पञ्चालानामिमे भृत्याः पाञ्चालाः । पाञ्चालान् । इत्यादि ॥ ७ ॥

एवं वैदेहः, वैदेहौ, विदेहाः । एवं आङ्ग - वाङ्ग - मागध - कालिङ्ग - सौरमसादयः ।

'गर्ग - यस्क - विदादीनां च ।' गार्ग्य वात्स्य । ण्यस्य लुक् । यास्क लाह्य वैद और्व । अणो लुक् । गार्ग्यः गार्ग्यौ, गर्गाः । एवं वत्साः । यस्काः । लह्याः । विदाः । उर्वाः ।

'भृग्वत्र्यङ्गिरस् - कुत्स - वसिष्ठ - गोतमेभ्यश्च ।' अत्रेरेयण् । इतरेभ्योऽण् । भार्गवः भार्गवौ भृगवः । आत्रेयः आत्रेयौ अत्रयः ।

एवं आङ्गिरस - कौत्स - वासिष्ठ - गौतमाः ।

'श्येतैतहरितलोहितेभ्यस्तो नः ।' ई ४ ।

श्येनी कुमुदपत्राभा शुकाभा हरिणी मता ।
लोहिनी जपापुष्पाभा एनी कर्बुरिता भवेत् ॥ ७ ॥

*

अथ आदन्ताः पुंलिङ्गाः -

'हाहा हूहूश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम् ।' अमरकोशे ।

हाहाः हाहौ हाहाः । हाहां हाहौ । अस्य अधात्वाकारेऽपि 'आ धातोरघुट्स्वरे ।' इत्यन्तलोपः । यदुक्तम् -

प्रायोवृत्तिं समाश्रित्य धातोरिति खलुच्यते ।
स्त्र्याकारमेकं सन्त्यज्य सर्वस्यान्यस्य संग्रहः ॥

हाहः । हाहा हाहाभ्याम् । इत्यादि । हे हाहाः । अन्योऽप्येवम् ॥ ७ ॥

स्त्रीलिङ्गाः - श्रद्धा श्रद्धे श्रद्धाः । श्रद्धां श्रद्धे श्रद्धाः । श्रद्धया । श्रद्धायै । श्रद्धायाः । श्रद्धानाम् । श्रद्धायाम् । श्रद्धासु । हे श्रद्धे ।

एवं शाला - मालादयः ।

वि० 'ह्रस्वोऽम्बार्थानाम् ।' हे अम्ब, हे अक्क, हे अत्त, हे अल्ल । बहुस्वरत्वात् डलकवतां न स्यात् । हे अम्बाडे, हे अम्बाले, हे अम्बिके ।

सर्वा । ङयि सर्वस्यै । ङसि - ङसोः सर्वस्याः । २ । आमि सर्वासाम् । ङौ सर्वस्याम् । अकि सर्विका इत्यादि । एवमाप्रत्यये सर्वादिगणः ।

'तीयाद्वा ।' इति ङवधु । द्वितीयस्यै, द्वितीयायै । द्वितीयस्याः, द्वितीयायाः । २ । द्वितीयस्याम्, द्वितीयायाम् । एवं तृतीयाशब्दः ।

निशा 'शसादौ स्वरे वा निश् ।' निशाः, निशः । निशया, निशा । इत्यादि ।

'जरा जरस् स्वरे वा ।' जरा । जरसौ जरे । जरसः जराः । इत्यादि । जरामतिक्रान्त इत्यन्यपदार्थे 'गोरप्रधानस्यान्तस्य स्त्रियामादादीनां च ।' इति ह्रस्वः । पुंसि अतिजरः । ह्रस्वत्वे कृतेऽप्येकदेशविकृतमन्यवद्भावात् स्वरे वा जरस् । अतिजरसौ, अतिजरौ । अतिजरसः, अतिजराः ।

अतिजरसं अतिजरम्। अतिजरसः, अतिजरान्। अतिजरसा, अतिजरेण। 'टेने'ति सिद्धे इनोच्चारणमग्रत एव इन यथा स्यात्। तेन अतिजरसिन इत्यपि। अतिजराभ्याम्। अतिजरसैः, अतिजरैः। अतिजरसे, अतिजराय। अतिजरसः, अतिजरात्। 'ङसिरात्।' इति दीर्घोच्चारणात्। अतिजरसात्, अतिजरसः। अतिजरस्य। इत्यादि।

स्त्रियां सुख्य-जरावत्।

क्लीबे अतिजरं अतिजरसी अतिजरे। अतिजरांसि, अतिजराणि। २। शेषं पुंवत्।

वासाः दशाः मघाः कृत्तिकाः समाः वर्षाः वरणाः बह्वर्थाः।

सोमं पिबति इति सोमपाः। पुंस्त्रियोर्हाहावत्। 'स्वरो ह्रस्वो नपुंसके।' सोमपं सोमपे सोमपानि। सोमपेन। इत्यादि।

एवं कीलालपा-शङ्खध्मा-धूमपादयः।

उदधिका विष्णुः। विषखा शम्भुः। गोषा रविः। अब्जजा ब्रह्मा। अग्रेगा इन्द्रः। इति विडन्ताः सञ्ज्ञाशब्दाः पुंलिङ्गाः हाहावत्।

इदन्ता पुंलिङ्गाः - अग्निः अग्नी अग्नयः। अग्निम्। अग्नीन्। अग्निना। अग्नये। अग्नेः। २। अग्न्योः। अग्नीनाम्। अग्नौ। अग्निषु। हे अग्ने।

एवं सन्धि-निध्यादयः।

वि० सखि। सखा सखायौ सखायः। सखायम्। सखीन्। सख्या। सख्ये। सख्युः। २। सख्यौ। हे सखे। स्त्रियां सखी।

'पतिरसमासे।' टादौ सखिवत्। पत्या। पत्ये। इत्यादि। समासे त्वग्निवत्। यथा - नरपतिना। नरपतये।

पन्थि। पन्थाः पन्थानौ पन्थानः। पन्थानम्। पथः। पथा पथिभ्यां पथिभिः। पथे। पथः। २। पथोः। पथाम्। पथि। पथिषु। हे पन्थाः।

एवं मन्थि-ऋभुक्षि ॥ ७ ॥

स्त्रीलिङ्गाः - बुद्धिरग्निवत्। शसादौ तु बुद्धीः। बुद्ध्या। बुद्ध्यै, बुद्धये। बुद्ध्याः, बुद्धेः। २। बुद्ध्याम्, बुद्धौ।

एवं मति-सिद्धि-धूलि-भूमि-मुख्याः। धूल्यादीनां 'इतश्च क्तिवर्जिताद्वा।' इति धूली इत्याद्यपि स्यात् ॥ ७ ॥

क्लीबाः - वारि वारिणी वारीणि। वारिणा। वारिणे। वारिणः। २। वारिणोः। वारीणाम्। वारिणि। वारिषु। संबोधने 'नपुंसकात् स्यमोर्लोपो न च तदुक्तम्।' इति प्रतिषेधेऽपि 'नाम्यन्तत्रिचतुरां वा।' इति पक्षे एत्वमपि। तेन हे वारे, हे वारि।

एवं स्वर्णार्थ भूरि-मुख्याः।

वि०–'अस्थि-दधि-सक्थ्यक्ष्णामनन्तष्टादौ।' इति स्वरे अस्थ्ना। अस्थ्ने। अस्थ्नः। २। अस्थ्नोः। अस्थ्नाम्। 'ईङ्योर्वा।' अस्थ्नि, अस्थनि।

एवं दधि-सक्थि-अक्षि। सक्थि ऊरुपर्यायः।

त्रिलिङ्गाः–शोभना बुद्धिर्यस्येति सुबुद्धिः। पुंस्यग्निवत्। स्त्रियामप्येवम्। 'स्त्र्याख्याविय्युवौ वामि।' इति आख्याग्रहणस्य नित्यं स्त्रीलिङ्गविषयत्वात्। 'ह्रस्वश्च ङवति।' इति वा नदीवद्भावो नास्ति परं शसि सस्य नत्वम्। सुबुद्धीः। 'टा ना' इत्यपि न। सुबुद्ध्या।

क्लीबे वारिवत्। 'भाषितपुंस्कं पुंवद् वा।' इति टादौ स्वरे पुंवद्वा। न्वागमे 'टा ना' पक्षे च। सुबुद्धिना। सुबुद्धिने, सुबुद्धये। इत्यादि।

सं० त्रिलिङ्गिनामन्यपदार्थत्वेन गौणत्वात्। 'नाम्यन्तत्रिचतुरां वा।' इति न पाक्षिकमेत्वम्। तेन हे सुबुद्धि।

एवं सुसिद्धि-दीर्घाङ्गुलि-अतिनदि-मुख्याः।

वि० शुचि-शब्दः स्वत एव त्रिलिङ्गोऽस्ति। तदस्य स्त्रियां स्वत एव स्त्रीत्वप्रवृत्तत्वात्। 'ह्रस्वश्च ङवति।' इति वा नदीवद्भावोऽस्त्येव। तेन बुद्धिवत्। शुच्यै, शुचये। इत्यादि। क्लीबे सं० हे शुचि, हे शुचे।

एवं सुरभि-भूरि-मुख्याः।

सखिरन्यपदार्थे यथा–शोभनः सखा यस्येति सुसखि। पुंसि मुख्य-सखिवत्। स्त्रियां सुसखी। क्लीबे टादौ स्वरे पुंवद्वा। सुसखिना, सुसख्या। इत्यादि॥ ७॥

पन्थ्यादयोऽन्यपदार्थे यथा–सुपन्थि। पुंस्त्रियोर्मुख्य-पन्थिवत्। क्लीबे सुपथि सुपथिनी सुपथीनि। २। टादौ स्वरे पुंवद्वा। सुपथिना, सुपथा। इत्यादि।

अस्थ्यादीनामन्यपदार्थे पुंस्त्रियोरप्यन्तोऽन्। प्रियास्था पुंसा। प्रियास्थ्नी स्त्री। क्लीबे मुख्य-अस्थिवत्॥ ७॥

ईदन्ताः पुंलिङ्गाः–वाताभिमुखगामी मृगो वातप्रमी। वातप्रमीः वातप्रम्यौ वातप्रम्यः। सारस्वतव्याकरणे–समानादम्शसोरल्लोपः। सो नः पुंसः। वातप्रमीम्। वातप्रमीन्। वातप्रम्या। इत्यादि। आमि वातप्रम्याम्। ङौ समानलक्षणो दीर्घः। वातप्रमी। वातप्रमीषु। हे वातप्रमीः।

एवं देवयजी-मुख्याः।

स्त्रीलिङ्गाः–नदी नद्यौ नद्यः। नदीम्। नदीः। नद्या। नद्यै। नद्याः। २। नद्योः। नदीनाम्। नद्याम्। नदीषु। हे नदि।

एवं मही-नारी-मुख्याः।

वि० ईकारोऽन्तो यस्माल्लिङ्गादिति लक्ष्मी - शब्दस्यासम्बुद्धौ सेर्लोपो नास्ति। 'लक्षेरीस्मोऽन्तश्च।' इति ईप्रत्ययः। लक्ष्मीः।

एवं अवी - तरी - शची - तन्त्री - मुख्याः।

धात्वीदन्ताः - 'ईदूतोरियुवौ स्वरे।' श्रीः श्रियौ श्रियः। श्रियम्। श्रियः। श्रिया। श्रियै, श्रिये। श्रियाः, श्रियः। २। श्रियोः। श्रीणाम्, श्रियाम्। श्रियि, श्रियाम्। श्रीषु। हे श्री।

एवं धी - ह्री - भी - मुख्याः

वि० सिलोपे। स्त्री स्त्रियौ स्त्रियः। स्त्रियम्, स्त्रीम्। स्त्रियः, स्त्रीः। स्त्रिया। 'स्त्री नदीवत्।' इति निर्देशात् विकल्पमपि बाधते। स्त्रियै। स्त्रियाः। २। स्त्रियोः। स्त्रीणाम्। स्त्रियाम्। स्त्रीषु। केचित् विकल्पमपि मन्यन्ते। स्त्रियैं, स्त्रिये। इत्यादि। हे स्त्रि।

त्रिलिङ्गाः - यवक्रीः यवक्रियौ यवक्रियः। यवक्रियम्। इत्यादि। स्त्रियामप्येवम्। नित्यस्त्रीत्वाभावाद्वा नदीवद्भावो नास्ति। क्लीबे ह्रस्वत्वे यवक्रि वारिवत्। टादौ स्वरे पुंवद्वा। यवक्रिणा, यवक्रिया। इत्यादि।

एवं पृथुश्री - देवप्री - त्यक्तह्री - भी - ली - पी - नी - परमनी - ग्रामवी - गतभी - सुधी - मुख्याः।

'नियो ङिराम्।' इति नियाम्, परमनियाम्। परमनी मुख्यानां 'अनेकाक्षरयोस्त्वसंयोगाद्यवौ।' इति यत्वे प्राप्ते, 'अव्ययकारकाभ्यामेवायं विधिः।' इति भणनात् यत्वं न।

सुष्ठु ध्यायतीति, अथ शोभना धीरस्य वेति विग्रहे वा सुधीः। अत्र 'सुधीः।' इतीय्। प्रधी - मुख्या अव्ययात्, सेनानी - मुख्याः कारकात्, इत्यादीनां स्वरे 'अनेकाक्षरयोस्त्वसंयोगाद्यवौ।' पुंस्त्रियोः प्रधीः प्रध्यौ प्रध्यः। प्रध्यम्। इत्यादि। क्लीबे प्रधि प्रधिनी प्रधीनि। टादौ स्वरे पुंवद्वा प्रधिना, प्रध्या। इत्यादि।

एवं प्रभी - ग्रामणी - सेनानी - मुख्याः। नियो ङिराम्। ग्रामण्याम्। सेनान्याम् ॥ ७ ॥

उदन्ताः पुंलिङ्गाः - बटुः बटू बटवः। बटुम्। बटून्। बटुना। बटवे। बटोः। २। बट्वोः। बटूनाम्। बटौ। बटुषु। हे बटो।

एवं इन्दु - बिन्दु - मुख्याः। विशेषः - असु बहुवचनान्तः।

स्त्रीलिङ्गः - धेनु बटुवत्। शसादौ वि० धेनूः। धेन्वा। धेन्वै, धेनवे। धेन्वाः। धेनोः। धेन्वोः। धेनूनाम्, धेन्वाम्। धेनौ। धेनुषु। हे धेनो।

एवं रज्जु - कङ्गु - प्रियङ्गु - मुख्याः।

कथं हे सुतनु। हे भीरु। उपमानसहितसंहितसहशफवामलक्ष्मणपूर्वादूरोरूङिति। उतः स्त्रियामूङ्प्रत्ययादिदमपि प्रयोगद्वयं मतम्।

क्लीबाः - वस्तु वस्तूनी वस्तूनि। २। वस्तुना। वस्तुने। वस्तुनः। २। वस्तुनोः। वस्तूनाम्। वस्तुनि। वस्तुषु। हे वस्तु, हे वस्तो।

एवं अम्बु - वस्त्रादयः।

त्रिलिङ्गाः - शोभनं वसु यस्येति सुवसु। पुंसि बहुवत्। स्त्रियामप्येवम्। नित्यस्त्रीत्वाभावाद् वा नदीवद्भावो नास्ति। शसि तु सस्य नत्वं न। सुवसूः। टा नेत्यपि न। सुवस्वा। क्लीबे वस्तुवत्। टादौ स्वरे पुंवद्वा। न्वागमे टा ना पक्षे च। सुवसुना। सुवसुने, सुवसवे। इत्यादि। हे सुवसु।

एवं सुधेनु - सुजानु - मुख्याः ॥ ७ ॥

वि० पटु - शब्दः स्वत एव त्रिलिङ्गोऽस्ति। तदस्य स्त्रियां स्वत एव स्त्रीत्वप्रवृत्तत्वात् वा नदीवद्भावोऽस्त्येव। तेन धेनुवत् पटै, पटवे। इत्यादि। 'उतो गुणवचनादखरुसंयोगोपधाद्वा।' इति ई प्रत्यये पट्वी इत्यपि स्यात्। खरुरियम्। पाण्डुरियम्। नित्यमिति। क्लीबे सं० हे पटु। हे पटो।

एवं उरु - गुरु - पृथु - लघ्वादयः ॥ ७ ॥

क्रोष्टु तृज्वत्। क्रोष्टु घुटि स्त्रियाम्। असंबुद्धौ। अक्लीबे। क्रोष्टृ। क्रोष्टा क्रोष्टारौ क्रोष्टारः। क्रोष्टारम्। शसादावचि वा। क्रोष्टॄन्, क्रोष्टून्। क्रोष्ट्रा, क्रोष्टुना। क्रोष्टुभ्याम्। क्रोष्टुभिः। क्रोष्ट्रे, क्रोष्टवे। क्रोष्टुः, क्रोष्टोः। २। क्रोष्ट्रोः, क्रोष्ट्वोः। न्वागमे स्वरव्यवहितत्वात् तृचादेशो नास्ति। क्रोष्टूनाम्। क्रोष्टरि, क्रोष्टौ। क्रोष्टुषु। हे क्रोष्टो। स्त्रियां क्रोष्ट्री। क्लीबे बहुक्रोष्टुवत्। टादौ स्वरे पुंवद्वा। बहुक्रोष्टुना। बहुक्रोष्टुने, बहुक्रोष्टवे। इत्यादि ॥ ७ ॥

ऊदन्ताः लिङ्गाः - हूहूः हूहौ हूहः। हूहूम्। हूहून्। टादौ सन्धिः। हूहा। हूहे। इत्यादि। आमि हूहाम्। हे हूहूः।

एवं नग्नहू - मुख्याः।

स्त्रीलिङ्गाः - वधूः वध्वौ वध्वः। वधूम्। वधूः। वध्वा। वध्वै। वध्वाः। २। वध्वोः। वधूनाम्। वध्वाम्। वधूषु। हे वधु।

एवं चमू - कण्डू - मुख्याः।

धातूदन्ताः - 'भ्रूधातुवत्।' 'ईदूतोरियुवौ स्वरे।' भ्रूः भ्रुवौ भ्रुवः। भ्रुवम्। भ्रुवः। भ्रुवा। भ्रुवै, भ्रुवे। भ्रुवः। २। भ्रुवोः। भ्रूणाम्, भ्रूवाम्। भ्रुवाम्, भ्रुवि। भ्रूषु। हे भ्रूः। कथं हे सुभ्रु। उणादिसूत्रेण भ्रुरिति निपातः। शोभनं भ्रु यस्याः। अत्रापि स्त्रीपर्यायत्वाद् भीरु - शब्दवत्। भ्रुवाम्। जातित्वादूङि ह्रस्वत्वात् सिद्धम्।

मत्यर्थो भ्रू - शब्दो भ्रुवत्।

त्रिलिङ्गाः – कटप्रूः कटप्रुवौ कटप्रुवः । कटप्रुवम् । इत्यादि । स्त्रियामप्येवम् । नित्यमप्येवम् । नित्यस्त्रीत्वाभावाद्वा नदीवद्भावो नास्ति । क्लीबे ह्रस्वत्वे बभ्रुवत् । टादौ स्वरे पुंवद्वा । कटप्रुणा, कटप्रुवा । कटप्रुणे, कटप्रुवे । इत्यादि ।

एवं नतभ्रू - सुभ्रू - अक्षल्रू - लू - पू - धू - परमलू - महापू - गतधू - स्वयंभू - आत्मभू - मनोभू - प्रतिभू - मुख्याः ।

परमलू - मुख्यानां 'अनेकाक्षरयोः ०।' इत्यादिना वत्वे प्राप्ते 'अव्ययकारकाभ्यामेवायं विधिः ।' इति भणनात्; स्वयम्भू - मुख्यानां अव्ययकारकपरत्वादपि वत्वे प्राप्ते 'भूरवर्षाभूरपुनर्भूः ।' इति निर्देशात् वत्वं न । स्वयम्भूरात्मभूश्च ब्रह्मा । मनोभूः कामः । एते सञ्ज्ञारूपाः पुंलिङ्गाः ।

विवक्षितलिङ्गं यथा – स्वयम्भूर्देवी । मनोभु कर्म ।

प्रलू अव्ययात्, यवलू कारकात्, इत्यादीनां स्वरे 'अनेकाक्षरयोस्त्वसंयोगाद्यवौ ।' पुंस्त्रियोः । प्रलूः प्रल्वौ प्रल्वः । प्रल्वम् । इत्यादि । क्लीबे ह्रस्वत्वे प्रलु वस्तुवत् । टादौ स्वरे पुंवद्वा । प्रलुना, प्रल्वा । इत्यादि । हे प्रलु ।

एवं यवलू - क्षेत्रलू - सर्वलू - खलपू - मुख्याः । 'खलपूः स्याद् बहुकर' इति सञ्ज्ञायां पुंस्त्वमेव । अन्यथा त्रिलिङ्गत्वम् ।

प्लवङ्गमः प्लवङ्गः स्याद् वर्षाभूस्तद्वधूः ।'– इति मण्डूक्यां वर्तमानः स्त्रीलिङ्गः । वर्षाभूः वर्षाभ्वौ वर्षाभ्वः । वर्षाभ्वा । उपस्थानित्वाभावात् वा नदीवद्भावो नास्ति । नित्यस्त्रीत्वान्नित्यं नदीकार्यम् । वर्षाभ्वै । इत्यादि धूवत् । हे वर्षाभु । द्वितीयभर्तृग्रहणाय पुनर्भवतीति पुनर्भूः स्त्रीलिङ्गो वर्षाभूवत् । अर्थान्तरे त्वनदीत्वादेतौ प्रलूवत् ॥ ७ ॥

ऋदन्ताः पुंलिङ्गाः – पितृ । पिता पितरौ पितरः । पितरम् । पितॄन् । पित्रा । पित्रे । पितुः । पित्रोः । पितॄणाम् । पितरि । पितृषु । हे पितः ।

एवं भ्रातृ - जामातृ - मुख्याः ।

वि० नृ । 'नृ वा' इत्यामि नृणाम्, नॄणाम् । स्त्रीलिङ्गः मातृ पितृवत् । शसि तु मातॄः । नित्यस्त्रीत्वादीप्रत्ययो नास्ति ।

एवं ननान्दृ - दुहितृ - मुख्याः ।

वि० – स्वसा नप्ता च नेष्टा च त्वष्टा क्षत्ता तथैव च ।
होता पोता प्रशास्ता च अष्टौ स्वस्रादयः स्मृताः ॥

स्वसृ स्त्रीलिङ्गः । शेषाः सप्त पुंलिङ्गाः । एषां स्वस्रादीनां घुट्यार् । स्वसा स्वसारौ स्वसारः । स्वसारम् । इत्यादि ।

एवं पितृष्वसृ ।

त्रिलिङ्गाः - कर्तृ। कर्ता। 'धातोस्तृशब्दस्यार्।' कर्त्तारौ कर्त्तारः। कर्त्तारम्। कर्त्तारौ। शेषं पितृवत्। स्त्रियां कर्त्री। क्लीबे वारिवत्। कर्तृ कर्तृणी कर्तॄणि। २। टादौ स्वरे पुंवद्वा। कर्तृणा, कर्त्रा। इत्यादि। हे कर्तृ।

एवं तृजन्तास्तुनन्ताश्च।

शोभना माता यस्य यस्या वा कुलस्येति सुमातृ-शब्दः पुंसि पितृवत्। स्त्रियां मातृवत्।

अथ स्फुटलिङ्ग उक्त्यर्थमीप्रत्ययोऽपि। सुमात्री कन्या। क्लीबे कर्तृवत्। हे सुमातृ। एवं सुपितृ-मुख्याः।

स्वस्रादीनामन्यपदार्थे पुंस्त्रियोरप्यार्। शसि तु पुंसि पितृवत्। स्त्रियां मातृवत्। ईप्रत्यये बहुस्वस्री बाला। क्लीबे कर्तृवत्। हे बहुस्वसृ॥७॥

ऋदन्ताः पुंलिङ्गाः - पितुः ऋः - पितॄः। स्वरे सन्धिः। पित्रौ पित्रः। 'समानादमृशसोरल्लोपः। सो नः पुंसः।' पितॄम्। पितॄन्। पित्रा। इत्यादि। दीर्घत्वादामि नुर्नास्ति। पित्राम्। हे पितॄः। यदा पितुः ऋरेव माता तदा स्त्रियामप्येवम्। शसि तु पितॄः। शोभना पितॄर्यत्र कुले इति क्लीबे ह्रस्वत्वे सुपितृ वारिवत्। टादौ स्वरे पुंवद्वा। सुपितृणा, सुपित्रा। इत्यादि॥७॥

प्रियक्ल ऌदन्ताः - प्रियक्लः प्रियक्लौ प्रियक्लः। प्रियक्लम्। प्रियक्लॄन्। टादौ स्वरे सन्धिः। प्रियक्ला। इत्यादि। आमि प्रियक्लॄनाम्। हे प्रियक्ल। स्त्रियामप्येवम्। शसि प्रियक्लॄः। क्लीबे वस्तुवत्। टादौ स्वरे पुंवद्वा। प्रियक्लृना, प्रियक्ला। इत्यादि।

एवं प्रियगस्लृ-मुख्याः॥७॥ प्रियक्लॄ-मुख्या ॡदन्ता अप्येवम्। आमि तु प्रियक्लाम्। हे प्रियक्लॄः॥७॥

सन्ध्यक्षरान्ताः पुंस्त्रियोस्तुल्याः। एदन्ताः - सह इना कामेन वर्त्तत इति सेः कामी स्मरप्रिया वा। सेः सयौ सयः। इत्यादि। क्लीबे सन्ध्यक्षराणामुदितौ ह्रस्वादेशे। सि सिनी सीनि। २। टादौ स्वरे पुंवद्वा। सिना, सया। इत्यादि।

एवं परमे-मुख्याः। परमश्चासौ इश्च परमेः। अथ परम उत्कृष्टः इः कामो यस्य।

ऐदन्ताः - सह एकारेण वर्त्तत इति सैः। सैः सायौ सायः। इत्यादि। क्लीबे। सि सिनी सीनि। २। टादौ स्वरे। सिना, साया। इत्यादि।

वि० स्त्रीलिङ्गो रै-शब्दः। व्यञ्जने 'रैः।' इत्यात्वम्। राः। राभ्याम्। रासु। अन्यपदार्थे बहुरै-मुख्या अप्येवम्। क्लीबे ह्रस्वत्वे बहुरि वारिवत्। टादौ स्वरे पुंवद्वा। बहुरिणा, बहुराया। ह्रस्वत्वे कृतेऽप्येकदेशस्याविकृतत्वाद् 'रैः।' इत्यात्वम्। बहुराभ्याम्। बहुरासु॥७॥

ओदन्ताः–पुंस्त्रीलिङ्गो गो-शब्दः। गौः गावौ गावः। गाम्। गाः। गवा। गवे। गोः। गवोः। गवाम्। गवि। गोषु। अन्यपदार्थे यथा–चित्रा गावो यस्येति 'गोरप्रधानस्य।' इत्यादिना चित्रगुरिति वचनात् सुवसुवत्।

स्वर्गवाची स्त्रीलिङ्गो द्यो-शब्दः। 'गोतौ घुटि।' इत्यत्र गो इत्योकारोपलक्षणम्। तेन गो-शब्दवत्॥ ७॥

औदन्ताः–पुंलिङ्गश्चन्द्रवाची ग्लौ-शब्दः। ग्लौः ग्लावौ ग्लावः। इत्यादि। स्त्रीलिङ्गो नौ-शब्दः। एतावन्यपदार्थेऽप्येवम्। शोभना नौर्यस्या यस्य वा। सुनौः। इत्यादि। क्लीबे ह्रस्वत्वे सुनु वसुवत्। टादौ स्वरे पुंवद्वा। सुनुना सुनवा। इत्यादि। एवमन्येऽपि॥ ७॥

॥ इति स्यादिप्रक्रमे प्रथमः स्वरान्ताधिकारः॥

व्यञ्जनान्तानां पुंस्त्रियोः क्लीबे टादौ तुल्यं रूपम्। कान्ताः यथा–चक् तृप्तौ। सुष्ठु चकते सुचक्। सुचक् सुचग्, सुचकौ। सुचग्भ्याम्। सुचक्षु। क्लीबे सुचक् सुचग्, सुचकी सुचङ्कि। २।

मनाक् अव्ययः।

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

'अव्ययाच्च।' इति सर्वत्र विभक्तिलोपे प्रथमतृतीयौ मनाक् मनाग्।

एवं अन्वक्-पृथक्-विष्वगादयः॥ ७॥

चित्रलिख्-मुख्याः खान्ताः। सुकग्-मुख्या गान्ताः। देवश्लाघ-मुख्या घान्ताश्च सुचक्वत्।

वि० सुवल्ग्। सुवल्ग्। सुवल्गौ। सुवल्ग्भ्याम्। क्लीबे सुवल्ग् सुवल्गी सुवल्गि। २॥ ७॥

डान्ताः–यथा दृष्टो डकारो येन सः दृष्टड्। दृष्टडौ। दृष्टट्सु। क्लीबे दृष्टड् दृष्टडी। अधुडन्तत्वात् नुर्नास्ति। दृष्टडि। २।

चान्ताः–अम्बुमुच् मेघः। 'चवर्गदृगादीनां च।' इति गत्वम्। अम्बुमुक् अम्बुमुग्। अम्बुमुचौ। अम्बुमुग्भ्याम्। अम्बुमुक्षु।

एवं जलमुचादयः पुंलिङ्गाः।

वाच्-त्वच्-ऋच्-रुच्-स्फिच्-शुच्-मुख्याः स्त्रीलिङ्गाः। स्फिच घुण्टिकावाची।

एवं त्रिलिङ्गः–सत्यवाक्। क्लीबे सत्यवाक्, सत्यवाग् सत्यवाची सत्यवाञ्चि। २।

एवं सुवाच्-स्निग्धत्वच्-मुख्याः।

वि० मूलवृश्च्–आदिलोपे झजादित्वात् 'हशषच्छान्ते०।' इत्यादिना चस्य गत्वबाधकं डत्वम्। मूलवृट् मूलवृश्चौ। मूलवृड्भ्याम्। मूलवृट्सु। क्लीबे मूलवृट् मूलवृश्ची मूलवृंश्चि। २।

सुकुञ्च्–अत्र 'अकुञ्चेत्।' इति ज्ञापकात् क्त्वावनुषङ्गलोपो नास्ति। 'चवर्गदृगादीनां च।' इति सिद्धे वर्गग्रहणबलान्नित्यमपि संयोगान्तलोपं बाधित्वा अञ्च्-युज्-क्रुञ्चां प्रागेव गत्वम्। अनुस्वारो 'वर्गे वर्गान्तः।' अन्तलोपे सुकुङ् सुकुञ्चौ सुकुञ्चः। सुकुञ्चम् सुकुञ्चौ। अकुञ्चेदिति वर्जनादनुषङ्गलोपो नास्ति। सुकुञ्चः। सुकुञ्चा। सुकुङ्भ्याम्। सुकुङ्सु। क्लीबे सुकुङ् सुकुञ्ची सुकुञ्चि। २।

अञ्चु गतिपूजनयोः। प्रत्यञ्चतीति क्विप्। 'अञ्चेरलोपः पूर्वस्य च दीर्घः।' इति ज्ञापकात् क्त्वावनुषङ्गलोपो नास्ति। प्रत्यञ्च्–प्रत्यङ् प्रत्यञ्चौ प्रत्यञ्चः। प्रत्यञ्चम्। अघुट्स्वरे 'अञ्चेरलोपः पूर्वस्य च दीर्घः।' इत्यलोपे 'निमित्ताभावे०' इत्यादिना यत्वस्य इत्वे दीर्घत्वे च, अघुट्स्वरव्यञ्जनयोरनुषङ्गलोपे च प्रतीचः। प्रतीचा। प्रत्यग्भ्याम्। प्रत्यक्षु। स्त्रियां प्रतीची। क्लीबे प्रत्यक्,–०ग् प्रतीची प्रत्यञ्चि। २।

पूजायां तु शसादौ अञ्चेरनचीनऽनुषङ्गलोपोऽलोपश्च। प्रत्यञ्चः। प्रत्यञ्चा। प्रत्यङ्भ्याम्। प्रत्यङ्सु। स्त्रियां प्रत्यञ्ची। क्लीबे प्रत्यङ् प्रत्यञ्ची प्रत्यञ्चि। २।

एवं प्राञ्च्-अपाञ्च्-दध्यञ्च्-मध्वञ्च्-सध्र्यञ्च्-सम्यञ्च्-विष्वद्र्यञ्च्-देवद्र्यञ्च्-सर्वद्र्यञ्च्-तद्र्यञ्च्-यद्र्यञ्च्-अदसस्तु चतुर्द्धा-अदमुयञ्च्-अमुद्र्यञ्च्-अमुमुयञ्च्-अद्र्यञ्च्-तिर्यञ्च्-गवाञ्च्-गोञ्च्-गोअञ्च्-दृषदञ्च्-योषिदञ्च्-मुख्याः। एषामघुट् स्वरे। वि० अदमुयञ्च्। अत्रालोपे यत्वस्य इत्वस्य (इत्वे?) दीर्घत्वे च, पूर्वस्य चत्वं केचिदिच्छन्ति। अदमुईचः। अदमुईचा। अदमीचा। इत्यादि।

एवं अमुमुयञ्च्। तिर्यञ्च्–तिर्यङ्। तिरीश्चिः। तिरश्चः। तिरश्चा। पूजायां तु तिर्यञ्चः। तिर्यञ्चा।

उदङ् उदीचिः। उदीचः। उदीचा। पूजायां उदञ्चः। उदञ्चा।

गवाञ्च् गोञ्च् गोअञ्च्। एषामलोपे तुल्यं रूपम्। गोचः। गोचे। इत्यादि। पूजायां गवाञ्चः। गवाञ्चा। गोञ्चः। गोञ्चा। गोअञ्चः। गोअञ्चा।

दृषदञ्च् दृषदञ्चः। दृषदञ्चा। एवं योषिदञ्च्।

अच् स्वरपर्यायः। चस्य गत्वं न। ह्रगादेः कृदन्तस्य साहचर्याच्चवर्गोऽपि कृदन्त एव ग्राह्यः। अच्, अञ्च अचौ। अङ्भ्याम्। अङ्क्षु। एवं लिखितच्।

छान्ताः - पथिप्राच्छ्। 'हशषच्छान्तेऽजादीनां डः।' पथिप्राट्, -०ड् पथिप्राच्छौ। पथिप्राड्भ्याम्। पथिप्राट्सु। क्लीबे पथिप्राट्, -०ड् पथिप्राच्छी पथिप्राञ्च्छि। २।

जान्ताः - वणिज्। वणिक्, वणिग् वणिजौ वणिजः। वणिग्भ्याम्। वणिक्षु।

एवं क्ष्माभुज्-भूभुज्-मुख्याः पुंलिङ्गाः। ऋज्-स्रज्-मुख्याः स्त्रीलिङ्गाः। क्लीबे असृज्। असृक्, असृग् असृजी असृञ्जि। २।

त्रिलिङ्गाः - सुखभाज् वणिजवत्। क्लीबे असृग्वत्।

एवं अर्द्धभाज्-नीरुज्-तृष्णुज्-धृष्णुज्-स्वभ्रजादयः।

वि० साधुमस्ज्। 'संयोगादेर्धुटः।' इत्यादिलोपे साधुमक्, साधुमग्। स्वरे 'धुटां तृतीयः।' इति सस्य दत्वे, 'तवर्गस्य टवर्ग०'इत्यादिना दस्य जत्वे साधुमज्जौ। साधुमग्भ्याम्। साधुमक्षु। क्लीबे साधुमक्, -०ग् साधुमज्जी साधुमञ्ज्जि। २।

बहूर्ज् - 'त्रिषु व्यञ्जनेषु।' इत्यादिना एकव्यञ्जनलोपे 'रात्सस्यैव।' इति संयोगान्तलोपो न स्यात्। गत्वम्। रेफाक्रान्तस्य द्वित्वम्। बहूर्क्क्, -०र्ग्ग् बहूर्जौ। बहूर्ग्भ्याम्। बहूर्क्षु। क्लीबे बहूर्क्क्, बहूर्ग्ग् बहूर्जी। 'रेफात्परो जात्पूर्वो नुर्वा वक्तव्यः।' बहूर्जि, बहूर्न्जि।

युज् - 'युजेरसमासे नु घुटि।' युङ् युञ्जौ युञ्जः। युञ्जम्। युञ्जः। युजा। युग्भ्याम्। युक्षु। क्लीबे युक्, युग् युजी युञ्जि। २। समासे तु अश्वयुक् सुखभाज् वत्। यदा आश्विनमासार्थस्तदा पुंस्येव।

यज्-सृज्-मृज्-राज्-भ्राज्-भ्रस्ज्-व्रश्च्-परिव्राजः एवमष्टौ यजादयः।

देवेज् - देवेट्, देवेड् देवेजौ। देवेड्भ्याम्। देवेट्सु। क्लीबे देवेट्, -०ड् देवेजी देवेञ्जि। २।

एवं रज्जुसृज्, परिमृज्, सम्राज्, भ्राज्, धानाभ्रस्ज्, परिव्राज्। तत्रापि सम्राज् पुंलिङ्गः। धानाभ्रस्ज् अत्रादिलोपे धानाभृट्, -०ड्। स्वरे सस्य दत्वात् जत्वे धानाभ्रज्जौ।

झान्ताः—शिष्यमुड़्झ् शिष्यमुक्, शिष्यमुग् शिष्यमुज्झौ। शिष्यमुग्भ्याम्। शिष्यमुक्षु। क्लीबे शिष्यमुक् शिष्यमुग् शिष्यमुज्झी शिष्यमुझि शिष्यमुझ्झि। २।

फलोज्झ्—संयोगान्तलोपे फलोक्,—०ग् फलोज्झौ। फलोग्भ्याम्। फलोक्षु। क्लीबे फलोक्,—०ग् फलोज्झी फलोज्झि। २।

यदा तु लिखितो झ् येन स लिखितझ्—तदा अकृदन्तत्वात् गत्वं न। लिखितच्,—०क् लिखितझौ। लिखितड्भ्याम्। लिखितट्सु।

ञान्ताः—यथा ज्ञातञ् ज्ञातञौ। ज्ञातञ्भ्याम्। क्लीबे ज्ञातञ् ज्ञातञी ज्ञातञि। २।

टान्ताः—यथा नाट्यनट्,—०ड् नाट्यनटौ। नाट्यनड्भ्याम्। नाट्यनट्सु। क्लीबे नाट्यनट्,—०ड् नाट्यनटी नाट्यनण्टि। २।

एवं ठान्ताः शास्त्रपठ्-मुख्याः। डान्ताः पठितड्-मुख्याः। एवं ढान्ताः पठितढ्-मुख्याः।

णान्ताः—सुगण् सुगणौ। सुगण्भ्याम्। सुगण्सु। क्लीबे सुगण् सुगणी सुगणि। २।

एवं प्रक्कण्-प्रगुण्-मुख्याः।

तान्ताः—मरुत्,—०द् मरुतौ। मरुद्भ्याम्। मरुत्सु।

एवं नीवृत्-परभृत्-मुख्याः पुंलिङ्गाः।

तडित्-योषित्-मुख्याः स्त्रीलिङ्गाः।

पुंलिङ्गो भास्वन्त् भास्वन्तौ भास्वन्तः। भास्वता। भास्वद्भ्यामित्यादि। हे भास्वत्।

एवं हनूमन्त्-जाम्बूवन्त्-मुख्याः।

क्लीबे जगत्,—०द् जगती जगन्ति।

एवं उदश्वित् तक्रम्। यकृत् कालखण्डम्। शकृत् पुरीषम्।

त्रिलिङ्गाः—शत्रुजित्। पुं-स्त्रियोर्मरुत्वत्।

एवं सुखकृत्-दुःखहृत्-मुख्याः। श्रीमन्त् भास्वन्त्वत्। स्त्रियां श्रीमती। क्लीबे श्रीमत्,—०द् श्रीमती श्रीमन्ति। २।

एवं गोमन्त्-लक्ष्मीवन्त्-यावन्त्-तावन्त्-कियन्त्-कृतवन्त्-मुख्या अन्तुप्रत्ययान्ताः।

वि०—भातीति भातेर्डवन्त्। युष्मदर्थो भवन्त्। सं० हे भोः, हे भवत्। तथा सर्वनामत्वात् अकि भवकान्। भवकती। भवकत्। इत्यादि।

भगवन्त्—हे भगोः, हे भगवन्।

एवं अघवन्त् पचन्त् श्रीमन्त्वत् । किंतूदनुबन्धप्रत्ययाभावात् सौ न दीर्घः । पचन् । तथा -

'तुदभादिभ्य ईकारे' न लोपो वास्तु शंतृङः ।
शेषेभ्यः सर्वदा लोपो यन्ननन्तात् कदापि न ॥

इति भणनात् स्त्री-क्लीबयोरीकारे पचती ।

एवं शंतृङन्ताः ।

वि० तुदत् । स्त्री-क्लीबयोरीकारे तुदती । तुदन्ती ।

एवं भादयस्तुदादयश्च ।

तथा 'प्सास्याद्वा ।' इति परसूत्रेण प्साती । प्सान्ती । करिष्यती । करिष्यन्ती ।

एवं स्यन्तप्रत्ययान्ताः ।

जुह्वन्त् - 'अभ्यस्तादन्तिरनकारः ।' जुह्वत् जुह्वतौ जुह्वतः । जुह्वतं जुह्वतः । इत्यादि । स्त्रियां जुह्वती । क्लीबे जुह्वत्, -०द् जुह्वती । वा नपुंसके जुह्वति, जुह्वन्ति । २ ।

एवं जुहोत्यादि २४ । जक्षादि ७ । तथा चेक्रीयित लुकि पापचन्त्-मुख्याश्च ।

अदन्त् - 'शेषेभ्यः सर्वदा लोप' इति स्त्री-क्लीबयोरीकारे अदती ।

एवं प्सा - भादि - जुहोत्यादि - जक्षादि - वर्जं अदादि - स्वादि - रुधादि - तदादि - क्र्यादीनां धातवः ।

महन्त् - महान् महान्तौ महान्तः । महान्तं महतः । महतेत्यादि । हे महन् । स्त्रियां महती । क्लीबे महत्, -०द् महती महान्ति । २ ।

थान्ताः - यथा तक्रमथ् । तक्रमत्, -०द् तक्रमथौ । तक्रमद्भ्याम् । तक्रमत्सु । क्लीबे तक्रमत्, -०द् तक्रमथी तक्रमन्थि । २ ।

दान्ताः - क्रव्यात् क्रव्याद् क्रव्यादौ । क्रव्याद्भ्याम् । क्रव्यात्सु ।

एवं सुहृदाद्याः पुंलिङ्गाः । संपदाद्याः स्त्रीलिङ्गाः ।

एवं त्रिलिङ्गाः-तत्त्वविद् । क्लीबे तत्त्ववित्, -०द् तत्त्वविदी तत्त्वविन्दि । २ ।

एवं बहुसंपद्-प्रमुद्-काष्ठभिदादयः । व्याघ्रस्येव पदौ अस्येति बहुव्रीहावस्त्याद्युपमानसंख्यासुभ्यः पादस्य पाद्भावः । कुम्भपद्यादिषु च । व्याघ्रपात्, -०द् व्याघ्रपादौ व्याघ्रपादः । व्याघ्रपादम् । अघुट्स्वरे 'पात् पदं समासान्तः ।' इति व्याघ्रपदः । व्याघ्रपदा । व्याघ्रपद्भ्याम् । व्याघ्रपात्सु । स्त्रियामप्येवम् । तदादिराकृतिगणत्वात् । पक्षे ईः । व्याघ्रपदीत्यपि । क्लीबे व्याघ्रपात्, व्याघ्रपाद् व्याघ्रपादी व्याघ्रपान्दि । २ ।

एवमुपमाने सिंहपाद्-उष्ट्रपाद्-मुख्याः। संख्यायां एकपाद्-द्विपाद्-मुख्याः। सुपूर्वं सुपात्। कुम्भपद्यादीनां स्त्रियामेव पद्भावः। कुम्भपदी गाधपदी शूकरपदीत्यादि।

अथ सर्वनामान्तर्गणस्त्यदादिः। यद्–'त्यदादीनामविभक्तौ।' इति दस्य अत्वे सर्ववत्। यः यौ ये। स्त्रियां या ये याः। क्लीबे यत् ये यानि। २। अकि। यकः यकौ यके। इत्यादि। स्त्रियां बहुलाधिकाराद् अकारस्य इकारो नास्ति। यका यके यकाः। इत्यादि। क्लीबे यकदित्यादि।

एवं तद्–'तस्य च।' इति सौ सत्वम्। सः तौ ते। स्त्रियां सा ते ताः। क्लीबे तत् ते तानि। २। अकि सकः तकौ तके। स्त्रियां सका तके तकाः। क्लीबे तकदित्यादि।

एवं एतद्–एषः एतौ एते। स्त्रियां एषा एते एताः। क्लीबे एतत् एते एतानि। २। अकि एषकः एतकौ एतके। स्त्रियां एषिका एतिके एतिकाः। क्लीबे एतकदित्यादि। 'एतस्य चान्वादेशे द्वितीयायां चैन।' अधिकारात टौसोश्च। एतं व्याकरणमध्यापय, अथो एनं वेदमध्यापय। इत्थमन्वादेशे एनं एनौ एनान्। एनेन। एनयोः। स्त्रियां श्रद्धावत्। क्लीबे द्वितीयायां एनत् एने एनानि। एनेन एनयोः। अकि साकोऽप्येनादेशः।

'डान्ताः संख्यालिङ्गाः कत्यव्ययथुष्मदस्मच्च।'

इति अलिङ्गत्वाद् युष्मदस्मदोर्लिङ्गत्रयेऽपि प्रयुक्तयोस्तुल्यं रूपम्।

युष्मद्–त्वं युवां यूयम्। त्वां युवां युष्मान्। त्वया युवाभ्यां युष्माभिः। तुभ्यं युवाभ्यां युष्मभ्यम्। त्वत् युवाभ्यां युष्मत्। तव युवयोः युष्माकम्। त्वयि युवयोः युष्मासु।

अकि सविभक्त्यादेशे साकोप्यादेशः। त्वकं युवकां यूयकम्। त्वकां युष्मकान्। त्वयका युवकाभ्यां युष्मकाभिः। तुभ्यकं युवकाभ्यां युष्मकभ्यम्। त्वकत् युवकाभ्यां युष्मकत्। तवक युवकयोः युष्मकाकम्। त्वयकि युष्मकासु।

अस्मद्–अहं आवां वयम्। मां आवां अस्मान्। मया आवाभ्यां अस्माभिः। मह्यं आवाभ्यां अस्मभ्यम्। मत् आवाभ्यां अस्मत्। मम आवयोः अस्माकम्। मयि आवयोः अस्मासु। अकि युष्मद्वत्।

तथा एतौ अन्यपदार्थे–त्वामतिक्रान्तः, मामतिक्रान्तः, अतिक्रान्तौ, अतिक्रान्ताः वा। अतित्वम् अत्यहम्। अतित्वां अतिमाम्। अतियूयं अतिवयम्। अतित्वाम् अतिमाम्। २। अतित्वान् अतिमान्। अतित्वया अतिमया। अतित्वाभ्यां अतिमाभ्याम्। अतित्वाभिः अतिमाभिः। अति-

तुभ्यं अतिमह्यम् । अतित्वभ्यं अतिमभ्यम् । अतित्वत् अतिमत् । अतितव अतिमम । अतित्वयोः अतिमयोः । सञ्ज्ञोपसर्जनीभूतानामसर्वनामत्वात् सुरागमो नास्ति । अतित्वयां अतिमयाम् । अतित्वयि अतिमयि । अतित्वासु अतिमासु ।

युवामतिक्रान्तः, आवामतिक्रान्तः, अतिक्रान्तौ, अतिक्रान्ताः वा । द्वित्वेऽपि वर्तमानयोः युष्मदस्मदोर्न युवावौ परत्वात् त्वं अहं यूयं वयं, तुभ्यं मह्यं, तव मम एते आदेशाः स्युः । युवावौ अन्यत्र । अतित्वं अत्यहम् । अतियुवां अत्यावाम् । अतियूयं अतिवयम् । अतियुष्मान् अत्यस्मान् । अतियुवां अत्यावाम् । अतियुवान् अत्यावान् । अतियुवया अत्यावया । अतियुवाभ्यां अत्यावाभ्यामित्यादि । युष्मानतिक्रान्तः अस्मानतिक्रान्तः, अतिक्रान्तौ, अतिक्रान्ताः वा । पूर्वलक्षणं पुनरद्वित्वे वर्त्तमानात् न युवावौ । अतित्वं अत्यहम् । अतियुष्मां अत्यस्माम् । अतियूयं अतिवयम् । अतियुष्मां अत्यस्माम् । २ । अतियुष्मान् अत्यस्मान् । अतियुष्मया अत्यस्मया । अतियुष्माभ्यां अत्यस्माभ्यामित्यादि ।

'युष्मदस्मदोः पदं पदात् षष्ठी-चतुर्थी-द्वितीयासु वस्नसौ ।' परिशिष्याद् बहुत्वे । यथा—पुत्रो युष्माकं पुत्रोऽस्माकम् । पुत्रो वः पुत्रो नः । पुत्रो युष्मभ्यं पुत्रोऽस्मभ्यम् । पुत्रो वः पुत्रो नः । पुत्रो युष्मान् पुत्रोऽस्मान् । पुत्रो वः पुत्रो नः । 'वां नौ द्वित्वे ।' षष्ठ्यां ग्रामो युवयोः ग्राम आवयोः । ग्रामो वां, ग्रामो नौ । चतुर्थ्यां ग्रामो युवाभ्यां ग्राम आवाभ्याम् । ग्रामो वां ग्रामो नौ दीयते । द्वितीयायां ग्रामो युवां ग्रामो आवाम् । ग्रामो वां ग्रामो नौ पातु । 'त्वन्मदोरेकत्वे ते मे त्वा मा तु द्वितीयायाम् ।' पुत्रस्तव पुत्रो मम, पुत्रस्ते पुत्रो मे, पुत्रस्तुभ्यं पुत्रो मह्यम्, पुत्रस्ते पुत्रो मे दास्यति । पुत्रस्त्वां पुत्रो मां पुत्रस्त्वा पुत्रो मा पातु । तथा अत्र सूत्रे 'षष्ठी-चतुर्थी-द्वितीयासु ।' इति व्युत्क्रमनिर्देशात् क्वचित् पञ्चमी-तृतीया-प्रथमास्वपि वस्-नसादयः स्युः । यथा—

'देहे विचरतस्तस्य लक्षणानि निबोध मे ।'

अत्र मम सकाशात् इत्यर्थः ।

'श्रुतं वश्चन्द्रगुप्तस्य भाषितं मनसा प्रियम् ।'

अत्र वो युष्माभिरित्यर्थः ।

'एकं दृष्ट्वा धनुः पाणिं मानुषं समुपस्थितम् ।
राक्षसं बलमुत्सृज्य किं वो भीता इव स्थिताः ॥'

अत्र वो यूयं इत्यर्थः । 'गायकेन विनीतौ वाम् ।' अत्र वां युवां

इत्यर्थः । 'न पादादौ चादियोगे च ।' एषामादेशानां निषेधः । यथा – 'अस्माकं पापनाशनः ।' पुत्रो युष्माकं च पुत्रोऽस्माकं च । एवमादि । च वा ह अह एवम् गौणयोगे न स्यात् । ग्रामश्च ते स्वं नगरं च मे स्वम् ।

धान्ताः – विक्रुध् । पूर्ववत् । क्लीबे विक्रुत्, – ०द् विक्रुधी विक्रुन्धि । २ ।

एवं मृगविध् - मर्माविधादयः ।

वि० ज्ञानबुध् । विरामव्यञ्जनाद् 'हचतुर्थान्तस्य धातोस्तृतीयादेरादिचतुर्थत्वमकृतवत् ।' इति ज्ञानभुत्, – ०द् ज्ञानबुधौ । ज्ञानभुद्भ्याम् । ज्ञानभुत्सु ।

नान्ताः पुंलिङ्गाः – आत्मा आत्मानौ आत्मानः । आत्मानं आत्मनः । आत्मना आत्मभ्यामित्यादि । हे आत्मन् ।

एवं मध्वन् - यज्वन् - अरुमन् - श्लेष्मन् - मुख्याः । व - म - संयोगान्ताः ।

मूर्द्धन् – अघुट् स्वरे । 'अव - म - संयोगादनोऽलोपोऽलुप्तवच्च पूर्वविधौ ।' मूर्ध्नः मूर्ध्ना । 'ईङ्योर्वा ।' इति मूर्ध्नि, मूर्धनि ।

एवं पटिमन् - महिमन् - उक्षन् - तक्षन् - राजन् - मज्जन् - मुख्याः अव - म - संयोगान्नान्ताः । तथापि राजन् अत्रालोपे 'तवर्गश्च - टवर्गयोगे च - टवर्गाविति ।' नस्य ञत्वे राज्ञः । राज्ञा । स्त्रियां राज्ञी ।

मज्जन् अत्राप्यलोपे 'त्रिषु व्यञ्जनेषु ।' इत्यादिना एकजकारलोपे नस्य ञत्वे । मज्ञः । मज्ञा ।

'श्वन् - युवन् - मघोनां च ।' इत्यघुट्स्वरे वस्योत्वे शुनः । शुना । स्त्रियां शुनी ।

युवन् – यूनः । यूना । स्त्रियां लोकोपचारात् युवतिरिति प्रसिद्धम् । परं यूनीत्यपि दृश्यते । तथा च शृङ्गारतिलकालङ्कारे ।

'भर्ता संगर एव मृत्युवसतिं प्राप्तः समं बन्धुभिः
यूनी काममियं दुनोति च वधूर्वैधव्यदुःखान्मनः ॥'

मघवन् – मघोनः । मघोना । स्त्रियां मघोनी । 'सौ च मघवान् मघवा वा ।' इति सर्वत्र वा मघवन्त् श्रीमन्त्वत् ।

शशिन् – शशी शशिनौ । शशिना शशिभ्याम् । हे शशिन् ।

एवं वाजिन् - कञ्चुकिन् - मुख्याः इनन्ताः ।

वृत्रहन् – वृत्रहा । हनोऽकारवतो णत्वम् । वृत्रहणौ वृत्रहणः । वृत्रहणम् । अघुट्स्वरे अलोपे हस्य घत्वे । वृत्रघ्नः । वृत्रघ्ना । ङौ वृत्रघ्नि, वृत्रहणि ।

एवं गोत्रहन् - अहिहन् - मधुहन् - मुख्याः ।

पूषन्—पूषा पूषाणौ पूषणः । पूषणम् । 'पादमास०' इत्यादिना शसादौ स्वरे वा पूष् । पूषः, पूष्णः । पूषा, पूष्णा । ङौ पूषि, पूष्णि, पूषणि ।

अर्यमन्—अर्यमा अर्यमणौ अर्यमणः । अर्यमणं अर्यम्णः । अर्यमभ्यामित्यादि ।

पामन् सीमन् एतौ नान्तावेव स्त्रीलिङ्गौ । मूर्धन्वत् । मनन्तान्नान्नः स्त्रियां ङी नी वा डाप् स्यात् । तदा पामा सीमा इति श्रद्धावत् । एवमन्येऽपि स्त्रियां मनन्ताः ।

क्लीबाः—कर्मन् । कर्म कर्मणी कर्माणि । २ । 'न सम्बुद्धौ ।' इति पृथक् करणात् । नपुंसकस्य वा । हे कर्म हे कर्मन् ।

एवं पर्वन्-चर्मन्-मुख्याः । व-म-संयोगान्नान्ताः ।

वि० अहन् । 'विरामव्यं०' 'अह्नः सः ।' अहः । अहोभ्याम् । अहःसु ।

स्त्रीलिङ्गाः—अर्वन् अश्वः । अर्वा । 'अर्वन्नर्वन्तिरसावनञ् ।' इति अर्वन्तौ अर्वन्तः । इत्यादि श्रीमन्तवत् । स्त्रियां अर्वती । क्लीबे असाविति प्रतिषेधेऽपि न च तदुक्तमिति ग्रहणात् अर्वत् अर्वती अर्वन्ति । २ । नञि अनर्वन्—अनर्वा अनर्वाणौ अनर्वाणः इत्यादि ।

सुखिन् शशिवत् । स्त्रियां सुखिनी । क्लीबे सुखि सुखिनी सुखीनि । २ ।

एवं धनिन्-स्थायिन्-मुख्याः इनन्ताः ।

ब्रह्मन् वृत्रहन्वत् । स्त्रियां ब्रह्मघ्नी । क्लीबे ब्रह्मह ब्रह्मघ्नी ब्रह्महणी ब्रह्महाणि । २ ।

एवं भ्रूणहन्-गोहन्-मुख्याः ।

धीवन् । अत्र ण् (?) स्वरोऽघोषाद्वन्प्रत्ययात् स्त्रियामीप्रत्ययः । 'वनोरच' इति ओण् । अवावरी । एवं स्त्रियां धीवन्-पीवन्-विश्वहश्वन्-मुख्याः वन् प्रत्ययान्ताः । 'घोषवत्स्वरवन्प्रत्ययान्तासु स्त्रियामप्येवम् ।' स्त्रियामपि पुंवत् । यथा [सु]यज्वन् सहयुध्वन् राजयुध्वन् । सौयज्वा । सहयुध्वा । राजयुध्वा । ब्राह्मणी वा डाप् स्यात् । तथा आदन्तत्वे श्रद्धावत् ।

प्रतिदीव्यतीति 'राजि-तक्षि-धन्वि-प्रतिदिवि-यजिभ्यः कन् ।' प्रतिदिवन् । अलोपे 'नामिनो वोरकुर्छुरोर्व्यञ्जने ।' इति दीर्घः । प्रतिदीव्नः । प्रतिदीव्ना । दघ्नस्तृतीयं प्रतीदीघ्नः । उटम् लुप्तवद्भाव इहोपहन्ति ।

'शक्यः पुनर्वारयितुं कथं वा दीर्घोऽतिपूर्वस्य विधीयमानः ।'

प्रशाम्यतीति क्विपि पञ्चमोपधाया दीर्घत्वे 'मो नो धातोः ।' इति मस्य सस्वरो नः । अस्य च लोपे प्रशान् । स्वरादेशः परि(र?)निमित्तकः

पूर्वविधिं प्रति स्थानिवदित्याकारस्य स्थानित्वान्नलोपो न स्यात्। प्रशान्। 'स्वरे धातुरनात्।' अनात् उपधादीर्घत्वं न निवर्त्तेत इति। प्रशामौ। प्रशान्भ्याम्। क्लीबे प्रशान् प्रशामी प्रशामि। २।

एवं प्रदान्-प्रतान् मुख्याः अनन्ता बहुव्रीहौ। स्त्रियामपि पुंवत्। यथा सुकर्म्मा सुकर्म्माणौ सुकर्म्माणः। स्त्रियः वा डाप् स्यात्। तदा सुकर्म्मा इति श्रद्धावत्। अलोपता। मीप्रत्ययोऽपि। यथा बहुरोम्णीत्यपि।

पान्ताः—पापलुप्, —०ब् पापलुपौ। पापलुप्सु। क्लीबे पापलुप्, —०ब् पापलुपी पापलुम्पि। २।

एवं गृहलिप्-मन्त्रजप्-मुख्याः।

वि० अप् स्त्रीलिङ्गो बहुवचनान्तः। 'अपश्च' इति घुटि दीर्घः। आपः, अपः। अद्भिः। अद्भ्यः। २। अपाम्। अप्सु। शोभना आपो यत्र स्वाप्, स्वाब् स्वापौ स्वापः। स्वापं स्वपः। स्वपा। स्वद्भ्याम्। स्वप्सु। हे स्वप्, —०ब्। क्लीबे स्वप्, —०ब् स्वपी। केऽपि क्लीबे वा दीर्घः। स्वम्पि स्वाम्पि। २।

एवं बह्वप्-सुव्यप्-मुख्याः।

फान्ताः—अरितुफ्। अरितुप्, —०ब् अरितुफौ। अरितुब्भ्याम्। अरितुप्सु। क्लीबे अरितुफ्, —०ब् अरितुफी अरितुम्फि।

एवं मालागुम्फ्-मुख्याः।

एवं पुत्रचुम्ब्-मुख्याः बान्ताः। इदनुबन्धत्वादनुषङ्गलोपो नास्ति।

भान्ताः—स्त्रीलिङ्गाः [ककुभ्] ककुप्, —०ब् ककुभौ। ककुब्भ्याम्। ककुप्सु।

एवं अनुष्टुभ्-तृष्टुभ्-मुख्याः।

एवं त्रिलिङ्गाः—दृष्टककुभ्। क्लीबे दृष्टककुप्, —०ब् दृष्टककुभी दृष्टककुम्भि। २।

एवं कृतानुष्टुभ्-मुख्याः।

वि० विदभ्नोति इति विदभ्। 'विरामव्यं०' 'हचतुर्थान्ते'त्यादिना दस्य धत्वम्। विधप्, —०ब् विदभौ। विधब्भ्याम्। विधप्सु।

गर्द्धभमाचष्टे इति गर्दभयतीति क्विप् गर्द्धभ्। गर्द्धप्, —०ब् इत्यादि पूर्ववत्।

मान्ताः यथा—प्राप्तशाम् प्राप्तशामौ। प्राप्तशाम्भ्याम्। क्लीबे प्राप्तशाम् प्राप्तशामी प्राप्तशामि। २।

वि० किम् । 'किम् कः ।' कादेशो सर्ववत् । कः कौ के । स्त्रियां का के काः । क्लीबे किं के कानि । 'अकि सकोऽपि' कादेशः ।

इदम् - पुंसि अयम् इमौ इमे । इमं इमान् । अनेन आभ्याम् एभिः । अस्मै । अस्मात् । अस्य अनयोः एषाम् । अस्मिन् । एषु । स्त्रियां सौ इयकम् । अन्यत्र इमके इमकाः इत्यादि सर्वावत् । क्लीबे इदकम् इमके इमकानि । २ । अकि सौ अयकम् । अन्यत्र इमकौ इमके इत्यादि सर्ववत् । अन्वादेशे द्वितीयायां टौसोश्च । एतद्वत् एनादेशः । अकि सकोऽपि नत्वम् ।

तूष्णीम् इत्यव्ययम् ।

यान्ताः - यथा अव्ययमाचष्टे इति अव्ययतीति अव्यय् अव्ययौ अव्ययभ्याम् । क्लीबे अव्यय् अव्ययी अव्ययि । २ ।

रान्ताः - स्त्रीलिङ्गो द्वार् । द्वाः द्वारौ । विभक्तिव्यञ्जने रेफस्य विसर्गो न स्यादिति । द्वार्भ्याम् । 'भवति च' इति सुपि वा विसर्गादेशो द्वार्षु, द्वाःषु ।

एवं स्त्रीलिङ्गो वार् । केऽपि क्लीबमिच्छन्ति । तदा वाः वारी वारि । २ ।

गिर् । 'विरामव्यं०' 'इरुरोरीरूरौ ।' गीः गिरौ । गीर्भ्याम् । गीर्षु, गीःषु, गीष्षु ।

एवं धुर् । धूः धुरौ धुरः । धूर्भ्याम् ।

एवं पुर् - त्वर् - मुख्याः ।

त्रिलिङ्गाः - सुगिर् गिर्वत् । क्लीबे सुगीः सुगिरी सुगिरि । २ ।

एवं धृतधुर् - जितपुर् - मुख्याः ।

लान्ताः - विमलमाचष्टे इतीन् । विमलयतीति । विमल् विमलौ । विमल्भ्याम् । क्लीबे विमल् विमली विमलि । २ ।

एवं धवल् - उज्ज्वल् - पठितहल् - मुख्याः ।

वान्ताः - यथा कृतो वकारो येन । कृतव् कृतवौ । कृतव्भ्याम् । क्लीबे कृतव् कृतवी कृतवि । २ ।

वि० स्त्रीलिङ्गो दिव् । द्यौः दिवौ दिवः । द्याम्, दिवम् दिवः । दिवा । 'दिव उद् व्यञ्जने ।' द्युभ्याम् । द्युषु ।

एवं त्रिलिङ्गाः । सुदिव् । क्लीबे 'विरामव्यञ्जनादावुक्तं । नपुंसकात् स्यमोर्लोपेऽपि ।' इति वचनादुक्तम् । सुद्यु सुदिवी सुदिवि । २ ।

एवं अतिदिव् - विमलदिव् - मुख्याः ।

शान्ताः - यथा विश् पुमान् । विट्, विड् विशौ । विड्भ्याम् । विट्सु ।

वि० दृश् दिश् स्पृश् मृश् एषां 'विरामव्यञ्जना०' दृगादित्वात् गत्वम् । स्त्रीलिङ्गो दृश् । दृक्, दृग् दृशौ । दृग्भ्याम् । दृक्षु ।

एवं दिश् त्रिलिङ्गाः । सुविश् विश्वत् । क्लीबे सुविट्, सुविड् सुविशी सुविंशि । २ ।

एवं शब्दप्राश्-मुख्याः । सुदृश् दृश्वत् । क्लीबे सुदृक्, -०ग् सुदृशी सुदृंशि । २ ।

एवं दिव्यदृश्-यादृश्-तादृश्-दलस्पृश्-कुचमृश्-मुख्याः ।

नश्यतीति नश् । 'मुहादीनां वा ।' इति । 'विरामव्यञ्ज०' गत्वं डत्वं च । नक्, नग्, नट्, नड् । नशौ । नग्भ्याम्, नड्भ्याम् । नक्षु, नट्सु ।

षान्ताः । द्विष्, द्विट्, द्विड् द्विषौ । द्विड्भ्याम् । द्विट्सु ।

एवं पुंलिङ्गाः त्विष्-रुष्-विपुष्-प्रावृष्-मुख्याः । स्त्रीलिङ्गाश्च आशिष् । 'विरामव्यञ्ज० ।' 'सजुषाशिषोरः ।' आशीः आशिषौ । आशीर्भ्याम् । आशीर्षु, आशीष्षु, आशीःषु ।

त्रिलिङ्गाः स्वर्णमुष् द्विष्वत् । क्लीबे स्वर्णमुट्, -० ड् स्वर्णमुषी स्वर्णमुंषि । २ ।

एवं विद्विष्-बहुविष्-बहुत्विष्-मुख्याः ।

वि० दत्ताशिष् आशिष्वत् । क्लीबे दत्ताशीः दत्ताशिषी दत्ताशींषि । २ ।

एवं सजुष् । सजूः सजुषौ । सजूर्भ्याम् । इत्यादि ।

दधृष्-दृगादित्वाद् गत्वम् । दधृक्, -० ग् दधृषौ । दधृग्भ्याम् । दधृक्षु ।

चिकीर्षतीति क्विप् । अस्य च लोपः । चिकीर्ष्-चिकीः । चिकीर्षौ । चिकीर्भ्याम् । चिकीर्षु, चिकीःषु, चिकीष्षु । क्लीबे चिकीः चिकीर्षी चिकीर्षि । २ । अथ चिकीर्ष इत्यत्र अलोपे निमित्ताभावे इत्यादिना षस्य सत्वे संयोगान्तलोपे चिकीर् इति रूपेऽप्येवम् ।

एवं शत्रुशीर्ष्-दिधीर्ष्-मुमूर्ष्-मुख्याः ।

सान्ताः पुंलिङ्गाः । वेधस्-वेधाः वेधसौ वेधसः । वेधोभ्याम् । वेधःसु, वेधस्सु । हे वेधः ।

एवं चन्द्रमस्-पुरोधस्-मुख्याः ।

वि० 'उशनःपुरुदंशोऽनेहसां सावनन्तः ।' उशना ।

'संबोधने तूशनसस्त्रिरूपं सान्तं तथा नान्तमथाप्यदन्तम् ।
माध्यन्दिनिर्वेष्टिगुणं त्विगन्ते नपुंसके व्याघ्रपदां वरिष्ठः ॥'

इति हे उशनन्, हे उशन । पुरुदंशा इन्द्रः । अनेहा कालः । हे पुरुदंशः । हे अनेहः ।

दोस् । दोः दोषौ दोषः । दोषम् । दुर्गटीकायां शसादौ वा दोषन् । दोषः, दोष्णः । दोषा, दोष्णा । 'इसुस् दोषां घोषवति रः ।' इति षत्वं बाधकं सस्य रत्वम् । दोर्भ्याम्, दोषभ्याम् । ङौ – दोषि, दोष्णि, दोषणि । दोष्षु, दोःषु, दोष्सु । क्वचित् क्लीबेऽपि । तदा – दोः दोषी दोंषि, दोषाणि ।

तथा च रघुवंशे – 'तमुपाद्रवदुद्यम्य दक्षिणं दोर्निशाचरः ।'

पुमन्स् – पुमान् पुमांसौ पुमांसः । पुमांसम् । पुंसः । पुंसा । पुम्भ्याम् । पुंस्सु । हे पुमन् ।

स्त्रीलिङ्गः ओतस् - अप्सरस् - मुख्याः वेधावत् । परं अप्सरस् तथा पुष्पार्थे स्त्रीलिङ्गः सुमनस् एतौ बहुवचनान्तौ ।

भास् – भाः भासौ । विसर्गलोपे भाभ्याम् । भास्सु, भाःसु ।

क्लीबाः – महस् । महः महसी महांसि । २ ।

एवं चेतस् - पयस् - मुख्याः ।

सर्पिस् - सर्पिः सर्पिषी सर्पींषि । सर्पिषा । सर्पिर्भ्याम् । सर्पिस्सु, सर्पिःसु ।

एवं अर्चिस् - हविस् - मुख्या इसन्ताः ।

एवं वपुस् – वपुः वपुषी वपूंषि । २ । इत्यादि ।

एवं धनुस् - चक्षुस् - मुख्या उसन्ताः ।

अदस् – असौ अमू अमी । अमुम् अमून् । अमुना अमूभ्याम् अमीभिः । अमुष्मै । अमुष्मात् । अमुष्य अमुयोः अमीषाम् । अमुष्मिन् अमीषु । स्त्रियाम् – असौ अमू अमूः । अमूम् अमूः । अमुया । अमूभ्याम् अमूभिः । अमुष्यै । अमुष्याः । २ । अमुयोः अमूषाम् । अमुष्याम् अमूषु । क्लीबे – अदः अमू अमूनि । अकि सर्वत्र अमुकः इति सर्ववत् । सौ तु असकौ अमुकः इत्यपि । अमात्परत्वात् महाप्राणस्य स्थाने श्रेत्वी च न । अमुकौ अमुके इत्यादि । स्त्रियाम् – असकौ अमुका अमुके अमुकाः इत्यादि । क्लीबे – अदकः अमुके अमुकानि । २ ।

श्रेयन्स् – श्रेयान् श्रेयान्सौ श्रेयांसः । श्रेयांसम् श्रेयसः । श्रेयसा । श्रेयोभ्याम् । श्रेयस्सु । हे श्रेयन् । स्त्रियाम् – श्रेयसी । क्लीबे – श्रेयः श्रेयसी श्रेयांसि । २ ।

एवं लघीयन्स् - गरीयन्स् - मुख्याः अन्सन्तो ।

वि० विद्वन्स्। अघुट्स्वरे वंसेर्वशब्दस्योत्वम्। विदुषः। विदुषा। 'विरामव्यञ्जनादिष्वनडुन्नहिवंसीनां च।' इति सस्य दत्वम्। विद्वद्भ्याम्। विद्वत्सु। स्त्रियाम्–विदुषी। क्लीबे विद्वत् विदुषी विद्वांसि। २।

एवं वन्सप्रत्ययान्ताः।

सेटस्तु यथा–पेचिवन्स्। अघुट्स्वरादौ सेट्कस्यापि वंसेर्वशब्दस्योत्वम्। पेचुषः। पेचुषा। स्त्री-क्लीबयोरीकारे पेचुषी।

वि० जगन्वस्। अत्र वस्योत्वे 'निमित्ताभावे' इत्यादिना न मत्वे, 'गमहन०' इत्यादिना उपधालोपे च। जग्मुषः। जग्मुषा। जग्मुषी।

शिश्रिवन्स्। वस्योत्वे स्वरादाविवर्णोवर्णान्तस्य धातोरियुवौ। शिश्रियुषः। शिश्रियुषा।

एवमिवर्णाद् वन्स्।

वि० चिचिवन्स्। 'य इवर्णस्यासंयोगपूर्वस्यानेकाक्षरस्य।' इति यत्वे। चिच्युषः। चिच्युषा।

एवं जिगिवन्स्-निनीवन्स्-मुख्याः।

तुष्टुवन्स्–तुष्टुवुषः। तुष्टुवुषा। बभूवन्स्–बभूवुषः। बभूवुषा।

एवमुवर्णाद्वन्स्।

एवं ऋकारात् वन्स्। कृ। चकृवन्स्–चक्रुषः। चक्रुषा। ॠ। शिशीर्वन्स्–वस्योत्वे व्यञ्जनाभावात्। ईरोभावे शिशीरुषः। शिशिरुषा।

एवं ॠकारात् वन्स्।

सुपुमन्स् सुमनस्वत्। स्त्रियां सुपुंसी। क्लीबे सुपुम् सुपुंसी सुपुमांसि। २।

अथ धातुसकारान्ताः सुकन्स्। महत्साहचर्यात् धातोर्न स्यादिति दीर्घाभावे। सुकन् सुकंसौ सुकंसः। सुकंसम्। इदनुबन्धत्वात् नानुषङ्गलोपः। सुकंसः। सुकंसा। सुकन्भ्याम्। क्लीबे सुकन् सुकंसी सुकंसि। २।

एवं सुहिन्-मुख्याः।

पिण्डग्रस् धातुत्वाद् 'अन्त्वसन्त०'. इत्यादिना न दीर्घः। पिण्डग्रः पिण्डग्रसौ। पिण्डग्रोभ्याम्। पिण्डग्रस्सु। क्लीबे पिण्डग्रः पिण्डग्रसी पिण्डग्रंसि।

एवं चर्म्म-वसादयः।

उखास्रस्। 'स्रसिध्वसोश्च' इति सस्य दत्वे उखास्रत्, ०–द्। उखास्रसौ। उखास्रद्भ्याम्। उखास्रत्सु।

क्लीबे सुपीः सुपिषी सुपींषि। २।

एवं सुतुस्-सुतूरित्यादि।

हान्ताः–पुंलिङ्गाः। यथा मधुलिह् भ्रमरः। मधुलिट्, ०–ड् मधुलिहौ। मधुलिड्भ्याम्। मधुलिट्सु।

वि० तुरासाह् इन्द्रः। सहेः साडः षत्वम्। तुराषाट्, ०-ड् तुरासाहौ। तुरासाहः। तुराषाड्भ्याम्। तुराषाट्सु।

हव्यवाह्-अघुट्स्वरे वाहेर्वाशब्दस्यौ। हव्यौहः। हव्यौहा।

भ्रुवाह्-अघुट्स्वरे अनवर्णादूट्। भ्रूहः। भ्रूहा।

अनड्वाह्-सौ तु अनड्वान् अनड्वाहौ अनड्वाहः। अनड्वाहम्। अनडुहश्चेति। अघुटि वाशब्दस्योत्वम्। अनडुहः। अनडुहा। विरामेत्यादिना हस्य दत्वम्। अनडुद्भ्याम्। अनडुत्सु। हे अनड्वन्।

स्त्रीलिङ्गः-उपानह्। उपानत्, ०-द्। उपानहौ। उपानद्भ्याम्। उपानत्सु।

त्रिलिङ्गाः-दामलिह् मधुलिह्वत्। क्लीबे दामलिट्, ०-ड् दामलिही दामलिंहि। २।

एवमभ्रंलिह्-मुख्याः।

निगुह्-हचतुर्थान्तस्येत्यादिना विरामव्यं० गस्य घत्वम्। निघुट्, ०-ड् निगुहौ। निघुड्भ्याम्। निघुट्सु।

प्रष्ठवाह्-अघुट्स्वरे वाहेर्वाशब्दस्यौ। प्रष्ठौहः। प्रष्ठौहा। स्त्री-क्लीबयोरीकारे। प्रष्ठौही।

एवं शालावाह्-मुख्याः।

स्वनड्वाह्। अनड्वाह्वत्। स्त्रियां स्त्री वेत्येके। स्वनडुही, स्वनड्वाही। क्लीबे स्वनडुत्, ०-द् स्वनडुही स्वनड्वांहि। २।

उष्णिह्-हृगादित्वाद् गत्वम्। उष्णिक्, ०-ग् उष्णिहौ। उष्णिग्भ्याम्। उष्णिक्षु।

गोदुह्-दादेर्हस्य गः। गोधुक्, ०-ग् गोदुहौ। गोधुग्भ्याम्। गोधुक्षु।

मुह्-'मुहादीनां वा।' इति गत्वं डत्वं च। मुक्, मुग्, मुट्, मुड्। मुहौ। मुग्भ्याम्। मुड्भ्याम्। मुक्षु, मुट्सु।

एवं द्रुह्, ष्णिह्-द्रुह्यत्र दस्य धत्वे। मित्रध्रुक्, ०-ग्। मित्रध्रुट्, ०-ड् मित्रध्रुहौ। मित्रध्रुग्भ्याम्, मित्रध्रुड्भ्याम्।

क्षान्ताः गोरक्ष्-'संयोगादेर्धुट्।' इति कलोपे षस्य डत्वम्। गोरट्, गोरड् गोरक्षौ। गोरड्भ्याम्। गोरट्सु। क्लीबे। गोरट्, ०-ड् गोरक्षी गोरंक्षि। २।

एवं काष्ठतक्ष्-रिपुस्तक्ष्-मुख्याः।

वि० पिपक्षतीति पिपक्ष्-विरामव्यं० संयोगान्तलोपे पिपक्, ०-ग्। पिपग्भ्याम्। पिपक्षु। अथ पिपक्ष इत्यत्र अलोपे निमित्ताभावे इत्यादिना षस्य सत्वे पिपक्स् इति रूपेऽप्येवम्।

एवं धर्म्मसिक्ष्-वाक्यविवक्ष्-वृक्षसिसिक्ष्-पापमुमुक्ष्-गोदुधुक्ष्-मुख्याः सनन्ताः।

वि० विश् प्रवेशने विविक्ष्–अत्रान्तलोपे निमित्ताभावे इत्यादिना कस्य षत्वे डत्वम्। अथ सुखार्थमादिलोपे षस्य डत्वम्। विविट्, ०–ड्। विविड्भ्याम्। विविट्सु।

एवं गृहविविक्ष्-मधुलिलिक्ष्-धर्म्मपिपृक्ष्-शास्त्रदिदृक्ष्-द्रव्यजिघृक्ष्-मुख्येषु ष-ड-स्थानीयेष्वेवेति नियमात् पिपक्षादिष्वेवं न स्यात्।

॥ इति स्यादिप्रक्रमे द्वितीयो व्यञ्जनाधिकारः॥

अथ संख्याशब्दाः।

एक शब्द एकवचनान्तो विवक्षितो द्विबहुवचनान्तोऽप्यस्ति। यथा एकौ द्वौ गतौ, एके आगच्छन्ति। लिङ्गत्रये सर्ववत्।

द्वि–द्वौ २। द्वाभ्याम् ३। द्वयोः २। स्त्री-क्लीबयोः द्वे २। शेषं पुंवत्। अकि द्वकौ। स्त्रियां द्विके। क्लीबे द्वके।

उभ–उभौ २। उभाभ्याम् ३। उभयोः २। स्त्री-क्लीबयोः उभे २। अकि उभकौ। स्त्रियां उभिके। क्लीबे उभके।

त्रि प्रभृति अष्टादशयावत् बहुवचनान्ताः। त्रि–त्रयः। त्रीन्। त्रिभिः। त्रिभ्यः २। त्रयाणाम्। त्रिषु। 'त्रि-चतुरोः स्त्रियां तिसृ चतसृ विभक्तौ।' तिस्रः २। तिसृभिः। तिसृभ्यः २। 'न नामि दीर्घम्।' इति तिसृणाम्। तिसृषु। क्लीबे त्रीणि २।

चत्वारः। चतुरः। चतुर्भिः। चतुर्भ्यः २। चतुर्णाम्। चतुर्षु। स्त्रियां चतस्रः २। चतसृभिः। चतसृभ्यः २। चतसृणाम्। चतसृषु। क्लीबे चत्वारि २। षणान्ताः संख्याशब्दाः कतिश्च अलिङ्गत्वात्। पुं-स्त्री-क्लीबेषु प्रयुक्तास्तुल्याः। पञ्चन्–पञ्च २। पञ्चभिः। पञ्चभ्यः २। पञ्चानाम्। पञ्चसु। 'औ तस्माज्जस्शसोः।' अत्र तस्मात् ग्रहणमात्वस्यानित्यार्थम्। तदनात्वपक्षे पञ्चन्वत्।

कति २। कतिभिः। कतिभ्यः २। कतीनाम्। कतिषु। या संख्या सा संख्या मानमेषाम्। यद्-तत्-किमः संख्याया डतिर्वा। यावत्तावदर्थौ यति-तति-शब्दौ कतेरुपलक्षणत्वात् कतिवत्। शेषाः संख्याशब्दा लिङ्गान्तरयुक्तेष्वपि विशेष्येषु आविष्टलिङ्गा एकवचनान्ताः। यथा स्त्रीलिङ्गो विंशतिशब्दः। विंशतिः पुरुषाः, स्त्रियः, कुलानि वा सन्ति। एवमेकवचनेष्वेव। बुद्धिवत्। विंशत्यै विंशतये इत्यादि। एवं षष्टि-सप्तति-अशीति-नवति-कोटयः।

त्रिंशत् चत्वारिंशत् पञ्चाशत् एते स्त्रीलिङ्गाः एकवचनान्ताः। योषिद्वत्। शतं क्लीबम्। सहस्रमित्यादि। दशगुणसंख्यायां कोटिवर्जं परार्द्धं यावत्। पुं-नपुंसकाः। लक्षशब्दः स्त्रीलिङ्गोऽपि। यदुक्तम्–

'कियती पञ्चसहस्री कियती लक्षा च कोटिरपि कियती।'

शंकु-वारिधी तु पुंलिङ्गावेव। यदा तु विंशत्यादीनामेव गणनं तदा सर्वाणि वचनानि स्युः। यथा–द्वे विंशती, तिस्रो विंशतयः। इत्थं विंशत्यादयः।

अथान्यपदार्थे त्रि प्रभृतयः। प्रियास्त्रयः पुरुषाः, प्रियाणि त्रीणि कुलानि वा यस्य यस्या वा कुलस्येति विग्रहे प्रियत्रिः सुबुद्धिवत्। गौणत्वादामि त्रयादेशो नास्ति। यदा तु प्रियास्तिस्रो यस्य यस्या वा कुलस्येति विग्रहे स्त्रियां प्रवृत्तत्वात् 'तिसृ-चतसृौ त्रि-चतुरोः स्त्रियाम्।' इति तिसृ-चतसृौ भवतः। तदा प्रियतिसृ पुं-स्त्रियोः प्रियतिसा। 'तौ रं स्वरे।' प्रियतिस्रौ। आमि प्रियतिसृणाम्। हे प्रियतिसः। क्लीबे स्यमोस्तदुक्तप्रतिषेधो वा। प्रियत्रि प्रियतिसृ प्रियतिसृणी प्रियतिसृणि। २। टादौ स्वरे पुंवद्वा। प्रियतिसृणा। प्रियतिस्रेत्यादि।

प्रियाः चत्वारः पुरुषाः, प्रियाणि चत्वारि कुलानि वा यस्य यस्या वा यस्येति विग्रहे प्रियचत्वार्। पुं-स्त्रियोः प्रियचत्वाः प्रियचत्वारौ प्रियचत्वारः। प्रियचत्वारम्। अघुट् स्वरव्यं० चतुरो वा शब्दस्योत्वम्। प्रियचतुरः। प्रियचतुरा। प्रियचतुर्भ्याम्। अप्राधान्यादामि नुर्नास्ति। प्रियचतुराम्। प्रियचतुर्षु। हे प्रियचत्वः। क्लीबे प्रियचतुः प्रियचतुरी प्रियचत्वारि। २। यदा प्रियाश्चतस्रः स्त्रियो यस्य यस्या वा कुलस्येति विग्रहः, तदा चतस्रादेशे प्रियचतसृ प्रियतिसृवत्। क्लीबे स्यमोस्तदुक्तप्रतिषेधो वा। प्रियचतुः। प्रियचतसृ।

प्रियाः पञ्च पुरुषाः स्त्रियो वा प्रियाणि पञ्च कुलानि वा यस्य यस्या वा कुलस्येति प्रियपञ्चन्। बहुरोमन्वत्। अलोपे चस्य योगे नस्य ञत्वे प्रियपञ्ञः। प्रियपञ्ञा। एवं प्रियसप्तन् प्रभृति अष्टादशन् यावत् नान्ताः। नस्य तु ञत्वं न।

प्रियषष्–प्रियषट्,प्रियषड् प्रियषषौ प्रियषषः। इत्यादि स्वर्णमुष्वत्।

प्रियाष्टन् आत्वपक्षे पुं-स्त्रियोः प्रियाष्टाः। प्रियाष्टौ २। प्रियाष्टाम्। प्रियाष्टौ २। प्रियाष्टाभ्याम्। प्रियाष्टाभिः। प्रियाष्टै। प्रियाष्टाः २। प्रियाष्टोः। प्रियाष्टाम्। प्रियाष्टे। प्रियाष्टासु। क्लीबे स्यमोस्तदुक्तप्रतिषेधात् आत्वं न। प्रियाष्ट। ओप्रभृतिष्वात्वं क्लीबत्वात्। ह्रस्वत्वं वा। प्रियाष्टे।

प्रियाष्टानि । प्रियाष्टेन । इत्यादि वृक्षवत् । हे प्रियाष्ट, हे प्रियाष्टन् । अनात्वपक्षे तु प्रियसप्तन्वत् । प्रियकति-प्रियविंशति-आद्याः सर्वेषु वचनेषु सुबुद्धिवत् । प्रियत्रिंशदाद्याः शत्रुजिद्वत् ।

॥ इति स्यादिप्रक्रमे तृतीयः संख्याधिकारः ॥ ग्रंथाग्रं० ४९० ॥

॥ इति ठ० संग्रामसिंहविरचितायां बालशिक्षायां स्यादिप्रक्रमस्तृतीयः ॥ ३ ॥

*

[चतुर्थः कारकप्रक्रमः ।]

कर्तृ-कर्म-करण-संप्रदान-अपादान-अधिकरण नामानि षट् कारकाणि सप्तमः संबन्धश्च । तदिमानि षट् कारकाणि संबन्धसहितानि उक्तानि अनुक्तानि च द्विप्रकाराणि भवन्ति । उक्तेषु सर्वेषु प्रथमा । अनुक्तेषु च कर्म्मणि द्वितीया । करणे तृतीया । संप्रदाने चतुर्थी । अपादाने पञ्चमी । संबन्धे षष्ठी । अधिकरणे सप्तमी ।

उक्तानि यथा त्यादि-कृत्-तद्धित-समासैर्यदुक्तं तदुक्तमुच्यते । तत्र प्रथमा । यथा – चैत्रः कटं करोति । कारको देवदत्तः । वैयाकरणः पुरुषः । कृतप्रणामः पुत्रः । इत्युक्ते कर्तरि प्रथमा ।

कटः क्रियते । भुक्त ओदनः । शतिकः पटः । आरूढो वानरो यं वृक्षं स आरूढवानरो वृक्षः । इत्युक्ते कर्म्मणि प्रथमा ।

स्नाति येन चूर्णेन तत् स्नानीयं चूर्णम् । 'कृत्ययुटो अन्यत्रापि [च]' इति वचनात् अनीयः । इत्युक्ते करणे प्रथमा ।

दीयते यस्मै ब्राह्मणाय, स दानीयो ब्राह्मणः । पूर्ववदनीयः । दत्तं भोजनं यस्मै अतिथये, स दत्तभोजनोऽतिथिः । इत्युक्ते संप्रदाने प्रथमा ।

बिभेत्यस्मादिति भीमो राक्षसः । भी-भीषिभ्यां मक् । उत्सन्ना जनपदा यस्माद् देशात्, स उत्सन्नजनपदो देशः । इत्युक्ते अपादाने प्रथमा ।

अस्यते उपविश्यतेऽस्मिन् इत्यासनं पीठम् । मत्ता बहवो मातङ्गा यस्मिन् वने, तत् मत्तबहुमातङ्गं वनम् । इत्युक्ते सम्बन्धे (अधिकरणे ?) प्रथमा ।

गावो विद्यन्ते यस्य स गोमान् चैत्रः। चित्रा गावो विद्यन्ते यस्य स चित्रगुः। इत्युक्ते सम्बन्धे प्रथमा।

एवमुक्ते सर्वत्र प्रथमा। आमन्त्रणे च हे पुत्र, हे पुत्रौ, हे पुत्राः। एवं उक्तामन्त्रणयोः प्रथमा॥

'यत् क्रियते तत् कर्म्म।' चैत्रः कटं करोति इत्यनुक्ते कर्मणि द्वितीया।

वि० 'एनान्तनिकषा समया हा धिग् अन्तरान्तरेण यावत् विना ऋते अभि परि प्रति अनु उप एषां योगे च।' दक्षिणेन ग्रामम्। 'अदूरे एनोऽपञ्चम्याः।' १। दक्षिणेन ग्रामं गिरिः। २। निकषा ग्रामम्। ३। समया ग्रामम्। ४। हा पुत्रम्। ५। धिक् पुत्रम्। ६। अन्तरा गार्हपत्यमाहवनीयं च वेदिः। ७। साहसमन्तरेण न खलु सिद्धिः। ८। मां यावदेहि। ९। त्वां विना न सुखम्। १०। ऋते धर्म्मं न श्रियः। ११। तथा

लक्षणवीप्सेत्थंभूतेऽभिर्भागे च परि-प्रती।
अनुरेषु सहार्थे च हीने चोपश्च कथ्यते॥

वृक्षमभि विद्योतते विद्युत्। वृक्षं वृक्षमभि तिष्ठति। साधुर्देवदत्तो मातरमभि। १२। यदत्र मां परि स्यात्। १३। यदत्र मां प्रति स्यात्। १४। चकारात् पूर्वार्थेऽपि परि-प्रती। १५। वृक्षमनु विद्योतते विद्युत्। पर्वतमनु वासिता सेना। अन्वर्जुनं योद्धारः। उपार्जुनं योद्धारः। १६। क्रियाविशेषणे कर्मैकत्वं नपुंसकं च। साधु स्थाली पचति। १७। एवं सप्तदशसु स्थानेषु द्वितीया॥

'येन क्रियते तत् करणम्।' दात्रेण लुनाति इत्यनुक्ते तृतीया। वि० 'तृतीया सहयोगे।' मित्रेणासहागतः। १। पुत्रेण सार्द्धं गतः। २। 'हेत्वर्थे।' भिक्षया भिक्षुर्वसति। वसने भिक्षाहेतुरित्यर्थः। ३। 'कुत्सितेऽङ्गे।' अक्ष्णा काणः, पादेन खञ्जः। ४। 'विशेषणे।' जटाभिस्तापसमद्राक्षीत्। ५। 'कर्त्तरि च।' अनुक्ते कर्त्तरि। त्वया चक्रे। ६। 'विनायोगे।' पुण्यैर्विना न सौख्यम्। ७। 'अशिष्टाचारे संप्रदानेऽपि।' दास्या संप्रयच्छते स्वर्णं कामुकः। ८। एवमष्टसु स्थानेषु तृतीया॥

'यस्मै दित्सा रोचते धारयते वा तत् संप्रदानम्।' गुरवे गां ददाति। बालाय रोचते मोदकः। चौराय गां धारयति। इत्यनुक्ते संप्रदाने चतुर्थी। १।

वि० 'नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा अलं वषट् योगे चतुर्थी।' नमो देवेभ्यः। इत्यादि षड्भिर्योगैः। ७। 'तादर्थ्ये।' यूपाय दारु। ८। 'तुमर्थाच्च

भाववाचिनः।' पाकाय पक्तये पचनाय व्रजति । पक्तुमित्यर्थः । ९ । यस्मै कुप्यति इति वक्तव्यबलात् कुपिक्रुधिद्रुहेर्ष्यासूयार्थानाम् । यं प्रति कोपः । छात्राय कुप्यतीत्यादि । १० । 'गत्यर्थकर्म्मणि द्वितीया-चतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि।' ग्रामं गच्छति ग्रामाय वा । गतेः साहचर्यादिहै[क]कर्मका एव धातवो ग्राह्याः । तेन ग्राममजां नयति इत्यादिषु द्वितीयैव । ११ । 'मन्यकर्मणि चानादरेऽप्राणिनि ।' न त्वा तृणं मन्ये, न त्वा तृणाय वा । १२ । 'स्पृहि-नत्योः कर्मणि ।' पुष्पेभ्यः स्पृहयति पुष्पाणि वा । देवं नत्वा, देवाय वा । १३ । एवं त्रयोदशसु स्थानेषु चतुर्थी ॥

'यतोऽपैति भयमादत्ते वा तदपादानम् ।' वृक्षात् पर्णं पतति । व्याघ्राद् बिभेति । उपाध्यायादागमयति । इत्यनुक्ते अपादाने पञ्चमी । १।

वि० 'पर्यपाङ्योगे पञ्चमी।' इह अप-परी वर्जने। परि त्रिगर्त्तेभ्यो वृष्टो देवः । २ । अप पाटलिपुत्राद् वृष्टो देवः । ३ । एतौ वर्जयित्वेत्यर्थः । आङ् मर्यादाभिविध्योः । आपत्तनात् वृष्टो देवः । पत्तनं यावदभिव्याप्य वेत्यर्थः । ४ । 'दिगितरर्तेऽन्यैश्च ।' पूर्वो ग्रामात् । ५ । इतरो लोकात् । ६ । धनादृते न कार्यसिद्धिः । ७ । द्वितीयाऽपीष्टा । सुकृतादन्यत्र रत्नं किमपि । ८ । 'स्तोकाल्पकृच्छ्रकतिपयेभ्यो मोचनार्थे करणे ।' स्तोकान्मुक्तः स्तोकेन वा । इत्यादि चतुर्भ्यः । १२ । 'यप् लोपे ।' प्रासादात् प्रेक्षते । प्रासादमारुह्य प्रेक्षते इत्यर्थः । १३ । 'आरभ्य प्रभृति विना योगे च ।' बाल्यादारभ्य सुकृतिः । १४ । बाल्यात् प्रभृति वीरोऽयम् । १५ । धनाद् विना नेष्टसिद्धिः । १६ । एवं विनायोगे द्वितीया तृतीया पञ्चमी च । एवं षोडशस्थानेषु पञ्चमी ॥

सर्वत्र परस्परापेक्षया सम्बन्धः । परं भेदकात् षष्ठी भवति । राज्ञो देशः, देशस्य राजा इत्यनुक्ते संबन्धे षष्ठी । १ ।

वि० 'षष्ठी हेतुप्रयोगे ।' अन्नस्य हेतोर्वसति । २ । 'दय-ईशोः कर्मणि ।' सर्प्पिषो दयते । मधुन ईष्टे । ३ । 'ज्ञो विदर्थस्य करणे ।' सर्प्पिषो जानातीत्यर्थः।२। 'स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैः षष्ठी च।' चकारात् सप्तम्यपि । गवां स्वामी, गोषु वा । इत्यादि सप्तभिर्योगैः । ११ । 'निर्द्धारणे च ।' गच्छतां धावन्तः, शीघ्राः गच्छत्सु वा । १२ । 'स्मृत्यर्थकर्म्मणि ।' मातुः स्मरति, मातरं वा । १३ । 'करोतेः प्रतियत्ने ।' सतो गुणान्तरापादनं प्रतियत्नः । कृष्णस्यानुकरोति, कृष्णं वा । १४ । 'हिंसार्थानामज्वरेः ।' चौरं निहन्ति, चौरस्य वा । १५ । 'व्यवहृपणिदिवीनां व्यवहारार्थानां कर्मणि ।' शतस्य व्यवहरति, शतं वा । एवं त्रयाणां कर्मणि । १६ ।

'कर्तृ-कर्मणोः कृति नित्यम् ।' इत्यनुक्ते कर्त्तरि । भवतः आसिका, भवतः शायिका । कृत्यानां कर्त्तरि वा । चैत्रेण कटः कर्तव्यः, करणीयः, कृत्यः, कार्यः, चैत्रस्य वा । १७ । 'कर्मणि ।' अपां स्रष्टा । पुरां भेत्ता । 'न निष्ठादिषु ।' इति वचनात् । 'क्त क्तवतु शन्तृङ् आनश् वन्सु कि उदन्त उकञ् अव्ययखलार्थेषु द्वितीयैव ।' द्विषः शत्रौ वा । चौरं द्विषन् चौरस्य वा १८ । एवमष्टादशस्थानेषु षष्ठी ॥

'य आधारस्तदधिकरणम् ।' कटे आस्ते इत्यनुक्ते अधिकरणे सप्तमी । १ ।

वि० 'काल-भावयोः सप्तमी ।' काले शरदि पुष्यन्ति सप्तच्छदाः । २ । भावे गोषु दुह्यमानासु गतः । ३ । 'इनन्तक्तप्रत्ययस्य कर्मणि ।' अधीती व्याकरणे शिष्यः । ४ । 'निमित्तात् कर्मसंयोगे ।' चर्मणि द्वीपिनं हन्ति । चर्मनिमित्तमित्यर्थः । ५ । 'विषये ।'धर्म्मे विरलः श्रद्धावान् । ६ । 'आधिक्यार्थोपशब्दयोगे ।' उप खार्यां द्रोणः । द्रोणाधिका खारी इत्यर्थः । ७ । 'स्वाम्यर्थाधियोगे ।' अधि ब्रह्मदत्तेषु पञ्चालाः । अधि पञ्चालेषु ब्रह्मदत्तः इति । ८ । 'स्वाम्यादौ च ।' गवां स्वामी, गोषु स्वामीइत्यादि सप्तभिर्योगैः । १५ । 'निर्द्धारणे च ।' पुंसां क्षत्रियः शूरः, पुंस्सु वा । १६ । एवं षोडशस्थानेषु सप्तमी ॥

एवं नवतिस्थानेषु सप्तम्यादयो विभक्तयः प्रायो दृश्यन्ते । तथापि विवक्षितानि कारकाणि भवन्ति । यथा वृक्षात् पर्णं पतति; वृक्षस्य पर्णं पतति । स्थाली ओदनं पचति, स्थाल्या पचति, स्थाल्यां वा । एवमेकैकस्य कारकस्य नाना विवक्षा दृश्यन्ते ।

तथा विशेषणं विशेष्यस्य लिङ्ग-संख्या-विभक्तीः प्रायो गृह्णाति । यथा विद्वान् पुरुषोऽस्ति । विदुष्यौ स्त्रियौ स्तः । बहूनि कुलानि सन्ति । प्रमाणमित्यादयः ।

पुनराविष्टलिङ्गाः शब्दा विशेष्यस्य विभक्तिमात्रमेवानुवर्त्तन्ते । न तु तत्संख्यां लिङ्गं च । यथा

वेदाः प्रमाणं स्मृतयः प्रमाणं धर्मार्थयुक्तं वचनं प्रमाणम् ।
श्रीकर्णदेवस्य नराधिपस्य शुभ्रं यशः केवलमप्रमाणम् ॥ १ ॥

तथा–पुत्रो मूर्त्तिमती आशा कन्येयं कुलजीवितम् ।
कलत्रं विभवश्चेति वयमेते कुटुम्बकम् ॥ २ ॥

एवं नित्यलिङ्गाः शब्दा विशेषणभूता आविष्टलिङ्गा ज्ञेयाः । संपन्ना यवाः । जातावेकवचनम् ॥

अथ कारकाणां भेदसञ्ज्ञा ।

उच्यते द्विविधः कर्त्ता स्वतन्त्रो हेतुरेव च ।
यः करोति स कर्त्तेति स्वतन्त्रो मुख्यसञ्ज्ञकः ॥ १ ॥
कारयति यः स हेतुः प्रयोजक इति स्मृतः ।
प्रेषकोऽध्येषकश्चानुकूल्यभागीति स त्रिधा ॥ २ ॥
प्रेषते यः प्रभुत्वेन प्रेषकः स यथौदनम् ।
भृत्येन पाचयत्येष नरः स्वामित्वमावहन् ॥ ३ ॥
पुनरध्येषते यस्तु सत्कारसहितं यथा ।
गुरुमामन्त्रयेद् भोक्तुं ततः सोऽध्येषको बुधैः ॥ ४ ॥
प्रेषतेऽध्येषते नानुकूल्यभागी च केवलम् ।
ओदनं प्रति हेतुः सन् सुपुत्रो जनकं यथा ॥ ५ ॥
निवर्त्यं च विकार्यं च प्राप्यं कर्म्म च तत् त्रिधाः ।
यदसज्जायते वस्तु जन्मना वा प्रकाशते ॥ ६ ॥
तन्निवर्त्यं कटं कुर्यात् प्रसूते वाथ नन्दनम् ।
गुणान्तरस्य चाधाने प्रकृत्युच्छेदने तथा ॥ ७ ॥
प्राप्नोति विकृतिं यच्च तद् विकार्यमिति स्मृतम् ।
यथा लुनात्यसौ काण्डं काष्ठं दहति पावकः ॥ ८ ॥
तत् प्राप्यं प्रकृतिस्थं यद् यथा पश्यति भास्करम् ।
बाह्यमाभ्यन्तरं चेति द्विविधं करणं मतम् ॥ ९ ॥
बाह्यं लुनाति दात्रेण दण्डेनाहन्ति दन्तिनम् ।
आभ्यन्तरं दृशा हन्ति याति द्यां मनसा यथा ॥ १० ॥
अनुमन्त्रनिराकर्तृ प्रेरकं संप्रदानकम् ।
यद् ददाम्यहमित्युक्त्वा ददाति तदनुज्ञया ॥ ११ ॥
गुरवे गां यथा शिष्यस्तदाहुरनुमन्तृकम् ।
यत् प्रदेहि भणित्वेति प्रेरितो यदि दायकः ॥ १२ ॥
ददाति बटवे भिक्षां प्रेरकं तद्विदुर्बुधाः ।
यन्नानुमन्यते नापि निराकुर्यान्न याचते ॥ १३ ॥
दत्तेऽर्काय यथा मालामनिराकर्तृ तन्मतम् ।
चलाचलविभेदेन द्विधाऽऽपादानमुच्यते ॥ १४ ॥
चलं यथाऽश्वात् पतितो वृक्षात् पर्णमिति स्थिरम् ।
षोढाधिकरणं ख्यातं भेदैर्विषयकादिभिः ॥ १५ ॥

वैषयिकौपश्लेषिकमौपचारिकमेव च ।
नैमित्तिकं [च] सामीप्यमभिव्यापकमन्तिमम् ॥ १६ ॥
अन्यत्रासम्भवे यस्य विषयस्तत्र केवलम् ।
तच्च वैषयिकं ज्ञेयं दिवि देवा नरा भुवि ॥ १७ ॥
यत्रैकदेशसंयोगस्तदौपश्लेषिकं यथा ।
भुवनेऽस्ति कटे आस्ते ग्रामे वसति पण्डितः ॥ १८ ॥
यत्र व्यवहितं किञ्चिदुपचारेण कथ्यते ।
अङ्गुल्यग्रे करिशतमेवमाद्यौपचारिकम् ॥ १९ ॥
निमित्तं यत्र कालादि तन्नैमित्तिकमुच्यते ।
यथा शरदि पुष्यन्ति वृक्षाः सप्तच्छदाः किल ॥ २० ॥
समीपस्थप्रसिद्धेन यस्य थे(स्थे)यं निगम्यते ।
तत्सामीप्यकनाम्ना च गङ्गायां घोषको यथा ॥ २१ ॥
आधेयं व्याप्य यस्तिष्ठेत् यथा रोगः कलेवरे ।
तिलेषु तैलमित्यादौ तदभिव्यापकं मतम् ॥ २२ ॥
द्वयोरेकक्रियोत्पन्नसम्बन्धोऽनेकधा मतः ।
स च परस्परापेक्षी भेद्य-भेदकयोरिव ॥ २३ ॥
यथेयं स्त्री नरस्यास्य भेदकः पुरुषोऽत्र सा ।
भेद्याद्यास्याः पुमांश्चात्र भेद्योऽयं भेदका तु सा ॥२४॥ ग्रं० ९७ ॥

*

॥ इति ठ० संग्रामसिंहविरचितायां बालशिक्षायां
कारकप्रक्रमश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

*

[पञ्चमः समासप्रक्रमः ।]

कर्मधारयोऽथ बहुव्रीहिस्तत्पुरुषस्तथा ।
द्विगुर्द्वन्द्वोऽव्ययीभावः समासाः षट् प्रकीर्त्तिताः ॥ १ ॥
मध्येऽसौ चाथ तत्शब्दो द्विपदः कर्मधारयः ।
प्रधानपुरुषश्चासौ यथा नीलोत्पलं च तत् ॥ २ ॥
तथोपमानभूतेऽपि शस्त्री श्यामा नृकेशरी ।
यत्शब्दान्तो बहुव्रीहिर्यथासौ कृतभोजनः ॥ ३ ॥
विभक्तयोः द्वितीयाद्याः समस्यन्ते परेण चेत् ।
स हि तत्पुरुषः कष्टश्रितो धर्म्मरतो यथा ॥ ४ ॥

नञुपसृज्यते यत्र सोऽप्यनश्वो यथानहम् ।
संख्यापूर्वो द्विगुर्ज्ञेयः पञ्चकपाल ओदनः ॥ ५ ॥
यथा पञ्चगवधनः पञ्चपूलीत्ययं पुनः ।
द्वितीयार्थोत्तरपदसमाहारेषु नान्यतः ॥ ६ ॥
द्वन्द्वे चकार एव स्यात् प्रथमान्तपदे पदे ।
यत्र द्वित्वं बहुत्वं च स द्वन्द्व इतरेतरः ॥ ७ ॥
समाहारः स विज्ञेयो यत्रैकत्वं नपुंसकम् ।
शिवशक्ती रथाश्वेभा रथाश्वेभं द्वितीयके ॥ ८ ॥
पूर्वेऽव्ययेऽव्ययीभावोऽग्रपदोच्चारपूर्वकः ।
स नपुंसकलिङ्गः स्यात् उपकुम्भमधिस्त्रि च ॥ ९ ॥

॥ इति ठ० संग्रामसिंहविरचितायां बालशिक्षायां
समासप्रक्रमः पञ्चमः ॥ ५ ॥

*

[षष्ठ उक्तिप्रक्रमः ।]

उक्तिश्चतुर्द्धा–कर्त्तरि, कर्मणि, भावे, कर्मकर्त्तरि च ।

कर्त्तरि यथा–पचत्योदनं चैत्रः। कर्त्तरि उक्तौ कर्तृविहितेन प्रत्ययेन कर्त्ता उक्तः स्यात्। उक्तत्वात् कर्त्तरि प्रथमा। यदा स कर्त्ता अन्येन प्रयुज्यते तदाऽसौ अनुक्तकर्त्तैव। अनुक्ते कर्त्तरि तृतीया। प्रयोजकश्चोक्तः कर्त्ता स्यात्। यथा पाचयत्योदनं मैत्रश्चैत्रेण। एवं सर्वत्र।

गत्यर्थादीनां त्विनन्तानां पूर्वकर्त्ता कर्म स्यात्। उक्तं च–

गमनाहारबोधार्थशब्दार्थाकर्मधातुषु ।
अनिनन्तेषु यः कर्त्ता स्यादिनन्तेषु कर्म्म तत् ॥ १ ॥

गत्यर्थादीनां यथा–ग्रामं गच्छति चैत्रः। ग्रामं गमयति चैत्रं मैत्रः। प्राप्नोति संपदं मैत्रः। प्रापयति मैत्रं संपदं नृपः।

आहारार्थानाम्–भुङ्क्ते ओदनं छात्रः। भोजयत्योदनं छात्रमार्यः। पयः पिबति चातकः। पयः पाययति चातकं जलदः।

बोधार्थानाम्–बुध्यते धर्म्मं शिष्यः। बोधयति धर्म्मं शिष्यं गुरुः। पश्यति चैत्रं मैत्रः। दर्शयति चैत्रं मैत्रं नृपः।

शब्दार्थानाम्–पठति शास्त्रं शिष्यः। पाठयति शास्त्रं शिष्यं गुरुः। आभाषते मित्रं पुत्रः। मित्रं भाषयति पुत्रं राजा।

अकर्मणाम् - उत्पद्यते घटः। घटमुत्पादयति कुलालः। यदा त्वेषां इनन्तानां पुनरिन्, तदा ग्रामं गमयति चैत्रं मैत्रेण जैत्रः, इत्यादि प्रयोक्तव्यम्।

आख्याते - अवीवदत् वीणां परिवादकेन। तथा कुमारसंभवे

'स तैराक्रमयामास शुद्धान्तं शुद्धकर्मभिः।'

इत्यादिकमुन्नेयम्। एवं गत्यर्थादीनां कर्तुरिनि यत् कर्मत्वमुक्तं तस्यापि प्रतिषेधमाह।

न नीखाद्य(?)दिशब्दा यत् क्रन्दह्वाः कर्तृकर्मकाः।
तथा भक्षिरहिंसायां वही सारथिकर्तृकः॥

एषां गत्यर्थाद्यर्थेऽपि पूर्वं कर्तुरनुक्तत्वात् तृतीयैव न कर्मत्वम्। यथा - नाययति ग्रामं भारं चैत्रेण मैत्रः। खादयति गुडं पुत्रेण जननी। आदयति चेत्यादि।

हृ-क्रोरपि तथा कर्ता इनन्ते कर्म वा भवेत्।
अभिवादि-दृशोरेवमात्मने विषये परम्॥

एषां च पूर्वकर्तुर्वा कर्मत्वमनुक्तं च। यथा - हारयति भारं ग्रामं चैत्रं मैत्रः, चैत्रेण वा। कारयति धर्मं शिष्यं गुरुः, शिष्येण वेत्यादि॥

अथ कर्म्मणि - ओदनः पच्यते चैत्रेण। कर्मण्युक्तौ अनुक्तः कर्ता, उक्तं कर्म। अनुक्ते कर्त्तरि तृतीया। उक्तत्वात् कर्मणि प्रथमा। एवं सर्वत्र। तथा त्याद्यन्तक्रियायाः प्राधान्यं न तु कृदन्तक्रियायाः। इत्यादि क्रियाकृतमेव कर्म उक्तं भवति। न तु क्त्वा-तुम्-शन्तृङ्-आनशप्रभृति कृदन्तक्रियायाः। तर्हि कथं ओदनः पक्त्वा भुज्यते? सत्यम्। इत्यादौ तु त्यादिक्रियापेक्षया एवोक्तम्। द्विविधं कर्म, गौणं मुख्यं च। अनेककर्मसु प्रायो गौणकत्वमेव कर्मोक्तं भवति। उक्तं च -

दुहादेर्गौणकं कर्म नीवहादेः प्रधानकम्।
इनन्ते कर्तृकमैव अन्यद् वा वक्ति कर्मजः॥ १॥

तत्र द्विकर्मका दुहादयाः -

दुहि याचि रुधि प्रच्छि भिक्षि चिञामुपयोगनिमित्तमपूर्वविधौ।
ब्रुवि शासि गुणेन च यच्छ च ते तदकीर्त्तितमाचरितं कविना॥ २॥

दुह्यते गौः पयो गोपालेन इत्यादावुपयोगित्वात् पयः तत् प्रधानम्, तन्निमित्तं गवाद्यप्रधानम्। अतस्तत्र गौणात्वादुक्तत्वम्।

'नीवह्यादेः प्रधानकर्म्' इति।

नी-वह्योर्हरतेश्चापि गत्यर्थानां तथैव च।
द्विकर्मकेषु ग्रहणं पयन्ते कर्तुश्च कर्मणः॥

नीयते भारो ग्रामं चैत्रेण, उह्यते भारो ग्रामं मैत्रेण, ह्रियते भोक्तुं ग्रामं जैत्रेण, अजाग्रामसमाकृष्यते जनेन। अत्र भारादेर्नीयमानस्य प्रधानत्वादुक्तत्वम्।

'इनन्ते कर्तृकर्मैव' इत्यादि। इनन्ते यः कर्त्ता स कर्म स्यात्। तत् कर्म उक्तम्। एतच्च गौणम्। 'अन्यद्' द्वितीयं मुख्यं वा। यथा - ग्रामं गम्यते चैत्रो मैत्रेण, ग्रामश्चैत्रं वा। एवं सर्वत्र।

अथ भावे। यत्र कर्त्ता अनुक्तः स्यात् कर्म च न लक्ष्यते, सा भावे उक्तिः। येषां धातूनां कर्म नास्ति ते अकर्मकाः। यथा -

लज्जा सत्ता स्थिति जागरणं वृद्धि क्षय भय जीवित मरणम्।
शयन क्रीडा रुचि दीप्त्यर्था धातव एते कर्मवियुक्ताः॥ १॥

तेन लज्ज्यते, त्वया भूयते, मया स्थीयते इत्यादि क्रियाया आत्मनेपदस्य प्रथमैकवचनमेव। तथा

प्र पराप समन्वव निर्दुरभि व्यधि सूदति नि प्रति पर्यपयः।
उप आङिति विंशतिरेष सखे उपसर्गगणः कथितः कविना॥ १॥

सोपसर्गा इनन्ताश्च अकर्मका अपि धातवः सकर्मका जायन्ते। यथा - दक्षेणोपास्यते धर्म्मः। राज्ये पुत्रः संस्थाप्यते नृपेण।

तथा च कालाध्वभावदेशानां कर्मसंज्ञा सिद्धैव। यथा - मासमास्ते राशौ रविः। कर्म्मणि मास आस्यते। क्रोशो गुडधानाभिर्भूयते। ओदनपाकः शय्यते। नदी सुप्यते। एवमकर्मकेष्वपि कर्मण्युक्तिः।

तथा देवदत्तेन ग्रामे गम्यते - इत्यादौ सकर्मकेष्वपि यदि कर्म न विवक्ष्यते तदा भावे उक्तिः। विवक्षाधीनं हि कर्म। यथा - मेघो वर्षति। पार्थः शरान् वर्षति। इत्यादि।

अथ कर्मकर्त्तरि।

क्रियमाणं तु यत् कर्म स्वयमेव प्रसिध्यति।
सुकरैः स्वैर्गुणैः कर्तुः कर्मकर्त्तेति तद्विदुः॥ १॥

कर्म चासौ कर्त्ता च कर्मकर्त्ता। स च कर्मवत्। लूयते केदारः स्वयमेव। भिद्यते कुशूलः स्वयमेव।

अथ क्रिया।

क्रियाप्रधानमाख्यातं लिङ्गं गृह्णाति न क्वचित्।
उक्तस्य संख्यामादत्ते पुरुषं तस्य च क्रिया॥ १॥

प्रथममध्यमोत्तमास्त्रयः पुरुषाः । सर्वोऽपि प्रथमः । त्वं युवां यूयं इति मध्यमः । अहं आवां वयं इत्युत्तमः । स पचति, तौ पचतः, ते पचन्ति । त्वं पचसि, युवां पचथः, यूयं पचथ । अहं पचामि, आवां पचावः, वयं पचामः । एवमात्मनेपदेऽपि सर्वत्र यत्रैकत्र द्वौ त्रयो वा पुरुषाः स्युः तत्र परोक्तो ग्राह्यः । युगपद्वचने परः पुरुषाणामिति वचनात् । सङ्ख्या तु सर्वेषामपि ग्राह्याः । स च त्वं च पचथः । त्वं चाहं च पचावः । त्वमहं च पचामः ।

वर्त्तमान - अतीत - भविष्यन्नामानस्त्रयः कालाः ।

वर्त्तमाना, सप्तमी, पञ्चमी, ह्यस्तनी, अद्यतनी, परोक्षा, श्वस्तनी, आशीः, भविष्यन्ती, क्रियातिपत्तिः । एतास्त्यादयो विभक्तयः ।

वर्त्तमाने वर्त्तमाना - सप्तमी - पञ्चम्यः ।

अतीते ह्यस्तनी अद्यतनी परोक्षा क्रियातिपत्तिः ।

भविष्यति भविष्यन्ती - आशीः - श्वस्तन्यः ।

एवमेतास्त्रिषु कालेषु प्रायेण स्युः ।

एकैकस्यामष्टादश वचनानि भवन्ति । पूर्वाणि न[व] वचनानि परस्मैपदसञ्ज्ञानि । पराण्यात्मनेपदसञ्ज्ञानि । परस्मैपदेष्वात्मनेपदेषु च सर्वेषु त्रीणि २ वचनानि प्रथममध्यमोत्तमसञ्ज्ञानि भवन्ति । एक-द्वि-बह्वर्थः पुरुषः । ति एकवचन[म्], तस् द्विवचन[म्], अन्ति बहुवचन[म्] । एवं सर्वत्र त्रिकेषु ज्ञेयम् ।

ति तस् अन्ति प्रथमपुरुषः । सि थस् थ मध्यमपुरुषः । मि वस् मस् इति उत्तमपुरुषः । एवं आत्मनेपदेऽपि । एवं सर्वत्र ।

आत्मने त्रिषु विज्ञेयं भावे कर्त्तरि कर्मणि ।
परस्मै कर्त्तरि भवेद् न भावे न च कर्मणि ॥

इति कर्तरि परस्मैपदं आत्मनेपदं च । परस्मैपदिनि धातौ परस्मैपदम् । आत्मनेपदिनि आत्मनेपदम् । उभयपदिन्युभयपदम् ।

यथा - शिष्यः शास्त्रं पठति, अधीते च । चैत्रः कटं करोति, कुरुते च ।

एवं त्रिविधो धातुः । भावकर्म्मणोः पुनरात्मनेपदमेव ।

अथ प्रत्येकं विभक्तिप्राप्तिमाह -

करइ लियइ दियइ इत्यादौ वर्त्तमाना ।

वि० स्मेनातीते । दहति स्म त्रिपुरं हरः । भविष्यत्काले यावत्-पुरानिपातयोर्लट् वर्त्तमाना इत्यर्थः । यावद् भुङ्क्ते ततो व्रजति । अधीष्व माणवक पुरा विद्योतते विद्युत् ॥

कीजइ दीजइ लीजइ इत्यादौ वक्रोक्तौ कर्मणि वर्त्तमानाया आत्मनेपदम् ।
करिजे लेजे देजे इत्यादौ एकारान्तवचने सप्तमी ।

करि लइ दइ इत्यादौ अनुमति पञ्चमी । विशेषः समर्थनाशिषोश्च । परैरशक्यस्य वस्तुनोऽध्यवसायः समर्थना । अहं पर्वतमुत्पाटयामि । समुद्रमपि शोषयामि । इति । इष्टार्थस्याशंसनमाशीः । जीवतु भवान् । नन्दतु भवान् ।

क्रियासमभिहारे सर्वकालेषु मध्यमैकवचनं पञ्चम्याः ।
क्रियासमभिहारः पौनःपुण्यं (न्यं) भृशार्थो वा ॥
यथा माघमहाकाव्ये यो रावणः —

पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनं मुषाण रत्नानि हरामराङ्गनाः ।

अत्रातीते काले हि ।

कीजउ दीजउ लीजउ इत्यादौ कर्मण्यात्मनेपदं पञ्चम्याः ।
कीधउं दीधउं लीधउं इत्यादौ परोक्षा ह्यस्तन्यद्यतन्यौ च ।
कालि कीधउं इत्यादौ ह्यस्तन्येव । न परोक्षाद्यतन्यौ ।
आजु कीधउं इत्यादौ अद्यतनी । न परोक्षाह्यस्तन्यौ ।

म करि म लइ म दइ; म करिसि म लेसि म देसि इत्यादौ माशब्दयोगेऽद्यतनी । मास्मयोगे ह्यस्तनी च । चकारादद्यतन्यपि । माङ् योगे तु यथाप्राप्तं पञ्चमी भविष्यन्ती च ।

म कीधु म लीधु म दीधु इत्यादौ कर्मणि माशब्दयोगे अद्यतन्याः, मास्मयोगे ह्यस्तन्यद्यतन्योः । माङ्योगे तु पञ्चम्या आत्मनेपदम् ।

जइ करत जइ लेत जइ देत इत्यादौ क्रियातिपत्तिः ।

जइ कीजत लीजत दीजत इत्यादौ कर्म्मणि क्रियातिपत्तिरात्मनेपदम् ।

करिसिइ लेसि देसिइ इत्यादौ, नहीं करइ नहीं लियइ नहीं दियइ इत्यादौ च भविष्यन्ती ।

कीजिसिइ लीजिसिइ दीजिसिइ इत्यादौ, नहीं कीजइ नहीं लीजइ नहीं दीजइ इत्यादौ च कर्म्मणि भविष्यन्त्यात्मनेपदम् ।

कालि करिसइ इत्यादौ श्वस्तनी ।

शत्रु जिणिसइ वर्ष शतु जीविसइ इत्यादौ आशीर्युक्ते भविष्यति काले आशीः ।

अथ कृत्प्रत्ययप्राप्तिमाह — करतउ लेतउ देतउ इत्यादौ कर्त्तरि वर्त्तमाने शन्तृङ्-आनशौ । परस्मैपदिनि शन्तृङ् । आत्मनेपदिनि आनश् । उभयपदिनि द्वावपि ।

कीजतउ लीजतउ दीजतउ इत्यादौ कर्मण्यानश् ।
करणाहरु लेणाहरु देणाहरु इत्यादौ वर्त्तमाने वुण्-तृचौ ।
कीधउं दीधउं लीधउं इत्यादौ अतीते निष्ठा क्वसु-कानौ च ।

क्त-क्तवन्तौ निष्ठा । कर्मणि क्तः, कर्त्तरि क्तवन्तुः । 'गत्यर्थाकर्मक-श्लिष-शीङ्-स्थास-वस-जन-रुह-जीर्यतिभ्यश्च ।' इति कर्त्तरि क्तोऽपि । यथा—अयमागतः, आगतवानपि । तथा परस्मैपदिनि क्वन्सुः । आत्मनेपदिनि कानः । उभयपदिन्युभयपदम् ।

करीउ लेउ देउ इत्यादौ क्त्वा, करिवा लेवा देवा इत्यादौ तुम् कर्तुमित्यादि । क्वापि घञ् क्तिर्युटोऽपि । पाकाय पक्तये पचनाय याति—पक्तुं याति इत्यर्थः । 'तुमर्थाच्च भाववाचिनः' इति चतुर्थी ।

शक्ल-ज्ञायोगे क्त्वाप्रत्ययोक्तौ तुम् । करी जाणुं पढी सकउं—कर्त्तुं जानामि पठितुं शक्नोमि इति ।

करिवउं लेवउं देवउं इत्यादौ कर्म्मणि तव्यानीयौ । कर्त्तव्यं करणीयम् । क्वचित् क्यप्-घ्यणावपि । कृत्यं कार्यं चेति ।

करणाहरु लेणाहरु देणाहरु इत्यादौ भविष्यति काले तुमन्तात् काममनसौ, तुमो मलोपश्च । कर्तुकामः, कर्तुमनाः । तथास्य संहितौ शन्त्राणौ च । परस्मैपदिनि शन्तृङ्, आत्मनेपदिन्यान् । उभयपदिनि द्वावपि । करिष्यन् करिष्यमाणः । 'आन्मोऽन्त आने ।'

अकरणि अजणणि होइये इत्यादौ 'नञ्यन्याक्रोशे ।' अकरणिस्ते वृषल भूयात् ।

पाचणा भाजणा इत्यादौ कलिमः कर्मकर्त्तरीष्यते । भिदेलिमा माषाः । पचेलिमास्तण्डुलाः । इति कृत्प्रत्ययाः ॥

अथ विशेषप्रत्ययप्राप्तिमाह—उपमाने इव-वती । राजेव राजवत् । आचारेऽर्थे तृतीयोऽपि । 'उपमानादाचारे ।' इति कर्म्मणो यिन् । पुत्रमिवाचरति पुत्रवदाचरति पुत्रीयति माणवकम् । आचारादपि स्यात् । कुट्यामिवाचरति कुटीयति प्रासादे । 'कर्तुरायिः सलोपश्च ।' हंस इवाचरति हंसवदाचरति हंसायते । आयि लोपे तु हंसति च । 'धातोर्वा तुमन्तादिच्छतिनैककर्तृकात् ।' इति सन् । कर्तुमिच्छति चिकीर्षति । 'नाम्न आत्मेच्छायां यिन् ।' 'काम्य च ।' पुत्रमिच्छति पुत्रीयति पुत्रकाम्यति । 'धातोर्यशब्दश्चेक्रीयितं क्रियासमभिहारे ।' इति व्यञ्जनादेरेकस्वराद् धातोर्यः प्रत्ययः । भृशं पुनःपुनर्वा पचति पापच्यते । 'वालुक् चेक्रीयितस्येति ।' पापक्ति पापचीति । एवं सर्वत्र । प्रायो द्वितीयारक्ष(क्षर ?)स्यावर्णके सति इन् ।

कराइव कराविवउं करावसिइ करावतउ करावी कराविवा इत्यादौ इनन्तात् तथोदितप्रत्ययाः स्युः । ग्रन्थाग्रं ११० ॥

॥ इति ठ० संग्रामसिंहविरचितायां बालशिक्षायां उक्तिप्रक्रमः षष्ठः ॥ ६ ॥

*

[सप्तमः संस्कारप्रक्रमः ।]

आजु अद्य ।
कालि कल्ये ।
परम परेद्यवि ।
अरीरम अपरेद्युः, अन्यस्मिन्नहनि, अन्येद्युः ।
आजूणउं अद्यतनम् ।
काल्हूणउं कल्यतनम् ।
हिवडां इदानीम्, अधुना, संप्रति, सांप्रतम् ।
हिवडानुं आधुनिकम्, सांप्रतीनम् ।
नहीत नो वा, नो चेत् ।
लिगइ प्रभृति, आरभ्य ।
पाखइ विना, ऋते ।
मुहियां मुधा ।
यिम यथा ।
तिम तथा ।
जांउं यावत्
तांउं तावत् ।
एकवार एकदा ।
सवइ वार सर्वदा, सदा ।
जहिंय यदा ।
तहिंय तदा, तदानीम् ।
कहिंय कदा ।
अनेरीवार अन्यदा ।
कीहां क्व, कुत्र ।
जीहां यत्र ।
तीहां तत्र ।
ईहां अत्र ।
अनेतइ अन्यत्र ।
सगलइ सर्वत्र ।
वलीउ व्यावृत्य, व्याघुट्य ।

तिमइं तत्कालम् ।
झटकइं झटिति ।
जूउ पृथक् ।
ताहरुं त्वदीयम्, भवदीयम् ।
माहरउं मदीयम् ।
तुह्मारउं युष्मदीयम् ।
अम्हारउं अस्मदीयम् ।
सरीषउ सदृशः ।
किसउ कीदृशः ।
जिसउ यादृशः ।
तिसउ तादृशः ।
इसउ ईदृशः ।
यसउ एतादृशः ।
अनेसउ अन्यादृशः ।
अम्हसरीषउ अस्मादृशः ।
तूसरीषउ त्वादृशः, भवादृशः ।
मूसरीषउ मादृशः ।
तुह्मसरीषउ युष्मादृशः ।
तेसि तर्हि ।
जेतलुं यावन्मात्रम् ।
तेतलुं तावन्मात्रम् ।
एतलुं एतावन्मात्रम्, इयन्मात्रम् ।
केतलुं कियन्मात्रम् ।
ऒरहु अर्वाक् ।
परहु परतः ।
पाषलि परितः ।
सवहिगमा समन्तात्, सर्वतः ।
बाहिरि बहिः, बाह्ये ।
धुरिलुं आदिमम् ।
छेहिलउं अन्तिमम् ।
एकपरि एकधा ।

बिहुपरि **द्विधा इत्यादि** ।
छहिंपरि **षोढा** ।
अनेकपरि **अनेकधा, बहुधा** ।
सवेहिपरि **सर्वथा** ।
जडपणउं **इत्यादौ त-त्वौ भावे यण्** ।
जडता जडत्वं जाड्यम् ।
ऑहुणउ **एषमः** ।
पुरु **पुरुत्** ।
उगमुगउ **अवाग्मूकः** ।
झडझांषसउं **चलध्वांक्षकम्** ।
ऊधंधलु **उद्धूलिकम्** ।
वरगड **वराघ(क?)र्षकः** ।
जानुत्र **यज्ञयात्रा** ।
जानावासउ **जन्यावासकः** ।
एकउडउ **एकतडिकः** ।
ओसीआलुं **अस्पृष्टालयम्** ।
घूंघठउ **अवगुंठनम्** ।
गवाणि **गवादिनी** ।
अउडक् **अपराख्या** ।
आहर जाहर **एहिरे याहिरे** ।
मसाहणी **महासाधनिक** ।
अउषंडली **अक्षपटलिक** ।
चांद्रिणुं **चंद्रिकालयम्** ।
धणीवउ **धन्यावयः** ।
छीडणि **छिद्राटिनी** ।
नीषणीयासु **निःक्षणकर्म्मा** ।
बलबलीउ **वाचालः, वाचाटः** ।
मेराईउ **मेराद्यकम्** ।
वादलुं **वारिदपटलम्** ।
अभोखउ **अभ्युक्षणम्** ।
उलकउ **उदकोदंचनम्** ।
पछोकउ **पश्चादोकः** ।
उपवासीउ **उपोषितः** ।

झामलुं **ध्यामलम्** ।
हियाविउं **हृदयार्पितम्** ।
दाणीं धणीं **ऋणितः** ।
हेवाउ **हेवाकः** ।
फुईहाईउ **पितृष्वस्रीयः** ।
मसिहाईउ **मातृष्वस्रीयः** ।
पाइआली **पादप्रहारिणी** ।
अरतउ परतउ बापसरीषउ **आकृत्या प्रकृत्या च पितृसदृशः** ।
अगीठउं **अग्निपीठकम्** ।
फूटरउं **स्फुटतरम्** ।
उघड दूघडउं **उद्घटदुर्घटकम्** ।
चीफाड **चित्तफा(स्फा?)टकः** ।
निलखणउ **निर्लक्षणः** ।
षा(खा)णउतुं **षा(खा)दनस्थानम्** ।
अहीणउं **अधेनुकम्** ।
उपरेथाई **उपरिस्थाई** ।
कमोठाणी **कर्मस्थाई** ।
अंधोमींची **अन्धमीलिका** ।
कांकसी **कचाकर्षणी** ।
ओलाणि **अवलंबिनी** ।
हथीयारु **हस्ताधार । गोलगवेला (?)** ।
रउडउ **रवाट (?)** ।
[क]ऊसीसउं **कपिशीर्षकम्** ।
मुखामुखि **मुखामुख्यता** ।
गोगीडउ **गोकीटः** ।
ओलउ **उपालयः** ।
निकउ **निष्कः** ।
कल्होडउ **कलभोत्कटः** ।
आलीगारु **आलीककारः** ।
वानयतउ **वर्णायत्तः** ।
राउलवायु **राजकुलायत्तः** ।
पाट्ठ **पादघातः** ।

दीहदीवी दिनदीपिका ।
भूराई भूतराजः ।
भंजवाडू भंगपातः ।
पडाई पताकिका ।
चाकचकूकवउं चक्रकुब्जम् ।
उंधूयायतुं ऊधूयमानम् ।
धुंबाधूंबि मुष्टामुष्टिः ।
वालालुंछि केशाकेशिः ।
पेलावेलि प्रेराप्रेरिः ।
वियारिउ विप्रतारिकः ।
छेतरिउ छलांतरितः ।
द्रडबडाहिउ द्रवकघातितः ।
जिगीसा जिघृष्याः(? क्षा) ।
पलद्धु प्रलुब्धः ।
अलजउ उत्कण्ठा ।
खाजहलउ खाद्यफलम् ।
पीजहलउ पेयफलम् ।
लिहाच्छोह लब्धस्थो(ब्धोत्सा?)ह ।
आकडउ उत्कटः ।
वाउलउ वार्त्तालयः ।
ऊजाणी उद्यानिका ।
कडअडउ काष्ठकठिनः ।
भोगल भुजार्गला ।
असराहिउं अश्रद्धेयम् ।
मेहरु मेहत्तरः ।
देषा(खा)विउ दृष्टापेक्षा ।
अउडीगउ अपमार्गगः ।
ऊचलउ अपरिचितः ।
फांटिउ पांक्तिकः ।
सासुहिउ सज्जितः ।
वरांसिउ विपर्यस्तः ।
पच्छाहियउं पश्चा[द्]हृदयम् ।

॥ इति संस्कारप्रक्रमे प्रथमस्तदक्षराधिकारः ॥

अथ क्रिया ।
राष(ख)इ रक्षति, गोपायति, पाति, त्राति, त्रायते, अवति च ।
आरंभइ आरभते ।
सांभरइ स्मरति चाध्येति च ।
बोलइ जल्पति, निगदति, वक्ति, वदति, भाषते, ब्रवीति, आह, ब्रूते ।
नासइ नश्यति, पलायते ।
जिणइ विजयते, जयति ।
जाणइ वेत्ति, जानाति, अवेति, अवगच्छति ।
बूझइ बुध्यते चापि ।
परिछइ परेरिमे ३ परीच्छति च ।
जिमइ भुंक्ते, अश्नाति च जेमति ।
खाअइ भक्षयति, अत्ति, खादति, ग्रसतेऽपि च ४ ।
अभ्यसइ मनति, अभ्यस्यति ।
भीष(ख)इ भिक्षति ।
थोभइ स्तोभति, स्तभ्नाति च ।
सीष(ख)इ सिक्ष्यते ५ ।
शीष(ख)वइ अनुशास्ति ।
विणसइ विनश्यति ।
विमासइ विमृशति ।
विचारइ विचारयति, ऊहते ६ ।
वेचइ व्ययति, व्येति ।
पडीगइ चिकित्सति, प्रतीकरोति ।
अच्छइ अस्ति,तिष्ठति,विद्यते,आस्ते७।

कहइ कथयति, आचष्टे, आख्याति, शंसति।

सोहइ शोभते, भाति, राजति-ते, चकास्ति च ८।

जाअइ गच्छति, याति, व्रजति, सरति, एति, अयति वा।

आवइ आङ्स्त्वेते। आङ्पूर्वा एते धातव आगमने वर्त्तन्ते। निःपूर्वा निःसरति।

नीकलइ निरस्तु।

ऊगइ उदस्तु ९।

आथमइ अस्तमस्तु।

त्रासइ त्रस्यति, त्रसति।

हालइ चालइ चलति।

त्रूटइ त्रुट्यति, त्रुटति १०।

पूजइ पूजयति, अर्चतीति इन् भवतीत्यर्थः। मीमांसते, अंचति।

स्तवइ नुवति, स्तौति, स्तुते, नौति, स्तवीति च ११।

आपइ अर्पयति।

वरसइ वर्षति।

नमस्करइ नमस्यति वा नमस्करोति।

आराधइ आराधयति, उपास्ते।

तपु करइ तपः करोति, तपस्यति वा।

कुसणइ कुष्णाति।

घसइ घर्षति।

मेटइ सभाजयति।

वीनवइ विज्ञपयति।

सेवइ भजति-ते, सेवते, श्रयति १३।

वापरइ व्यापृयते, व्यापृणोति।

परामइ प्राप्नोति।

नाहइ स्नाति।

भावइ प्रतिभासते १४। प्रतिभाति, रोचते वा।

वीष(ख)रइ विकिरति, विक्षपति।

सामरइ समः किरति।

पीठइ पिचयति।

परिणइ परिणयति १५।

उपयच्छते विवाहयति।

खंडुहालइ खर्जयति।

हींडोलइ आंदोलयति।

पूरइ सरइ अलं खलु च १६ पूर्यते।

निंदइ जुगुप्सते, निंदति, गर्हते।

बांधइ बध्नाति।

पडिवचइ प्रतिवक्ति तु १७।

बीहइ बिभेति।

बीहावइ भापयते, भीषयते।

उल्लींचइ उल्लंचति।

लाजइ जिहेति, लज्जते, त्रपते १८। व्रीड्यति।

फिरइ भ्राम्यति, भ्रमति।

अणभमइ अनुपूर्वो भ्रम। अनोस्तु।

सूंघइ सिंघति, जिघ्रति।

छाडइ उज्झति, जहाति, च त्यजति १९।

सांपडइ संपद्यते।

निरष(ख)इ निरीक्षते।

ऊपजइ उत्पद्यते।

परष(ख)इ परीक्षते २०।

नीपजइ निष्पद्यते।

उवेष(ख)इ उपेक्षते।

ऊभ्रंकइ उभ्रेकते।

पडीष(ख)इ प्रतीक्षते २१। प्रतिपालयति।

बुहारइ सन्मार्जयति।

बालइ ज्वालयति ।
बलइ ज्वलति ।
पीअइ पिबति ।
समारइ समारचयति ।
मुलइ मृदु लुनाति, मृदुलयति ।
विढइ विध्यति, कलहायते ।
व्यापइ अश्नुते, व्याप्नोति च ।
दीष(ख)इ दीक्ष्यते । २३ ।
वांछइ वांछति, कांक्षति ।
तूसइ तुष्यति ।
रूसइ रुष्यति ।
पूछइ पृच्छति ।
मूहइ मुह्यति ।
नाचइ नृत्यति ।
माचइ माद्यति । २४ ।
ऊगाइ उद्गायति ।
पीडइ पीडयति, बाधते, तुदति ।
दूमइ दुनोति, दुःखाकरोति, दुःखयति २४ ।
सुहाइ सुखादेयम् ।
सांभलइ निशाम्यति, शृणोति, आकर्णयति एषः ।
विगूपइ विगुप्यति २५ ।
नरनरइ नदति ।
थवइ स्थगयति ।
कडच्छइ कटिस्थयति ।
करडइ, काटइ कृंतति ।
लांषइ अस्यति, निरस्यति, क्षिपति २६ ।
नींखइ निर्निस्यति, निःक्षयति ।
धोअइ प्रक्षालयति ।
बीछलइ वेस्तु ।
घातइ निःक्षिपति, प्रक्षिपति ।
छउंटइ आक्षिपति । आङः ।
खरवलइ अपस्किरति । २८ ।
संधूखइ संधुक्षते ।
अमायइ अमायते ।
पुढइ प्रोढायते ।
चिणइ नुः स्वादेः चिनोति-ते ।
सांचइ संचिनुते, संचिनोति । समस्तु ।
चूंटइ अवचिनोति, अवात् ।
अउगनाइ अपकर्णयति ।
ऊजालइ उज्ज्वलयति ।
प्रास्रुइ प्रस्नुते ।
हुअइ भवति ३०, जायते ।
षू(खू)भइ क्षुभ्यते, क्षोभते ।
चूयइ श्चोतति-ते ।
ह्लादइ ह्लादते ।
गांठइ ग्रंथते ।
थीजइ स्त्यायते ।
भीजइ क्लिद्यते ।
ध्यायइ ध्यायति तु द्वयोः ।
ऊकलइ उत्कर्षति । वृद्धौ ।
वाधइ वर्द्धते ३२, एधते ।
ल्हइ पुंसयते ।
षी(खी)लइ कीलति ।
ऊमटइ उन्मज्जति, गग्घति ३३ ।
वींधइ विध्यति ।
पढइ अधीते, पठति च ।
मायइ माति, मिमीते ।
प्रसवइ सौति, प्रसवति, प्रसुवति, सूते ।
सूअइ निद्रायति वा शेते ३४, स्वपिति ।
नांगइ व्यंगयति, अनंगीकरोति ।
फेडइ अपनयति, स्फेटयति, अपास्यति ३५ ।

जुडइ युनक्ति, युंक्ते ।
उपयोगइ चेदुपात् ।
रुंधइ रुणद्धि, रुंद्धे ।
उपरुंधइ उपरुणद्धि उपात् । ३६ ।
फांकुरीइ फारस्फूर्जते हि ।
पसाअइ प्रसीदति, अनुगृह्णाति ।
ओढइ अवगुंठते, ३७ प्रावृणोति च ।
वणइ व्ययते वायतेऽपि च ।
पोअइ प्रवयति प्रात् वै ।
पेलइ नुदति, प्रेरयति अपि ३८ ।
आलिंगइ आलिंगति वा परिष्वजति ।
वाअइ वादयति ।
वलइ पश्चात् व्याघुटते वलते । ३९ ।
छायइ छादयत्योकः । स्तृणाति, स्तृणोति-ते ।
विस्तरइ विपूर्वो तु ।
विस्तारइ विस्तरति, विस्तारयति, तनोति-ते । ४० ।
लाडइ ललति ।
पंझेलइ परामृशति ।
बलअलइ बलाल्लूलति ।
धावइ धावति ।
मनावइ सांत्वयति ।
द्रउडइ द्रुताटति । ४१ ।
रमइ क्रीडति, दीव्यति, रमते ।
रोअइ रोदति, परिदेवयति ।
ढीलइ शिथिलयति ।
वमइ वमति ।
लेभइ (भेलइ ?) मिश्रयति ।
लहइ लभते । ४२ ।
झांषइ झषति ।
निउंजइ नियंत्रयति ।
बूडइ ब्रुडति, मज्जति ।
कुसइ कोशति ।
उनूआइ उत्क्नाति उनूति(?) । ४३ ।
कींगाइ केकायते ।
फिराइ स्पृहायते ।
षो(खो)डाअइ षं(खं)जायते ।
लुणइ लुनाति-ते । ४४ ।
आंबइ प्राप्नोति, घटति ।
आदरइ स्वीकरोति, आद्रियते, अंगीकरोति अंगीपूर्वकृतश्च ।
घटइ संभवति, घटते । ४५ ।
विहडइ विघटते । वेः ।
नीकोलइ निः कुलयति, कृश्च निः कुलापूर्व ।
सीझइ सिध्यति ।
सूझइ शुध्यति ।
मीचइ मीलति । ४६ । निमीलयति ।
उपरमइ उत्प्लवते, उत्पतति ।
अवहथइ अपहस्तयति ।
ऊजाइ उद्याति ।
स्पर्द्धइ स्पर्द्धते, भिषति ।
वासइ वास्यते ताम्रचूडी ।
मानइ मन्यते ।
वरइ वरयति एषः; वृणाति, वृणोति-ते । ४७ ।
कुंथइ कुथति, कुश्नाति ।
मथइ मथ्नाति, मथति ।
कुरलावइ क्वणयति ।
अलझइ अलमुज्झति ४९ ।
ढांकइ प्रच्छादयति, पिधत्ते, पिदधाति च । ५० ।
पहिरइ परिदधाति, संवस्त्रयति ।
प्रसीजइ प्रस्विद्यति ।
छेदइ छेदयत्ययम्; छिन्ते, छिनत्ति ।

तीमइ तेमयति, क्लेदयति।
पडइ पतति।
अडवडइ अधःपूर्वः पतः।
सिणमिणइ शनैर्मिनोत्यब्दः।
वसवसइ बहुस्यन्दति भूः।
कुरमाइ म्लायति, क्लाम्यति।
हकारइ आकारयति, आह्वयत्यपि।
प्रहुइ प्रभृज्जति।
छणइ क्षणोति।
पइसइ प्रविशति।
ऑंजइ उदंजयति।
आसुरडइ आश्वर्दते।
आंजइ अंजयति वा अनक्ति। ५४।
ऊघडइ उन्मीलयति, उद्घटते।
फीटइ स्फिटते।
सूकइ शुष्कति, शुष्यति।
पतइ समर्थयति वा समापतति।५५।
लूसइ लूषयति।
दमइ दाम्यति।
हीयापइ हृदयार्पति।
ताछइ छोलइ तक्षति, कार्श्यति, तक्ष्णोति च।
कुहइ कथति। ५६।
धूंदइ धूंटइ क्षुन्ते क्षुणत्ति च।
विसाहइ विसाधयति, क्रीणाति, क्रीणीते।
सीदाअइ सीदति। ५७।
ऊगटइ उद्वर्त्तयत्येषः।
लंबइ लंबते।
ऊलंबइ उत्पूर्वः।
साहइ अवलंबते। ५८।
भेदइ भिनत्ति, भिन्ते।

सरवइ निस्यन्दते, स्रवति।
वाटइ तु लेढि लीढे।
वीआरइ विप्रतारइ(य?)ति ५९।
ऊलटावइ, उन्मार्गयति।
धूजइ कंपते।
ध्राअइ तृप्यति, ध्रायत्यपि।
खीजइ खिद्यते ६०, ताम्यति।
विहंचइ विभजति।
पडहडइ किल खट्टपतति।
पालटइ परावर्तयति। परेर्वा।
हडहडइ हठाद्धसति ६१।
ताणइ काढइ कर्षति, कृषते-ति च।
टलवलइ टलद्वलति।
गांगिरइ गांगिरति, गांगृणाति वा।
गलअलइ गलद्गलति ६२।
द्रंफोडइ द्रुतं स्फोटयति।
झूझइ युध्यति।
धंघोलइ द्रुतं धूनयति।
वींटइ वेष्टते ६३।
ऊवेढइ उदः।
समेटइ समः।
परीसइ परिवेषयति, परीप्साति।
षा(खा)सइ कासते ६४।
वीसमइ विश्राम्यति।
पराकइ परे परः (?)।
नीसमइ नेः।
चडइ चटति, आरोहति द्विपं ६५।
धूंणइ धूंनयत्येषः; धुनाति धुनाते धुनोति-ते धुनते धुवति।
अउलवइ अपलपति, अपह्नुते ६६।
मोकलइ मुत्कलति विसृजति प्रहिणोति।

कलकलइ कलंकणति ।
सामुहइ सज्जति, समहति ।
ऋणऋणइ रणध्वनति ६७ ।
ताजइ तर्जति ।
मांजइ मार्ष्टि ।
डसइ दशति ।
गाजइ गर्ज्जति ।
गायइ गायति ।
हुणइ जुहोति ।
गूचइ गुंचति ।
करइ करोति ६८ कुरुते, विदधाति विधत्ते ।
धरइ दधाति च दधति, धत्ते धारयति ।
दिअइ यच्छति, दत्ते, राति ददाति ।
लिअइ आदत्ते ६९ । गृह्णाति विग्रहइ(य?)ति, वेः ।
ऊडइ ऊड्डीयते अथ उड्डयते ।
आचमइ आचमति ।
पवित्रइ पवित्रयति पुनाति पवते ।
ऊणइ ७० उदः पूर्वा ।
धूपइ धूपायति ।
क्षिरइ क्षरति ।
वीकइ विक्रीणते ।
मरदइ मृद्नाति ।
मलइ मलते वा ।
ऊघडइ उद्घटयति ।
अडइ अड्डति ।
छूटइ छुटति ।
ऊठइ उत्तिष्ठति
नीठइ निः ।
किरगिरइ किलगिलति ।

वघारइ व्याजिघ्रति वासयति ।
वखाणइ व्याख्याति व्याख्यानयति ।
वावइ वपति - ते च ७३ ।
छिवइ छुपते, स्पृशति च ।
चोरइ मुष्णाति, चोरयति ।
ऊखेलइ उत्कीलयति ।
दंभइ दंभ्नोति ।
सकइ शक्नोति ७४ ।
परवारइ प्रपारयति ।
वारइ निवारयति, निषेधयति ।
पल्हालइ पर्याद्रयति ।
लेअइ प्रापयति, नयति ७५ ।
पालुअइ पल्लवयति ।
थाहरइ स्थानमाहरति स्थानयति ।
पचारइ प्रत्युचारयति ।
फूटइ स्फटति ७६ ।
पतीजइ तु प्रत्येति प्रत्ययति प्रतीयते ।
वरांसीयइ विपर्यस्यति ।
जामइ जायते ।
षा(खा)जूअइ कंडूयति - ते ।
ओलंभइ उपालभते ।
उद्धंढइ उद्बन्धयति ।
क्रमइ क्रामति ७७ ।
आयसइ आदिशति
वाढइ वर्द्धयतीत्ययम् ।
निवीजइ निर्विंद्यति ।
लोढइ लूटयत्ययम् ७८ ।
सहइ क्षमते तितिक्षते सहते क्षाम्यते मृष्यते - ति च ।
मरइ म्रियते विपद्यते ।
कुपइ क्रुध्यति कुप्यति ईर्ष्यति ७९ ।
आषु(खु)डइ अवस्खलति ।

फडफडइ पटपटायते ध्वजा ।
शपइ शपति तु शप्यति ।
कडकडइ कटकटायते चक्षुः ८० ।
ऊकदइ उत्कूर्दते ।
कुदकुअइ कुत्परः ।
सन्यसइ संन्यस्यति ।
रंजइ रंजयत्ययम् ८१ ।
वीछोहइ विरहयति ।
द्रमद्रमइ द्रमद्रमति ।
तडफडइ तटत्पटति ।
त्रडत्रडइ तृटत्तृटति । ८२ ।
झासवइ तर्ज्जयति ।
पु(खु)सइ गोपायते लीयते ।
विलीजवइ वेः ।
ऊदेगइ उद्वेजयति ।
हींडइ विचरति हिंडते चलति ८४ ।
देखइ पश्यति ।
जोअइ अवलोकते वीक्ष्यते अवलोकयति ।
लोटइ लुठ्यति लोटति ।
नाथइ नाथति, वृषं तु नस्तयति ८५ ।
घ्रुसइ ध्वंसते ।
पाठवइ प्रस्थापयत्ययम् । प्रहिणोति प्रेषयति ।
षो(खो)त्रइ क्षतयत्यसौ ८६ ।
पोसइ पुष्यति पुष्णाति ।
पुहुचइ प्रभवति ।
ससइ श्वसति ।
नीससइ नेस्तु ।
वीससइ वेस्तु, विश्रंभते ।
फडइ फटति ८७ ।
ऊपडइ उदः ।
चोपडइ अभ्यंगयत्ययम् ।

ऊवटइ उद्वर्त्तते ।
नीमटइ निवर्त्तते ८८ ।
वर्त्तइ वर्त्तते ।
आवइ आङः ।
करांप(ख)इ क्रंदति ।
गूंथइ ग्रंथयति ग्रथ्नाति गुंफति ८९ ।
झंपावइ झंपयति झंपामाप्नोति ।
डोहइ गाहते ।
अट्ठआलइ अवात् ।
मांकइ मंकते ९० ।
गाजइ गर्जति ।
भांजइ भनक्ति ।
वाअइ वाति ।
विहाइ विभाति ।
सीवइ सीव्यति ।
पीसइ पिनष्टि ।
घोसइ घोषयति ।
हणइ हिनस्ति ९१, हंति व्यापादयति एषः ।
मारइ मारयति ।
आभिडइ आभ्यटति ।
पलचइ प्रलुच्यति ९२ ।
ऊभूआइ उद्भवति ।
गिलगिलावइ किलगिलापयति ।
चांपइ संवाहयति ।
हिणहिणइ हेषायते ।
वमइ वमति ९३ ।
बइसइ उपविशयति निषीदति ।
ऊलखइ उपलक्षयति ।
ओहटइ अपसरति विरमति ।
संझोरइ विसर्जयति ९४ ।
मोकलावइ मुत्कलापयति आपृच्छते अपि च ।

गंधाअइ गन्धायते गन्धयति ९५ ।
पछूच्छइ प्रतिपृच्छति ।
षिसइ स्रंसते ।
ओठंभइ अवष्टभ्नाति अवष्टंभति अव-
ष्टंभते अपि च ।
सांखइ संख्याति ।
पलाणइ पर्याणयति ।
सूजइ स्वयति ।
सूजवइ शोफयति ।
दूषइ दुष्यति ।
दोहइ दोग्धि दुग्धे च ९७ ।
वाटइ वर्त्तयति ।
परतइ परेः ।
ष(ख)डष(ख)डइ खटत्करोति ।
उपगरइ उपात् कृ उपकरोति ।
निराकरइ निराङः निराकरोति ।
फरकइ स्फुरति ९८ ।
व्राहइ व्याहरति ।
रहइ तिष्ठति रहति ।
भडहडइ कृ भटतः भटत्करोति ।
हेठुडइ कृ अधस अधःकरोति ।
छेकइ छेत्तः कृ छेत्करोति ।
छींकइ छीतः, क्षौति ।
धडहडइ कृ घटतः ९९ ।

हाकइ हातः ।
फूंकइ फूतः ।
जांकइ जातः ।
चूकइ चूतः ।
पूकइ पूतः ।
थूंकइ थूतः ष्ठीवति ।
चींकइ चीतः कृ १०० ।
मेल्हइ मुंचति ।
छांटइ सिंचति ।
लोपइ लुंपति ।
लींपइ लिंपति ।
मागइ याचते वा ।
घूमइ घूर्णते वा ।
धाअइ धावति - ते च मुचादिषु ।

अथ कर्मकर्तरि–

रावइ रच्यते ।
पाचइ पच्यते ।
वाजइ वाद्यते ।
दाझइ दह्यते ।
खाजइ खाद्यते ।
घासइ घृष्यते १०२ ।
जणाइ ज्ञायते
फाटइ विदीर्यते ।
कराइ क्रियते ।
लुणाअइ लूयते । १०३ ।

॥ इति संस्कारप्रक्रमे द्वितीयः क्रियाधिकारः ॥

हेताविनन्ताः सर्वेऽपि त्व(स्वा ?)र्थपाटवहेतवे ।
क्वचित् स्वार्थेऽपि कृति वा यथानकत्यंजयत्यपि ॥

तथा– उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते ।
विहाराहारनीहारप्रतीहारप्रहारवत् ॥

इत्थं शब्दक्रियोक्तिरन्याप्यूह्या ॥ ग्रंथाग्रं १६६ ।

॥ इति ठ० संग्रामसिंहविरचितायां बालशिक्षायां संस्कारप्रक्रमः ॥

*

भ्वादयो धातवस्तेभ्यः पराः स्युस्त्यादयो दश ।
विभक्तयोऽथ तद्योगे क्रियानिष्पत्तिरुच्यते ॥ १ ॥

विभक्तयो यथा-

वर्तमाना-ति तस् अन्ति,
सि थस् थ,
मि वस् मस् ।
ते आते अन्ते,
से आथे ध्वे,
ए वहे महे । १ ।

सप्तमी-यात् याताम् युस्,
यास् यातम् यात,
याम् याव याम ।
ईत् ईयाताम् ईरन्,
ईथास् ईयाथाम् ईध्वम्,
ईय ईवहि ईमहि । २ ।

पञ्चमी-तु ताम् अन्तु,
हि तम् त,
आनि आव आम ।
ताम् आताम् अन्ताम्,
स्व आथाम् ध्वम्,
ऐ आवहै आमहै । ३ ।

ह्यस्तनी-दि ताम् अन्,
सि तम् त,
अम् व म ।
त आताम् अन्त,
थास् आथाम् ध्वम्,
इ वहि महि । ४ ।

एवम्-एवमेवाद्यतनी । ५ ।

परोक्षा-अट् अतुस् उस्,
थल् अथुस् अ,
अट् व म ।
ए आते इरे,
से आथे ध्वे,
ए वहे महे । ६ ।

श्वस्तनी-ता तारौ तारस्,
तासि तास्थस् तास्थ,
तास्मि तास्वस् तास्मस् ।
ता तारौ तारस्,
तासे तासाथे ताध्वे,
ताहे तास्वहे तास्महे । ७ ।

आशीः-यात् यास्ताम् यासुस्,
यास् यास्तम् यास्त,
यासम् यास्व यास्म ।
सीष्ट सीयास्ताम् सीरन्,
सीष्ठास् सीयास्थाम् सीध्वम्,
सीय सीवहि सीमहि । ८ ।

भविष्यन्ती-स्यति स्यतस् स्यन्ति,
स्यसि स्यथस् स्यथ,
स्यामि स्यावस् स्यामस् ।
स्यते स्येते स्यन्ते,
स्यसे स्येथे स्यध्वे,
स्ये स्यावहे स्यामहे । ९ ।

क्रियातिपत्तिः-स्यत् स्यताम् स्यन्,
स्यस् स्यतम् स्यत,
स्यम् स्याव स्याम ।
स्यत स्येताम् स्यन्त
स्यथास् स्येथाम् स्यध्वम्,
स्ये स्यावहि स्यामहि । १० ।

एवं वचन १८० ।

अतः ति सि मि, आनि आव आम, ऐ आवहै आमहै ।......(१)
दिस्यमोऽट्टद्वितयं थल् च सिजाशिरवावटोऽनिटाम् ।
नाम्युपधावर्णान्तधातूनामात्मने नतु ।
स्य स्व (ह्य श्व?) स्तन्यौ च विज्ञेयं गुणित्वमियतां बुधैः ॥ २॥

अ १, आ २, इ ३, ई ४, उ ५, ऊ ६, ऋ ७, लृ ८, ए ९, ओ १०, टु ११, डु १२, ष १३, इर् १४, ङ १५, ञ १६, ञि १७ एते धात्वनुबन्धाः । एषां फलं यथा—

अ । अकारस्त्रिधा उदात्तानुदात्तसमाहारभेदात् । उच्चैरुदात्तः, परस्मैपदार्थः । नीचैरनुदात्तः, आत्मनेपदार्थः । समवृत्त्या समाहारः, उभयपदार्थः । १ ।

आ । 'आदनुबन्धाच्च ।' इति निष्ठायामिट्प्रतिषेधार्थः । 'भावादिकर्मणोर्वा ।' २ ।

इ । 'अनिदनुबन्धानाम् ।' इत्यत्र वर्जनादेव नागमार्थः । ३ ।

ई । 'न डीश्वीदनुबन्धवेटामपतिनिष्कुषोः ।' इति निष्ठायामिट्प्रतिषेधार्थः । ४ ।

उ । 'उदनुबन्धपूङ्क्लिशां क्त्वि ।' इति वेडागमार्थः । ५ ।

ऊ । 'स्वरतिसूतिसूयत्यूदनुबन्धात् ।' इत्यसार्वधातुके वेडागमार्थः । ६ ।

ऋ । 'न शास्वृदनुबन्धानाम् ।' इती निचण्परे ह्रस्वप्रतिषेधार्थः । ७ ।

लृ । 'पुषादिद्युतादिलृकारानुबन्धार्त्तिसर्त्तिशास्तिभ्यश्च परस्मै ।' इत्यद्यतन्यामणर्थः । ८ ।

ए । 'व्यञ्जनादीनां सेटामनेदनुबन्धह्मयन्तक्षणश्वसां वा ।' इति अद्यतन्यां पाक्षिकदीर्घप्रतिषेधार्थः । ९ ।

ओ । 'ल्वाद्योदनुबन्धाच्च ।' इति निष्ठातकारस्य नत्वार्थः । १० ।

टु । 'ट्वनुबन्धादथुः ।' ११ ।

डु । 'ड्वनुबन्धात् त्रिमक् तेन निर्वृत्ते । १२ ।

ष । 'षानुबन्धभिदादिभ्यस्त्वङ् ।' १३ ।

इर् । 'इरनुबन्धाद्वा ।' इत्यद्यतन्यां परस्मै अणर्थः । १४ ।

ङ । 'कर्त्तरि रुचादिङानुबन्धेभ्यः ।' इत्यात्मनेपदार्थः । १५ ।

ञ । 'इन् ञयुजादेरुभयम् ।' इत्युभयपदार्थः । १६ ।

ञि । 'ञ्यनुबन्धमतिबुद्धिपूजार्थेभ्यः क्तः ।' इति वर्त्तमाने क्तार्थः । १७

अथ गणबद्धधातूनां फलम् । भ्वादौ 'पुषादि - द्युतादि०' इत्यादिना अद्यतन्यामण् । 'अतो वृतादि ।' वृतादेरिट् । 'न स्ये स्यनी'त्यत्र श्लोके फलम् ।

घटादि षानुबन्ध १४ । 'षानुबन्धभिदादिभ्यस्त्वङ् ।'

घटादि मानुबन्ध ७९ । 'घटादयो मानुबन्धा अन्वाख्याताः ।' 'हेता-विनि ।' 'मानुबन्धानां ह्रस्वः ।' 'इचि वा ।'

ज्वलादि ३० । 'वा ज्वलादि दुनीभुवो णः ।'

यजादि ९ । 'स्वपिवचियजादीनां यण् परोक्षाशीःषु ।' इति संप्रसारणम् ।

तुदादौ भ्रादि १३ । 'तुदभ्रादिभ्य ईकारे ।' इति वा निलोपः ।

रुदादि ५ । 'रुदादेः सार्वधातुके ।' इत्ययव्यञ्जने इट् ।

जक्षादि ६ । 'जक्षादिश्च ।' इत्यभ्यस्तसञ्ज्ञा ।

जुहोत्यादि २४ । 'जुहोत्यादीनां सार्वधातुके ।' इति द्विर्वचनम् ।

दिवादौ रधादि ८ । 'रधादिभ्यश्च ।' इत्यसार्वधातुके वेट् ।

अतो मुहादि ५ । 'मुहादीनां वा ।' इत्यन्तस्य विरामव्यञ्जने गत्वं डत्वं च ।

शमादि ८ । 'शमादीनां दीर्घो यनि ।'

पुषादि ६४ । 'पुषादी'त्यादिना अद्यतन्यामण् ।

षूङ् प्राणिप्रसवे इति स्वादि ओदनुबन्ध ९ । 'ल्वाद्योदनुबन्धाच्च ।' इति निष्ठातकारस्य नत्वम् ।

तुदादौ मुचादि ८ । 'मुचादेरागमो नकारः । स्वरादनि विकरणे ।'

तृन्फादि ८ । 'तृन्फादीनां शुन्फान्तानां अनि न च लुप्यते ।' इति नलोपाभावः ।

कुटादि ३५ । 'कुटादेरनिनिचट्सु ।' इति इन् इच् अट् वर्जं अगुणत्वम् ।

क्र्यादौ प्वादि २२ । 'विकरणे प्वादीनां ह्रस्वः ।'

अतो ल्वादि २१ । 'ल्वाद्योदनुबन्धाच्च ।' इति निष्ठातकारस्य नत्वम् ।

एवं गणबद्धधातूनां अनुबन्धिनां च फलं प्रतिधातु ज्ञेयम् ।

पञ्चविधा धातवः - ह्रस्वोपधाः १, दीर्घोपधाः २, व्यञ्जनोपधाः ३, आदिस्वराः ४, स्वरान्ताश्च ५ । षष्ठा नामधातवः ६ ।

तत्र ह्रस्वोपधेषु अकारोपधाः । यथा पठ् ।

वर्त्तमाना - पठति । पठतः । पठन्ति ।

पठसि । पठथः । पठथ ।
पठामि । पठावः । पठामः ।
पठ्यते । पठ्येते । पठ्यन्ते ।
पठ्यसे । पठ्येथे । पठ्यध्वे ।
पठ्ये । पठ्यावहे । पठ्यामहे ।

सप्तमी – पठेत् । पठेताम् । पठेयुः ।
पठेः । पठेतम् । पठेत ।
पठेयम् । पठेव । पठेम ।
पठ्येत् । पठ्येयाताम् । पठ्येरन् ।
पठ्येथाः । पठ्येयाथाम् । पठ्येध्वम् ।
पठ्येय । पठ्येवहि । पठ्येमहि ।

पञ्चमी – पठतु । पठताम् । पठन्तु ।
पठ । पठतम् । पठत ।
पठानि । पठाव । पठाम ।
पठ्यताम् । पठ्येताम् । पठ्यन्ताम् ।
पठ्यस्व । पठ्येथाम् । पठ्यध्वम् ।
पठ्यै । पठ्यावहै । पठ्यामहै ।

ह्यस्तनी – अपठत् । अपठताम् । अपठन् ।
अपठः । अपठतम् । अपठत ।
अपठम् अपठाव । अपठाम ।
अपठ्यत । अपठ्येताम् । अपठ्यन्त ।
अपठ्यथाः । अपठ्येथाम् । अपठ्यध्वम् ।
अपठ्ये । अपठ्यावहि । अपठ्यामहि ।

अद्यतनी – अपाठीत् । अपाठिष्टाम् । अपाठिषुः ।
अपाठीः । अपाठिष्टम् । अपाठिष्ट ।
अपाठिषम् । अपाठिष्व । अपाठिष्म ।
अपठीत् । अपठिष्टाम् । अपठिषुः ।
अपठीः । अपठिष्टम् । अपठिष्ट ।
अपठिषम् । अपठिष्व । अपठिष्म ।

'व्यञ्जनादीनां सेटा'मित्यादिना पक्षे वा दीर्घः । तेन अपाठीत् इत्याद्यपि स्यात् ।

अपाठि । अपठिषाताम् । अपठिषत ।
अपठिष्ठाः । अपठिषाताम् । अपठिध्वम् ।

अपठिषि। अपठिष्वहि। अपठिष्महि।

'न मा-मास्मयोगे' इत्यडभावे मा भवान् पठीत्।

परोक्षा - पपाठ। पेठतुः। पेठुः।

पेठिथ। पेठथुः। पेठुः।

अटि उत्तमे वा पपाठ। पपठ। पेठिव। पेठिम।

पेठे। पेठाते। पेठिरे।

पेठिषे। पेठाथे। पेठिध्वे।

पेठे। पेठिवहे। पेठिमहे।

श्वस्तनी - पठिता। पठितारौ। पठितारः। इत्यादि।

आशीः - पठ्यात्। पठिषीष्ट। इत्यादि।

भविष्यन्ती - [पठिष्यति] इत्यादि।

क्रियातिपत्तिः - अपठिष्यत्। इत्यादि।

'कन्सुकानौ परोक्षावच।' परस्मैपदि आत्मनेपदि सार्वधातुकवत्।

शन्तृङानशौ तोत्वेऽनुगच्छतः। पेठिवानसौ। अनेन पेठानम्। पठन्नसौ पठ्यमानमनेन। पठित्वा। पठितः। पठितवान्। पिपठिषति। पिपठिषांचकार। पिपठिषामास। पिपठिषांबभूव। अपिपठिषीत्। पिपठिषिता।

कर्मणि - पिपठिष्यते। अपिपठिषि। 'चेक्रीयितान्तात्।' इत्यात्मनेपदम्। 'पापठ्योभयस्याननि।' इति व्यञ्जनाद् यलोपे पापठांचक्रे। पापठामासे। पापठांबभूवे।

'असभुवौ च परस्मै।' इति कर्तरि परस्मैपदं चातिदिश्यते। पापठामास। पापठांबभूव। इत्यपि। अपापठिष्टाः। पापठिता।

कर्मणि - पापठ्यते। 'प्रत्ययलुकां चानाम्।' इति प्राप्त्यभावे अपापठि। पापठिषति। 'वालुक् चेक्रीयितस्य।' इति तल्लुकि अदादित्वं परस्मैपदं च। 'चर्करी ताद्धतिकावित्' इति सार्वधातुके गुणिनि व्यञ्जने ईट् च। पापठीति। अघोषे प्रथमः। तवर्गस्य षटवर्गाट् टवर्गः। पापट्टि पापट्टः। पापठन्ति। 'व्यञ्जनाद्दिस्योः।' इति सिलोपः। अपापट्,०पड्। अपापट्टाम्। अपापठुः। अपापठीत्। हेत्विनन्तादुभयपदम्। पाठयति - ०यते। पाठयांचकार। पाठयामास। पाठयांबभूव। अपीपठत्। पाठयिता।

कर्मणि - पाठ्यते। अपाठि। अपाठयिषाताम्।

स्यसिजाशीःश्वस्तनीषु भावकर्मार्थकासु च ।
स्वरहनग्रहदृशामिड् वेज्वच्चेति वक्तव्यम् ॥

अपाठिषातामित्याद्यपि । पाठयिष्यते । पाठिष्यते । पाठितः । पिपाठयिषतीत्यादि ।

अथ विशेषाः । 'द्वितीयचतुर्थयोः प्रथमतृतीयौ हो जः ।' 'कवर्गस्य चवर्गः ।' इत्यभ्यासस्यादेशाः सार्वत्रिकाः । तदभ्यासस्यादेशिनां संयोगादीनां च परोक्षायां न एत्वं अभ्यासलोपश्च । यथा - गदति । जगाद । जगदतुः; जगदुः । 'अत्तीर्ण् घसैकस्वरान्तामिड्वन्सावि'त्यभ्यासेन अनेकस्वरान्नेट् । जगद्वान् , जगदानम् ।

संयोगादयो यथा - ध्वज । ध्वजति । अभ्यासस्यादिव्यञ्जनमवशेष्यं अनादिलोपनीयमित्यर्थः । दध्वाज । ध्वाजयति । अदिध्वजत् । संयोगे पूर्वस्य गुरुत्वात् 'दीर्घोऽलघोरि'ति न दीर्घः ।

शसु प्लुतगतौ, शसु हिंसायाम् । शसति । 'न शसददवादिगुणिनामि'ति प्रतिषेधात् विशशंस । विशशंसतुः । विशशंसुः । उदनुबन्धस्य तु - शस्त्वा, शसित्वा, शस्तः ।

वद स्थैर्ये । वदति । ववाद । वादीनामपि प्रतिषेधात् , ववदतुः, ववदुः । 'वदव्रजरलन्तानां वे'ति नित्यं दीर्घः । अवादीत् । वद्यते । वदितम् । अयजादित्वात् संप्रसारणाभावः ।

व्रज, व्रजति । अव्राजीत् ।

चर्, चरति । अचारीत् । चूर्त्तिः । चञ्चूर्यते । व्यञ्जनाभावे उरोऽप्यभावः । 'अभ्यस्तस्य चोपधाया नामिनः स्वरे गुणिनि सार्वधातुके' इति गुणाभावे चञ्चुरीति । चञ्चोर्त्ति । चञ्चूर्त्तः । चञ्चुरति । रुचादौ उदः सकर्मकश्चर् । रुचादित्वात् आत्मनेपदम् । कुटुम्बमुचरते, उत्क्रम्य गच्छतीत्यर्थः । समस्तृतीयायुक्तः । रथेन सञ्चरते ।

दल ञिफला विशरणे । फल निष्पत्तौ । फलति । पफाल । 'तृफलभजत्रपश्रन्थिग्रन्थिदम्भीनां चे'ति फेलतुः । फेलुः । अफालीत् । पम्फुल्यते । आदनुबन्धस्य तु - अनुपसर्गात् फुल्लक्षीवकृशोल्लाघाः । फुल्लः । फुल्लवान् । भावे फुल्लमनेन, फलितमनेन । आदिकर्मणि क्तः । प्रफुल्लः । प्रफुलितः । कथमुत्फुल्लः सम्फुल्लः? फुल्ल विकसने इत्यचा सिद्धम् ।

ज्वर, ज्वरति । ज्वरयति । 'ज्वलह्मलनमोऽनुपसर्गा वा ।' ज्वलयति, ज्वालयति । उपसर्गे तु प्रज्वलयति ।

लड-लड(ल)योरैक्यम् । लडति । ललति । ललयति जिह्वाम् । जिह्वोन्मन्थनादन्यत्र लालयति बालम् ।

भण्, भणति । 'अतोऽन्तोऽनुस्वारोऽनुनासिकान्तस्ये'ति बम्भण्यते । 'भ्राजभ्रासभाषदीपजीवमीलपीडकणरणवणभणश्रणहठे लुपां चे'ति अबीभणत् । अबभाणत् ।

कनी, कनति । कान्तः । 'पञ्चमोपधाया धुटि चागुण' इति दीर्घः ।

चम् छम् । चमति । 'ष्ठिवु क्लम् वाचमामनी'ति आचामति । मन्तत्वाद् न पाक्षिको दीर्घः । अचमीत् । चान्त्वा, चमित्वा । चान्तः । घटादिपठितत्वादमन्तानां मानुबन्धत्वं सिद्धमेव । इह तु 'न कम्यमचम' इति प्रतिषेधात् चामयति । छमति । 'न सेटोऽमन्तस्यावमिकमिचमामि'ति न दीर्घः । अच्छमि । छमयति । एवं जमुझमुप्रभृतयः सेटोऽमन्ताः ।

क्रमु, 'क्रमः परस्मै' इत्यनि दीर्घः । क्रामति । 'भ्रासुम्लासभ्रमुक्रमुक्लमुत्रसित्रुटिलषियसिसंयसिभ्यश्च वा' । इति क्रम्यति । क्रमिता । क्रम्यते । अक्रमि । क्रमिष्यते । क्रमेः क्त्वाप्रत्यये वा । क्रन्त्वा, क्रान्त्वा क्रमित्वा । क्रान्तः । चिक्रमिषति । गत्यर्थात् कौटिल्य एव, भृशं पुनः पुनर्वा कुटिलं क्रामति । चङ्क्रम्यते । चङ्क्रमीति । चङ्क्रन्ति । 'पञ्चमोपधाया धुटि वा गुणे इति दीर्घे चङ्क्रान्तः । चङ्क्रमति । रुचादौ वृत्त्युत्साहतायनेषु क्रमः । वृत्तिरप्रतिषेधः । उत्साहश्चेतसिको धर्मः । तायनं स्फीतता । प्राज्ञस्य क्रमते बुद्धिः, न प्रतिहन्यते इत्यर्थः । अध्ययनाय क्रमते, उत्सहते इत्यर्थः । नीतिमति श्रियः क्रमन्ते, स्फीता भवन्तीत्यर्थः । एष्वेवार्थेषु उपसर्गेभ्यश्चेत् परोपाभ्यामेव । रुचादौ आङो ज्योतिरुद्गमे । ज्योतिषां ग्रहनक्षत्रादीनां उद्गमने इत्यर्थः । गगनमाक्रमते रविः, उद्गच्छतीत्यर्थः । वेः पादाभ्यां द्विवचनस्यातन्त्र्यात्पादैरपि । साधु विक्रमते हंसः, सुष्ठु विक्रमतेऽश्वः । प्रोपाभ्यामारम्भे - प्रक्रमते, उपक्रमते भोक्तुम्, आरभत इत्यर्थः । अनुपसर्गे वा । क्रामति, क्रमते । 'सुक्रमिभ्यां परस्मै ।' इति परस्मैपदिन एवेट् । प्राक्रंस्त, प्रक्रन्ता । प्रचिक्रंसते । क्रमयति । लघुपूर्वोऽप्यपि सङ्क्रमय्य ।

रमु, रमते । 'व्याङ्परिभ्यो रमः परस्मैपदम् ।' विरमति इत्यादि । सकर्मकादपि देवदत्तमुपरमति ।

नित्यात्वतां स्वरान्तानां सृजिदृशोस्य वेट् थलि ।

तृचि नित्यानिटः स्फु(?)श्चेत् वेटां नित्यमिट् थलि ।

विरेमिथ । विररंथ । यमिरमिनम्यादन्तानां सिरन्तश्च । व्यरंसीत् । व्यरंसिष्टाम् । व्यरंसिषुः । अरंस्त । अरंसाताम् । अरंसत । रन्ता । वनति तनोत्यादिप्रतिषिद्धेट्टाम् । 'घुटि पञ्चमोऽचातः' इति पञ्चमलोपः, आतश्च, अच । रत्वा, रमित्वा । वा मः । विरम्य, विरत्य । रतः । रंरमीति । रंरन्ति । रंरन्तः ।

यम्, यच्छति । अयंसीत् । यन्ता । रुचा० आङो यमहनौ स्वाङ्गकर्मकौ च । अकर्मकात् आयच्छते, स्वाङ्गकर्म्मकाच्च आयच्छते पादम् । उद्वाहे उपयम । उपयच्छते कन्याम्, विवाहयतीत्यर्थः ।

हनेः सिच्यात्मने दृष्टः सूचनेऽर्थे यमेरपि ।
विवाहे तु विभाषैव सिजाशिषोर्गमेस्तथा ॥

उदायत । उपायत । उपायंस्त । यमयति । परिवेषणे तु यामयति ।

णम्, नमति । अनंसीत् । नन्ता । नत्वा, प्रणम्य, प्रणत्य । नतः । रुचा०स्तु नमी । स्वयं नमते दण्डः, स्वयमेव नमयति, नामयति । उपसर्गे तु उन्नमयति ।

गम्लृ, गच्छति । जगाम । 'गमहनजनखनघसामुपधायाः स्वरादावनन्यगुणे ।' इत्युपधालोपे जग्मतुः । जग्मुः । जगमिथ । जगन्थ । अगमत् । गन्ता । गमिष्यति । गम्यते । अगामि । गंस्यते । 'गमहनविदविशदृशां वे'ति क्वन्सौ वेट् । जग्मिवान् । जगन्वान् । जग्मानः । गत्वा, आगम्य, आगत्य । गतः । जिगमिषति । जङ्गम्यते । जङ्गमीति । जङ्गन्ति । जङ्गन्तः । जङ्गमति । रुचा० समोऽकर्म्मकः । सङ्गच्छते । 'सेगमः परस्मै ।' इति परस्मैपदिन एवेट् । 'सिजाशिषोर्गमस्त च' इति वा पञ्चमलोपः । समगत । समगंस्त । सङ्गंस्यते । सञ्जिगांसते । गमयति । रुचा० गमिन् क्षान्तौ आद एव । क्षान्तिरिह प्रतीक्षा । मामागमयस्व, प्रतीक्षस्वेत्यर्थः ।

जप्, जपति । जपिवमिभ्यां वा । जप्तः, जपितः । 'जपादीनां च ।' इत्यनुस्वारः । जञ्जप्यते । जप जभ भज दह पश दंश षडेते जपादयः ।

हसे, हसति । जहास । अहसीत् । एदनुबन्धत्वाद् न पाक्षिको दीर्घः ।

लगे, लगति । लग्नं सक्तम्, लगितमन्यत् । लगयति ।

फण, फणति । पफाण । 'जॄभ्रमत्रसस्वनफणस्यमां वे'ति फेणतुः । पफणतुः । फणयति । गतेरन्यत्र फाणयति फाण्टम् ।

स्यम, स्वन, ध्वन शब्दे । स्यमति । सस्याम । स्येमतुः । सस्यमतुः । स्यन्त्वा, स्यमित्वा । 'स्वपिस्यमिवेञां चेक्रीयते ।'इति सम्प्रसारणं सेसिम्यते ।

'वेश्वस्वनेर्भोजने।' इति षत्वं विष्वणति। अवष्वणति। स्वनति। सस्वान। स्वेनतुः। सस्वनतुः। स्वान्तं मनः, स्वनितमन्यत्। ध्वनति। दध्वान। ध्वेनतुः। दध्वनतुः। ध्वान्तं तमः,ध्वनितमन्यत्। ध्वनयति। शब्दादन्यत्र ध्वानयति।

चल्, चलति। चलयति शाखाम्, कम्पादन्यत्र चालयति।

पत्लृ, पतति। पित्सति। वञ्चिश्रंसिध्वंसिभ्रंसिकसिपतिपदिस्कंदामंतो नी। पनीपत्यते। पनीपत्ति। पतितः। सनि वेट्त्वान्निष्ठायामनिट्यपि। 'अपतिनिष्कुषोः।' इति वर्जनात् इट्।

डुवमु, वमति। वान्त्वा, वमित्वा। वान्तः, वमितः। 'ग्लास्नावनुवमश्च।' वमयति, वामयति। उपसर्गे तु उद्वमयति।

तप्, सन्तापे। तपति। व्यञ्जनान्तानामित्यधिकारात् अस्य च दीर्घः। अताप्सीत्। 'धुटश्च धुटी'ति सिचलोपे अताप्ताम्। अताप्सुः। अताप्सीः। अताप्तम्। अताप्त। अताप्सम्। अताप्स्व। अताप्स्म। अतापि। अतप्साताम्। अतप्सत। अतप्थाः। अतप्साथाम्। अतब्ध्वम्। अतप्सि। अतप्स्वहि। अतप्स्महि। तप्ता। रु० विउञ्भ्यां तपः। अकर्मकात् वितपते। उत्तपते। स्वाङ्गकर्मकाच्च वितपते पाणिम्, उत्तपते पादम्, सन्तापयतीत्यर्थः। तपेस्तपः कर्मकात्, कर्त्तरि यण्। तप्यते तपस्तापसः। अनोस्तु न स्यात्। अनुतपते तपस्तापसः। अनोस्तपेरिति चेत् अन्वतप्त तापसेन। ऐश्वर्येऽर्थे विकल्पेन दिवादित्वाद् यत्वं आत्मनेपदं च। तप्यते, तपति। तप ऐश्वर्ये। वेति दैवादिकेन। तातप्यते। तातपिता। अनेकस्वरत्वादिट् अस्त्येव।

दह्, दहति। तृतीयादेर्घढधभान्तस्य धातोरादिचतुर्थत्वं सध्वोः, दादेर्घः। अधाक्षीत्। अदाग्धाम्। अधाक्षुः। अधाक्षीः। अदाग्धम्। अदाग्ध। अधाक्षम्। अधाक्ष्व। अधाक्ष्म। अदाहि। अधक्षाताम्। अधक्षत। अदग्धाः। अधक्षाथाम्। अधग्ध्वम्। अधक्षि। अधक्ष्वहि। अधक्ष्महि। दग्धा। धक्ष्यति। दिधक्षति। दन्दह्यते। दन्दग्धि। अदन्दक्।

यभ्, यभति। अयाप्सीत्। अयाब्धाम्। अयाप्सुः। यब्धा।

त्यज्, त्यजति। अत्याक्षीत्। त्यक्ता।

षद्लृ, सीदति। सदेरप्रतेरिति षत्वम्। निषीदति। प्रसीदति न षत्वम्। 'दाद्दस्य चे'ति नत्वे निषन्नः।

शद्लृ, रुचा०शदेरनि। शीयते। शत्ता। शदेरगतौ तः। गाः शादयति, ग्रामं गमयतीत्यर्थः। गतेरन्यत्र फलानि शातयति।

वद्, वदति । 'स्वपिवचियजादीनां यण् परोक्षाशीःष्वि'ति अगुणे सम्प्रसारणम् । उवाद । ऊदतुः । ऊदुः । उवदिथ । अवादीत् । उद्यात् । उद्यते । वदिषीष्ट । उदित्वा । उदितम् । रु० ज्ञानयत्नोपच्छन्दनेषु वदः । ज्ञाने—वदते पतञ्जलिर्व्याकरणे । यत्ने—क्षेत्रे वदते । उपच्छन्दने—कर्मकरानुपवदते प्रलो(?)पत इत्यर्थः । अनोरकर्मकः । अनुवदते कठः कलापस्य । अनुशब्दः सादृश्ये पश्चादर्थे वा । यथा कलापो वदति तथा कठ इत्यर्थः । अथवा कलापस्य पश्चात् कठो वदति इत्यर्थः । विमतौ—विविधा नानाविधा मतिर्विमतिः । गेहे विवदन्ते, विमतिपतिता विचित्रं भाषन्त इत्यर्थः । व्यक्तं सहोक्तौ । सम्प्रवदन्ते ग्राम्याः, व्यक्ताक्षरं युगपद्वदन्तीत्यर्थः ।

वस्, वसति । उवास । ऊषतुः । ऊषुः । उवसिथ । उवत्थ । सस्य सेऽसार्वधातुके तः । अवात्सीत् । अवात्ताम् । अवात्सुः । वस्ता । वत्स्यति । उष्यात् । उष्यते । वत्सीष्ट । उषित्वा । उषितम् ।

इति परस्मैपदिनः ।

यती, यतते । यतेते । यतन्ते । अयतिष्ट । यत्यते । अयाति । यत्तः ।

दद, ददते । ददन्ते ।

हद्, हदते । अहत्त । हत्ता ।

पच, व्यक्ती [करणे] । पचते । पक्ता ।

त्रपू, त्रपते । त्रेपे । त्रप्ता । त्रपिता । त्रप्तः ।

जभ, 'रधिजभोः स्वरे ।' इति नकारागमः । जम्भते । जजम्भे । जम्भिता । जञ्जभ्यते । जम्भयति ।

पण्, गुपूधूपविच्छिपणिपनेरायः । पणायते । पणायाञ्चक्रे । पेणे । आयादयो असार्वधातुके वा । एवं पन च ।

कमु, कामयते । कमेरिनङ्कारितं च । असार्वधातुके वा । चकमे । कामयामास । अचकमत । अचीकमत् । कमिता । कामयिता । कान्त्वा । कमित्वा । कामयित्वा । कान्तः, कमितः । काम्यते । कामयति । अचीकमत् ।

दय्, दयते । दयाञ्चक्रे ।

बधू, बन्धने । बीभत्सते । निन्दायामेव सन् । अन्यत्र बधते । बधिता ।

रभ्, आरभते । आरेभे । आरब्ध । आरप्साताम् । आरप्सत । आरब्धा । आरप्स्यते । सनि मिमीमादारभलभशकपतपदामिः स्वरस्य । आरिप्सते । आरम्भि । आरम्भयति ।

एवं लभ् । किन्त्वनुपसर्गात् लभेः 'इचि वा' इति नुरागमः । अलम्भि । अलाभि ।

घट चेष्टायाम् । घटते । घटयति । अघटि । अघाटि ।

व्यथ् । व्यथते । 'व्यथेश्चे'ति परोक्षायामभ्यासस्येति सम्प्रसारणे विव्यथे । व्यथयति ।

स्वद् । स्वदते । स्वदयति । अवस्वदयति । परिस्वदयति । नान्योपसर्गान्मानुबन्धत्वम्, 'स्वदिरवपरिभ्यामेवे'ति नियमात् । केवलस्य तु मानुबन्धत्वमेव ।

ञि त्वरा । त्वरते । 'वा रुष्यमत्वरसङ्घुषास्वनामि'ति वेट् । तूर्णः, त्वरितः । त्वरयति । अत्वरादीनां च । अतत्वरत् । त्वर स्मृ दृ प्रथ म्रद स्तृ स्पश एते त्वरादयः ।

षह् सहने । असहिष्ट । 'वेषुसहलुभरुषरिषां ती'ति वेट् । सोढा । सहिता । सहिष्यते । 'दाश्वान् साह्वान् मीढ्वांश्चे'ति वसौ साह्वान् । सोढ्वा । सहित्वा । सोढः । सासह्यते । सासोढि । सासक्षि । चुरादौ यौजादिकेन विकल्पे नन्तत्वात् साहयति । सहति कलत्रेभ्यः परिभवम् । इत्यात्मनेपदिनः ।

खन् । खनति-°ते । चखान । चख्नतुः । चख्नुः । चखनिथ । 'घुटि खनिसनिजनामि'ति नस्यात्वे । खात्वा, खनित्वा । ये वा । प्रखाय, प्रखन्य । चाखायते । चङ्खन्यते । खातः ।

डु पचष् पाके । पचति-°ते । पपाच । पेचिथ । पपक्थ । अपाक्षीत् । अपाक्ताम् । अपाक्षुः । अपक्त । अपक्षाताम् । अपक्षत । पक्ता । क्षैशुषिपचामक वा । पक्वम् । पक्त्रिमम् ।

भज् । भजति-°ते । बभाज । भेजे । भक्ता ।

शप् । शपति-°ते । दैवादिके शप्यति-°ते । शप्ता । रुचा० शपथे । शप्तः । शपथो मिथ्यानिरासनम् । छात्राय शपते कुमारी । छात्रं प्रति निजव्यलिकं निरस्यतीत्यर्थः ।

यज् । यजति-°ते । इयाज । ईजतुः । ईजुः । इयजिथ । इयष्ठ । भृजादीनां षः । अयाक्षीत् । यष्टा । यक्ष्यति । इज्यात् । इज्यते । यक्षीष्ट । इष्ट्वा । इष्टः ।

डु वप् । वपति । उवाप । ऊपतुः । ऊपुः । उवपिथ । उवप्थ । वप्ता । उप्यात् । उप्यते । उप्त्वा । वपित्वा । उप्तम् ।

वह् । वहति-°ते । उवाह । ऊहतुः । ऊहुः । उवहिथ । उवोढ । अवाक्षीत् । अवोढाम् । अवाक्षुः । अवोढ । अवक्षाताम् । अवक्षत । अवोढाः । अवक्षाथाम् । अवोढ्वम् । वोढा । वक्ष्यति । उह्यते । ऊढा । ऊढः । वावह्यते । वावोढि । वावोढः । गणकृतमनित्यम् । प्रवहति, परस्मैपदमेव । इत्युभयपदिनः ।

अदादौ – अदादेर्लुग्विकरणस्य । षस् स्वप्ने । सस्ति । हुधुड्भ्यां हेर्धिः । सद्धि । सस्य ह्यस्तन्यां दौ तः । असत् । सौ वा असत्, असः ।

वश् । वष्टि । ग्रहिज्येत्यादिना गुणे सम्प्रसारणम् । उष्टः । उशन्ति । वक्षि । उष्ठः । उष्ठ । हौ उड्ढि । अवट् । औष्टाम् । ऊशन् । उवाश । ऊशतुः । ऊशुः । उवशिथ । उश्यते । वावश्यते ।

हन् । हन्ति । 'धुटि हन्ते सार्वधातुके' इत्यन्तलोपः । हतः । घ्नन्ति । हौ जहि आशिषि तुह्योः । हतात् । ह्यस्तन्यां दिस्योः । अहन् । जघान । जघ्नतुः । जघ्नुः । जघनिथ । जघन्थ । हन्तेर्वधिराशिषि । वध्यात् । अद्यतन्यां अवधीत् । वधेरिदन्तनिर्देशात् वा दीर्घो न स्यात् । हन्ता । हनिष्यति । रुचा० आङो यमहनस्वाङ्गकर्मकौ च । अकर्मकात् आहते । आघ्नाते । आघ्नते । स्वाङ्गकर्मकाच्च आहते उरः । स्यसिजाशीरित्यादौ पाठबलादेव आत्मनेपदे वाऽवधिः । 'हनेः सिच्यात्मने दृष्टः' इति नलोपे आहत । आहसाताम् । आहसत । आवधिष्ट । आवधिषाताम् । आवधिषत । हन्यते । अघानि । अहसाताम् । 'स्यसिजाशीरि'त्यादिना अघानिषाताम् । इत्यादि । अवधि, अवधिषातामित्याद्यपि । हंसीष्ट । घानिषीष्ट । वधिषीष्ट । हन्ता । घानिता । हनिष्यते । घानिष्यते । जघ्निवान् । जघन्वान् । जघ्नानः । शतृङिः घ्नन् । हत्वा, प्रहत्य । हतः । जिघांसति । 'हन्तेर्घ्नी वा' जेघ्नीयते जङ्घन्यते । जेघ्नयीति । जेघ्नेति । जङ्घनीति । जङ्घन्ति । धुटि अगुणे नलोपः, जघतः । घातयति ।

वच । वक्ति । वक्तः । वचन्ति । वक्षि । हौ वग्धि । ह्यस्त०दिस्योः अवक्-०ग् । ब्रुवो वचिः, स चोभयपदी । उवाच । ऊचतुः । ऊचुः । उवचिथ । उवक्थ । ऊचे । अणि वचेरोदुपधायाः । अवोचत् । उच्यते । वक्षीष्ट । वक्ता । उच्यते । वावच्यते । ऊचिवान् । ऊचानः । अनुपूर्वाद् वचेः कानः कर्त्तव्ये एव अनूचानः । उक्त्वा । उक्तः ।

ञि ष्वप् । 'रुदादेः सार्वधातुके' इत्ययव्यञ्जने इट् । स्वपिति । स्वपितः । स्वपन्ति । ह्य०दिस्योरीट् । अस्वपीत् । अस्वपीः । रुदादिभ्यश्च ईट् । दिस्योः वचनादीः । पक्षे 'रुदादेरपीति केचित्' इत्यट् । अस्वपत् । अस्वपः । सुष्वाप । सुषुपतुः । सुषुपुः । सुष्वपिथ । सुष्वप्थ । स्वप्ता । सुप्यात् । सुषुप्सति

सोपुप्यते। सासोप्ति। अत्र इडागमाभावहेतुः रुदधातौ द्रष्टव्यः। सुप्त्वा। सुप्तः। स्वापयति। असूषुपत्। सुष्वापयिषति। घञन्तादिनि असुषुपत्। सिष्वापयिषति।

श्वस्। सार्वधातुके पूर्ववत्, किन्तु 'स्वसेर्वे'ति सप्तम्यां विकरणस्य लुगभावे विश्वसेदित्यपि। अश्वसीत्। श्वसितः। व्याङ्भ्यां वा विश्वस्तः। विश्वसितः।

भस्। बभस्ति। बभस्तः। बभसति। अबभत्। अबभस्ताम्। अबभसुः। अत्र उः सिजभ्यस्तविदादिभ्योऽभुवः।

धन्। दधन्ति। दधन्तः। दधनति।

जन् जनने। जजन्ति। कश्चित् धुटि खनिसनिजनामिति नस्यात्वे जजाति। जजन्तः। जज्ञति। 'ईड् जनोः स्ध्वे च' इति इट्। जज्ञनिषि। जजान। जज्ञतुः। जज्ञुः। जजनिथ। इति परस्मैपदिनः।

वस् आच्छादने। वस्ते। वसाते। वसते। वत्से। वसिता। वसित्वा। इत्यात्मनेपदी।

दिवादौ – दिवादेर्यन्। क्नस्। क्नस्यति। क्नस्येत्। ह्यौ क्नस्य। क्नसयति।

त्रसी। त्रस्यति। त्रसति। तत्रास। त्रेसतुः। तत्रसतुः।

व्यध्। अगुणे सन्ध्यक्षरे सम्प्रसारणम्। विध्यति। विव्याध। विविधतुः। विविधुः। विव्यत्थ। व्यद्धा। वेविध्यते। विद्धः।

रध हिंसायाम्। चकारात् संराधनेऽपि। रध्यति। स्वरे नागमः। ररन्धतुः। ररन्धुः। 'रधादिभ्यश्चे'त्यसार्वधातुके चेट्यपि। परोक्षायां क्सौ च। सृवृभृ इत्यादिनियमान्नित्यमिट्। ररन्धिव। ररन्धिम। कश्चित् रेध्व, रेध्म इति। पुषादित्वादण्। अरधत्। रद्धा। रधिता।

णश्। प्रणश्यति। अनशत्। मस्जिनशोर्धुटि नागमे नंष्टा, नशिता। नंक्ष्यति, नशिष्यति। नंष्ट्वा, नशित्वा। नष्टः।

शमु। शमादीनां दीर्घो यनि। शाम्यति। अशमत्। शान्त्वा, शमित्वा। शान्तः। एवं दमु तमु श्रमु भ्रमु क्षमु क्लमु। तत्रापि वि० – शमयति रागान्। दर्शने तु निशामयति रूपम्। दान्तशान्तपूर्णदस्तस्पष्टच्छन्नज्ञप्ताश्चेनन्ता इति निपातनात् शान्तः, शमितः।

दमयति। दान्तः। दमितः।

क्षमू। क्षाम्यति। भौवादिकोऽपि भ्रमिरस्ति। भ्रम्यति। भ्राम्यति। बभ्राम। भ्रेमतुः। बभ्रमतुः।

मदी । माद्यति । अमदत् । हर्षग्लपनयोर्मदि । मदयति मित्रम् । मदयति शत्रुम् । अन्यत्र मादयति मदिरा । इति परस्मैपदिनः ।

जनी । जाजनेर्विकरणे । जायते । जज्ञे । दीपजनबुधपूरितायिप्यायिभ्यो वेति । अजनि । अजनिष्ट । ये वा, जाजायते । जञ्जन्यते । जातः । अदादिकेन जनितः ।

पद् । पद्यते । अपादि । भावकर्म्मणोरप्येवम् । विपत्ताः, विपन्नः । पित्सते । पनीपद्यते ।

मन् । मन्यते । अमंस्त । मन्ता । मतः । इत्यात्मनेपदिनः ।

णह् । नह्यति–०ते । अनात्सीत् । नद्धा । इत्युभयपदी ।

स्वादौ – नु स्वादेः । शक्लृ । शक्नोति । शक्नुतः । शक्नुवन्ति । शक्ता । शक्ष्यति ।

तुदादौ – व्यच् । तुदादेरनील्यतोऽगुणित्वात् सं० । विचति । विव्याच । विविचतुः । विविचुः । कुटादित्वादिटोऽगुणित्वम् । विविचिथ । विचिता । वेविच्यते । इति परस्मैपदिनौ ।

तनादौ – तनादेरुः । तनोति । तनुतः । तन्वन्ति । उकारलोपो वमोर्वा । तन्वः, तनुवः । तन्मः, तनुमः । तनुते । तन्वाते । तन्वते । ह्रौ तनु । अतनिष्ट । तनादेस्तथासोः परयोरनिट्त्वं पञ्चमलोपश्च कश्चिदित्याह । तन्मते अतत । अतथाः । थास्सहचरितस्तकारोऽप्येकवचनस्यैव । तथा च श्रीमाघः –

"अवितथा वितथाः सखि मा गिरः ।"

तनोतेर्यणि वा । तायते, तन्यते । तत्वा, तनित्वा । वितत्य । ततः । तितनिषति, तितंसतीति । तितांसतीति वक्तव्यम् ।

षणु । सनोति । सनुते । असनिष्ट । पक्षे असत । असथाः । कश्चित् धुटि खनीत्यादिना नस्यात्वे, असात्त । असात्थाः । ये वा, सायते । सन्यते । सात्वा, सनित्वा । सातः । साति । सन्तिः । सतिः । सिषणिषति ।

क्षणु । क्षणोति । क्षणुते । अक्षणीत् । क्षत्वा, क्षणित्वा । क्षतम् । – इत्युभयपदिनः ।

वनु । वनुते । वान्त्वा (वत्वा ?) । वनित्वा । वान्तः, वतः । वनयति । वानयति । उपसर्गे तु उपवनयति ।

मनु । मनुते । मनिता । मत्वा, मनित्वा । मनितः । इत्यात्मनेपदिनौ ।

क्र्यादौ – ना क्र्यादेः। ग्रह्। गृह्णाति। गृहीतः। गृह्णन्ति। गृह्णीते। गृह्णाते। गृह्णते। आन व्यञ्जनान्ताद्धौ गृहाण। जग्राह। जगृहतुः। जगृहुः। जग्रहिथ। इटो दीर्घो ग्रहेरपरोक्षायाम्। अग्रहीत्। अग्रहीताम्। अग्रहीषुः। ग्रहीता। गृह्यते। अग्रहि। अग्रहीषाताम्। स्यसिजाशीत्यादिना अग्राहिषाताम् इत्यादि। ग्रहीता। ग्राहिता। जिघृक्षति। जरीगृह्यते। गृहीत्वा। गृहीतः।

खव्। छ्वोः शूटौ पञ्चमे च। अवर्णादूटो वृद्धिः। खौनाति। खौः। खावौ। खावः।

चुरादौ – चुरादेश्चेति स्वार्थे इन्। नट्। नाटयतीत्यादि पाठिवत्।

छद्। छादयति। छन्नः। छादितः।

क्षल्। क्षालयति। प्राचिक्षलत्।

ज्ञप मानुबन्धश्च। ज्ञपयति प्रभुम्। ज्ञापने चायमिहोच्यते। मारणादिष्वर्थेषु घटादित्वादपि सिद्धम्। विश्वाराजाधातौ द्रष्टव्यः।

यम च परिवेषणे। चकारेण मानुबन्धत्वमस्योत्तरस्य च धातोराकृष्यते। यमयति। परिवेषणादन्यत्र यामयति। ननु घटादौ यमोऽपरिवेषणे मानुबन्धत्वमुक्तं ततः कथं न विरोधः? सत्यम्। स्वार्थेऽत्र मानुबन्धत्वम्, तत्र च हेत्विति न दोषः।

चप्। चपयति। नाहेतावन्ये मानुबन्धाः। ज्ञपादीन् मुक्त्वा नान्ये धातवः स्वार्थे मानुबन्धाः। इति परस्मैपदिनः।

शम्। शामयते। हेत्विति। शमयति। इत्यात्मनेपदी।

चट स्फुट भेदे। चाटयति। स्फोटयति।

घट सङ्घाते। घाटयति।

हन्त्यर्थाच। एते त्रयोऽपि हन्त्यर्थाश्च सन्तश्चुरादौ भवन्ति। चाटयति, आस्फोटयति, घाटयति हन्तीत्यर्थः। अर्थान्तरे तु चटति, स्फुटति, घटते इत्यर्थः। कैश्चित् युजादिभ्यो विभाषया इन् इष्यते।

आङः षदः पद्यर्थे। आङः परोऽयं गत्यर्थे यजादिः स्यात्। आसादयति। आसीदति। आसात्सीत्। आङो अन्यत्र, सीदति।

तनु श्रद्धोपतापयोः। तानयति। तनति। तान्त्वा, तनित्वा। अन्यत्र तनोति, तनुते। उदनुबन्धत्वं पूर्वोक्तानामेव धातूनामर्थान्तरे चुरादित्वसूचनार्थम्।

वच सन्देशने । वाचयति । वचति । वक्तीत्यन्यत्र । इति परस्मैपदिनः ।

तप दाहे । तापयते । तपते । अन्यत्र तप्यते, तपति ।

वद भाषणे । वादयते, वदते । अन्यत्र वदति । इत्यात्मनेपदिनौ ।

॥ इत्यकारोपधाः ॥

अथ गुणोपधाः । ते च त्रिविधाः । इदुपधाः, उदुपधाः, ऋदुपधाश्चेति । एषां गुणिनि गुणः । इदुपधा यथा – चिट प्रैष्ये । चेटति । चिट्यते । चिचेट । चिचिटतुः । चिचिटुः । चिचेटिथ । चिचिटथुः । चिचिट । चिचेट । चिचिट । चिचिटिव । चिचिटिम । चिचिटे । अचेटीत् । अचेटिष्टाम् । अचेटिषुः । अचेटि । अचेटिषाताम् । अचेटिषत । चेटिता । चिचिट्वान् । चिचिटानः । चिटिता । 'गुणी क्त्वा सेडरुदादि – क्षुधकुशक्लिशगुधमृधमृडवदवसग्रहां व्यञ्जनादेर्व्युपधस्यावो वे'ति चिटित्वा, चेटित्वा । तत्रैव 'संश्चेति वक्तव्य'-मिति वचनात् चिचिटिषति, चिचेटिषति । चेचिट्यते । अभ्यस्तस्य चोपधाया नामिनः स्वरे गुणिनि सार्वधातुके इति गुणाभावे चेचिटीति । चेचेट्टि । चेचिट्टः । चेचिटति । चेटयति । अचीचिटत् ।

उदुपधा यथा – शुच् । शोचतीत्यादि पूर्ववत् । तथा भावादिकर्मणो-र्वोदुपधात् । शोचितमनेन, शुचितमनेन । प्रशोचितः, प्रशुचितः ।

ऋदुपधाः यथा – धृजु । धर्जतीत्यादि पूर्ववत् । धर्जित्वा, धृजित्वा । दिधर्जिषति । दरीधृज्यते । ऋदन्तोपधानां पूर्वस्य रक् रिक् रीक् । दर्धृजीति । दरिधृजीति । दरीधृजीति । दर्धर्क्ति । दरिधर्क्ति । दरीधर्क्ति । धर्जयतीति । पक्षे इनि चणि ऋवर्णस्य ऋत् । अदीधृजत् । अदधर्जत् ।

त्रयाणां वि० श्च्युतिर् क्षरणे । श्च्योतति । शिट्परोऽघोष इति शिट् लोपे चुश्च्योत । अश्च्युतत् । अश्च्योतीत् ।

षिधु गत्याम् । सेधति परिसेधति । अत्र 'सेधतेर्गता'विति वचनान्न षत्वम् । गतेरन्यत्र प्रतिषेधति पापात् । सिषेध । असेधीत् । सेधिता ।

षिधु संराद्धाविति पौषादिकस्य सिध्यति । असिधत् । सेद्धा, सिद्धा । सेधित्वा, सिधित्वा । सिद्धः ।

षिधू शास्त्रे माङ्गल्ये च । अर्थान्तरे पुनरुदनुबन्धपूर्वक एव । अन्यथा तत्त्यागे सोऽनर्थकः स्यात् । अर्थान्तरेऽप्यनेनैव विकल्पस्य सर्वथैव सिद्धत्वात् । सेधति । उदनुबन्धत्वादसार्वधातुकचेट्यपि 'स्वृभृस्तुद्रुस्रुव एव परोक्षायाम्' इति नियमान्नित्यमिट् । सिषिधिव । सिषिधिम । सेद्धा । सेधिता ।

लुट्। लोटति। अलोटीत्। पौषादिकस्य लुट्यति। अलुटत्।

स्फुटिर विशरणे। स्फोटति। अनेनैव कौटादिकेन स्फुटति। अस्फुटीत्। स्फुट विकसने इत्यस्य स्फोटते।

गुप्। गोपायति। जुगोप। गोपायाञ्चकार। गोप्ता। गोपिता। गोपायिता।

ञि क्ष्विदा अव्यक्ते शब्दे। क्ष्वेदति। ञि क्ष्विदा मोचने चेदिति दिवादिकेन क्ष्विद्यति। क्ष्विण्णः। क्ष्विण्णमनेन। क्ष्वेदितमनेन। 'शीङ्पूङ्धृषिक्ष्विदिमिदां निष्ठा सेट्' इति गुणः। कित्। चिकित्सति। चिकित्साञ्चकार। 'संशये च प्रतीकारे कितः सन्नभिधीयते।'

सृप्लृ। सर्पति। असृपत्। सर्प्ता। सिसृप्सति। सनि चानिटीतिनाम्युपधानामगुणत्वम्।

दृशिर्। पश्यति। ददर्शिथ। दद्रष्ठ। जृदृशोरणि गुणः, अदर्शत्। अद्राक्षीत्। अद्राष्टाम्। अद्राक्षुः। द्रष्टा। द्रक्ष्यति। रु० समोऽकर्मकः। सम्पश्यते। समदृष्ट। दृश्यते। अदर्शि। अदृक्षाताम्। स्यसिजाशीरित्यादिना अदर्शिषातामित्यादि। द्रक्ष्यते। दर्शिष्यते। ददृशिवान्। दृष्टः। सृदृशी च सनन्तौ तु रुचादाविति दिदृक्षते। दरीद्रष्टि। 'प्रकृतिग्रहणे चेक्रीयित लुगन्तस्यापि ग्रहणम्' इति सृजिदृशोरित्यादिना अकारागमः।

क्रुश्। क्रोशति। सणनिटः। सिडंतान्नाम्युपधादहशः। अक्रुक्षत्। क्रोष्टा। क्रोष्यति।

मिह्। मेहति। अमिक्षत्। मेढा। वंसौ, मीढ्वान्। मीढः।

रुह्। रोहति। अरुक्षत्। रोढा। रूढः। रोक्ष्यति। रोहयति। पक्षे रोहेः पो वा। रोपयति व्रीहीन्। स्वमते रुह्यर्थेऽपि रुप्यते रूपम्। इति परस्मैपदिनः।

भृजी। भर्जते। भृजः स्वरात् स्वरे द्विः। बभ्रज्जे। भृष्टः।

तिपृ। तेपते। तेप्ता। अतितेपत्।

तिज्। तितिक्षति। अतितिक्षिष्ट। क्षमायामेव सन्निष्यते। अन्यत्र तेजते। तेजयति चास्त्रम्।

ष्टुभ्। स्तोभते। उपसर्गात् सुनोति-सुवति-स्यति-स्तौति-स्तोभतीनामडभ्यासान्तरस्य षत्वम्। अभ्यष्टोभिष्ट। तुष्टुभे। स्तुब्धः।

गुप्। जुगुप्सते, निन्दायामेव सन्। अन्यत्र गोपते।

गुपू। गोपायति। गुप्यति। गुप व्याकुलत्वे इति पौषादिकेन।

द्युत शुभ रुच दीप्तौ। द्योतते। द्युतादीनां 'पुषादिद्युताद्ी'त्यादिपाठबलादद्यतन्यामुभयपदम्। अद्युतत्। अद्योतिष्ट। एवं द्युतादयः। तत्रापि वि० 'द्युतिस्वाप्योरभ्यासस्ये'ति सम्प्रसारणम्। दिद्युते। देद्युत्यते। शुभिरुचिभ्यां न स्यादित्यनयोश्चेक्रीयिताभावः।

ञि मिदा। मेदते। मेद्यति पौषादिकस्य। मिन्नः। प्रमिन्नः। प्रमेदितः।

ञि ष्विदा मोचने। स्वेदते। स्वेदिता। गात्रप्रक्षरणे पौषादिकेन स्विद्यति। स्वेत्ता। स्विन्नः। प्रस्विन्नः। प्रस्वेदितः।

क्षुभ्। क्षोभते। अक्षुभत्। अन्यत्र क्षुभ्यति। क्षुभ्नाति। अक्षोभीत्।

वृतु। वर्त्तते।

अद्यतन्यां द्युतादीनां, वृतादेः स्यसनोस्तथा।
आकृतिगणत्वादेव, श्वस्तन्यामुभयं कृपेः॥

तथा- अनात्मने पदस्थात्तु, वृतादेरिड् न स्ये सनि।
श्वस्तन्यां च कृपेर्नैव कृतादेर्वाऽपि सेऽसिचि॥

वर्त्स्यति। वर्त्तिष्यते। विवृत्सति। विवर्त्तिषते।

एवं वृधु स्वृधु। कृपू, कृपे रो लः। कल्पते। र......तेर्लश्रुतिरिति वचनात् चक्लृपे। कल्प्तासि। कल्प्तासे। कल्प्स्यति। कल्पिष्यति। चिक्लृप्सति। चिकल्पिषते। क्लृप्तः। इत्यात्मनेपदिनः।

गुहू। गोहेरूदुपधायाः। गूहति-०ते। जुगूह। जुगुहे। तृतीयादेर्घढधभान्तस्य धातोरादिचतुर्थत्वं सध्वोः। अघुक्षत्। दुह दिह लिह गुहामात्मनेपदे च तवर्गे वा सणेव। सणविकल्पितपक्षे सिजपि नास्तीति। अगूढ। अघुक्षत। अघुक्षाताम्। अघुक्षन्त। अगूढाः। अघुक्षथाः। अघुक्षाथाम्। अगूढ्वम्। अघुक्षध्वम्। अघुक्षि। अगुह्वहि। अघुक्षावहि। अघुक्षामहि। इट् पक्षे, अगूहीत्। अगूहिष्ट। गूढा। गूहिता। गूढः। जोगूढि। ह्य० दिस्योः-अजोघोट्।

त्विष्। त्वेषति-०ते। त्वेष्टा। इत्युभयपदिनौ।

अदादौ-विद ज्ञाने। वेत्ति। वित्तः। विदन्ति। वेत्सि। वित्थः। वित्थ। वेद्मि। विद्वः। विद्मः।

आहोब्रुवस्तु पञ्चानां, नवानां तु विदेस्तथा।
अडादयो निपात्यन्ते, लादीनां च यथाक्रमम्॥

वेद । विदतुः । विदुः । वेत्थ । विदथुः । विद । वेद । विद्व । विद्म । वेत्तु । विद्धि । वेदानि । विदं आमः कृञ् पञ्चम्यां वा, विदाङ्करोतु । विदाङ्करवाणि । अवेत् । अवित्ताम् । अविदन् । अविदुः । सौ पदान्ते रेफप्रकृत्योरपि वा दधोस्त्वं स्यात् । अवेः । अवेत् । विदाञ्चकार । विवेद । वेदिता । रु० समोऽकर्मकः । संवित्ते । संविदाते । वेत्तेर्वा वक्तव्यम् । संविद्रते, संविदते । वेत्तेः शन्तुर्वसुः, विद्वान्, विदन् । विदित्वा । विविदिषति ।

'रुदविदमुषां सनि' इत्यगुणित्वात् दिवादौ सत्तायां विद्यते ।

तुदादौ – विदॢ लाभे । विन्दति –०ते । कंसावस्य विविद्वान्, विविदिवान् । वित्तं द्रव्यम् ।

रुधादौ – विद विचारणे । विन्ते । त्रिभ्योऽपि वेत्ता ।

मृजू । मर्जः, मार्जिः । मार्ष्टि मृष्टः । अगुणे स्वरे वा, मृजन्ति मार्जन्ति । मार्क्षि । हौ मृग्धि । दिस्योः अमार्ट् । मार्जिता । मार्ष्टा ।

रुदिर् । 'रुदादेः सार्वधातुके' इत्ययव्यञ्जने इट् । रोदिति । रुदितः । रुदन्ति । ह्य० दिस्योरीट्, अरोदीत् । अरोदीः । रुदादेरपीति केचिदिलट्, अरोदत् । अरोदः । रुदित्वा । रुरुदिषति । रोरोत्ति । अरोरोत् । 'रुदादिः पञ्चको गणः' इति संख्योक्तत्वादिट् नास्ति । 'न स्त्यनुबन्धगसंख्यैकस्वरोक्तेषु' इति वचनात् । उक्तं च –

स्त्यनुबन्धगुणैरुक्तं संख्ययैकस्वरेण वा ।
चेक्रीयितलुगन्तानां नैतानि स्युः कदाचन ॥

कित ज्ञाने । चिकेत्ति । चिकित्तः । चिकिताति ।

तुर् । तुतोर्त्ति । तुतूर्त्तः । तुतुराति । ह्य० दिस्योः अतुतोः ।

धिष् । दिधेष्टि । अदिधेट् । इति परस्मैपदिनः ।

वृजी वृक्ते । वृजाते । वृजते । वृक्षे । रौधादिकस्य, वृणक्ति । अवृणक् । यौजादिकस्य वर्जयति, वर्जति ।

पृची । पृक्ते । रौधादिकस्य, पृणक्ति । अपृणक् । इत्यात्मनेपदिनौ ।

द्विष् । द्वेष्टि । द्विष्टे । अद्वेट् । अद्विष्टाम् । अद्विषन् । अद्विषुः । द्वेष्टा ।

दुह् । दोग्धि । दुग्धः । दुहन्ति । धोक्षि । दुग्धे, दुहाते । दुहते । धुक्षे । दुहाथे । धुग्ध्वे । हौ दुग्धि । ह्य० दिस्योः अधोक् –०ग् । अधुक्षत् । दुह दिह लिह गुहामात्मने पदे च तवर्गे वा सणेव । अदुग्ध । अधुक्षत । अधुक्षाताम् । अधुक्षन्त । अदुग्धाः । अधुक्षथाः । अधुक्षाथाम् । अदुग्ध्वम् । अधुक्षध्वम् ।

अधुक्षि । अदुह्वहि । अधुक्षावहि । अधुक्षामहि । दोग्धा । धोक्ष्यति । दुधुक्षति । दुग्धा । दुग्ध । रु० कर्मकर्तृस्थो दुहिः, दुग्धे गौः स्वयमेव । अद्यतन्यां वा, अदुग्ध, अदोहि वा गौः स्वयमेव ।

दिह् पूर्ववत् । रुचादित्वं तु न । लिह् । लेढि । लीढः । लिहन्ति । लेक्षि । लीढे । लिहाते । लिहते । लिक्षे । लिहाथे । लीढ्वे । ह्यौ लीढि । ह्य० दिस्योः, अलेट् । अलिक्षत् । अलीढ । अलिक्षत । अलिक्षाताम् । अलिक्षन्त । अलीढाः । अलिक्षथाः । अलिक्षाताम् । अलीढ्वम् । अलिक्षध्वम् । अलिक्षि । अलिह्वहि । अलिक्षावहि । अलिक्षामहि । लेढा । लेक्ष्यति । लीढः ।

णिजिर् । निजिविजिविषां गुणः सार्वधातुके । नेनेक्ति । नेनिक्तः । नेनिजानि । नेनिक्ते । ह्यौ नेनिग्धि । अनेनेक् । अनिजत् । अनैक्षीत् । व्यञ्जनान्तानामनिटामिति वृद्धिः । अनिक्त । नेक्ता ।

विजिर् एवम् ।

विषॢ । वेवेष्टि । वेविष्टे । ह्यौ वेविड्ढि । अवेवेट् । अविषत् । अविक्षत । वेष्टा । इत्युभयपदिनः ।

दिवादौ – दिव् । 'नामिनोर्वोरकुर्छुरोर्व्यञ्जने' इति दीर्घः, दीव्यति । दिदेविषति । दुद्यूषति । दिदिवान् । द्यूत्वा, देवित्वा । आद्यूनः । विजिगीषायां तु द्यूतं वर्त्तते । क्विपि द्यूः । देदीव्यते । देदिवीति । 'य्वोर्व्यञ्जने ये' इति लोपे देदेति । क्वोः शूटौ पञ्चमे च, चकारात् क्वौ धुट्यगुणे च वस्य ऊट्, देद्यूतः । देदिवति । एवमिदन्ताः ।

तत्रापि वि० श्रिवु । श्रीव्यति । श्रिव्यविमविज्वरित्वरामुपधया, क्वौ धुट्यगुणे पञ्चमे च उपधासमं वस्य ऊट्, श्रूश्रूतः ।

ष्ठिवु क्षिवु ष्ठिवु क्लम्वाचमामनीति ज्ञापकात् धात्वादेः षः सो न, ष्ठीव्यति । भ्वादि पाठाच्च ष्ठीवति क्षेवति ।

नृती गात्रविक्षेपे । नृत्यति । कृतादेर्वापि सेसिचीति वेट् । नर्त्स्यति । नर्त्तिष्यति । नृत्तम् ।

कुथ पूतिभावे । कुथ्यति । कुथ्नाति । कुथ संक्लेशे इति क्र्यादिपाठात्, थफान्तानां चानुषङ्गिणामित्यत्रानुषङ्गिणां व्यावृत्त्या व्युपधत्वेऽपि विकल्पो न स्यात्, कोथित्वा ।

पुष । पुष्यति । पुषादीनां त्यादिना अण्, अपुषत् । पोष्टा । पोक्ष्यति । अन्यत्र पोषति । पुष्णाति । अपोषीत् । पोषिता ।

शुष् । शुष्यति । शोष्टा । शुष्कः, क्षैशुषिपचां मकवाः ।

दुष् । दुष्यति । दोष्टा । दूषयति वा । चित्तविरागे – दोषयति दूषयति वा प्रज्ञाम् ।

श्लिष् । श्लिष्यति । बाह्वालिङ्गने सण्, अणोऽपवादः, आश्लिक्षत् कन्यां बटुः । बाह्वालिङ्गनादन्यत्र आश्लिषत् जतु काष्ठम् । आत्मने तु सिजेव, सणोऽपवादः, व्यत्यश्लिष्ट जतु काष्ठम् । इच् पुनः स्यादेव, आश्लेषि कन्या बटुना । चौरादिकादाश्लेषयति ।

क्षुध् । क्षुध्यति । क्षोद्धा । क्षुधिवसोश्च निष्ठायां चेतीट्, क्षुधित्वा । क्षुधितः ।

शुध् । शुध्यति । शोद्धा ।

दृप् । दृप्यति । स्पृश् मृश् कृषि तृपि दृपिभ्यो वा इति पक्षे सिच्, स्पृशादीनां वेति पक्षे धुटि गुणवृद्धिस्थाने अकारागमश्च । अदार्प्सीत् । अद्राप्सीत् । अदर्पीत् । अदृपत् । रधादित्वाद्वेट्, दर्प्ता, द्रप्ता, दर्पिता । दृप्तः ।

एवं तृप् । स्वादि तु दाद्योश्च । तृप्नोति, तृम्पति । अतर्पीत् । यौजादिकस्य तर्पयति, तर्पति ।

मुह् मुह्यति । अमुहत् । मुहद्रुहष्णुहष्णिहां वेति पक्षे धुटि हस्य घः, मोग्धा, मोढा, मोहिता । मोक्ष्यति, मोहिष्यति । मुग्धः, मूढः । मुक् मुट् । मोमोग्धि, मोमोढि ।

एवं द्रुह् ष्णुह् ष्णिहः । द्रुहस्तु आदिचतुर्थत्वं सध्वोः । ध्रोक्ष्यति, द्रोहिष्यति ।

कृश् । कृश्यति । तृषि मृषि कृशि वंचि लुञ्चृतां चेति कृशित्वा, कर्शित्वा ।

तुष हृष तुष्टौ । तुष्यति । तोष्टा । हृष्यति । अहृषत् । हृषितः । हृष् अलीके इत्यस्य तु हर्षति । अहर्षीत् । हृष्टः ।

कुप क्रुध रुष रोषे । कुप्यति । क्रुध्यति । क्रोद्धा । रुष्यति । 'वेषुसहलुभरुषरिषां ति' इति वेट् रोष्टा, रोषिता । रोषिष्यति । रुष्टः, रुषितः ।

लुभ गार्ध्ये । लुभ्यति । अलुभत् । लोब्धा, लोभिता । लोभिष्यति । लुब्धः । विमोहने लुभति । अलोभीत् । लोभिता ।

गृध् । गृध्यति । रु० प्रलम्भने गृधिवञ्च्योः । गृध्यते । जरीगर्द्धि । ह्य० दिस्योः अजरीघर्त् । सो वा धस्य रत्वे रो रे लोपमिति च कृते अजरीघाः इत्यपि ।

एवं कथिताः पौषादिकाः २० । इति परस्मैपदिनः ।

क्लिश उपतापे । क्लिश्यते । क्लिशिता । क्लिशित्वा । क्र्यादौ क्लिश् विबाधने इत्यस्य क्लिश्नाति । क्लेष्टा, क्लेशिता । 'पूक्लिशोर्वा' इति क्लिष्टः, क्लिशितः ।

खिदि दैन्ये । खिद्यते । रौधादिकेन खिन्त्ते । परिघाते तौदादिकेन खिन्दति । खेत्ता ।

बुध अवगमने । बुध्यते । अबोधि । अबुद्ध । बोद्धा । भोत्स्यति । भ्वादि पंठात् बोधति । बोधिता । बुधिर् बोधने इत्यस्य बोधति–०ते अबोधि । अबोधिष्ट । बोबोद्धि । द्व० दिस्योः अबोभोत् ।

युध् । युध्यते । योद्धा ।

लिश अल्पीभावे । लिश्यति । लिश विच्छ गतौ इत्यस्य लिशति । लेष्टा । इत्यात्मनेपदिनः ।

मृषः क्षमायां च । मृष्यति–०ते । मृषित्वा, मर्षित्वा । मर्षितः । क्षमाया अन्यत्र अपमृशितं वाक्यमाह । मृषु सहने चास्य मर्षति । मृष्ट्वा, मृषित्वा, मर्षित्वा । मृष्टम् । तितिक्षायां चौजादिकस्य मर्षयते । मर्षते ।

ई शुचिर् । शुच्यति–०ते । शुल्कः । इत्युभयपदिनौ ।

स्वादौ – ञि धृषा । धृष्णोति । धर्षिता । धृष्टः । प्रधृष्टः । प्रधर्षितः ।

तुदादौ – सृज । सृजति । दैवादिकेन सृज्यते । ससर्जिथ । सस्रष्ठ । अस्राक्षीत् । स्रष्टा । स्रक्ष्यति । सिसृक्षति । सृष्टः ।

रुजो । रुजति । रोक्ता । रुग्णः ।

भुजो । भुजति । भोक्ता । भुग्नः ।

छुप । स्पृश् । छुपति । छोप्ता । स्पृशति । अस्पार्क्षीत्, अस्प्राक्षीत्, अस्पृक्षत् । स्पर्ष्टा, स्प्रष्टा । स्प्रक्ष्यति, स्पर्क्ष्यति । पिस्पृक्षति ।

एवं मृश् ।

रुश् रिश् । रुशति । रोष्टा । रिशति । रेष्टा ।

विश् । विशति । वेष्टा । विविशिवान् । विविश्वान् । रु० नेर्विशः, निविशतम् ।

पिश् । पिशति ।

कृती छेदने । कृन्तति ।

कृती वेष्टने रौधादिकस्य कृणन्ति । कृन्त्तः । कृन्तन्ति । कृतादेर्वापि-सेऽसिचीति वेट्, कर्त्स्यति, कर्त्तिष्यति । कृत्तम् । एवं भृती ।

कुर्। कुरति। अकुत्सारोऽत्र दीर्घप्रतिषेधे करोतेरेव ग्रहणोपदेशात् कूर्यते।

वृहू। वृंहति। वर्ढा, वर्हिता। वृढः। ऋतो दीर्घो न स्यात्।

एवं तृहू स्तृहू।

कुट्। कुटति। चुकोट। कुटादेरनिनिचट्सु, इन् इच् अट् वर्जं अन्यत्र गुणो न स्यात्, अकुटीत्। कुटिता। चोकुटिता। कुटादेरत्र गणोक्तत्वात् गुणनिषेधो नास्ति, चेक्रीयितलुगन्तानां न स्यनुबन्धेत्यादिवचनात्।

इत्थं कुटादयः। इति परस्मैपदिनः।

तुद्। तुदति—०ते। तोत्ता। तुन्नः।

नुद्। नुदति—०ते। नोत्ता। नुन्नः।

दिश्। दिशति—०ते। देष्टा।

क्षिप्। क्षिपति—०ते। दिवादि पाठात् क्षिप्यति। क्षेप्ता।

कृष्। कृषति—०ते। भ्वादि पाठात् कर्षति। चकर्ष। अकार्क्षीत्, अक्राक्षीत्, अकृक्षत्। कर्ष्टा, क्रष्टा। कर्क्ष्यति, क्रक्ष्यति। चिकृक्षति।

मुच्लृ मुञ्चति—०ते। मोक्ता। मुमुक्षति—०ते। मुचेरकर्मकस्योट् वा मोक्ष्यते। मुमुक्षते वा वत्सः स्वयमेव।

लुप्लृ। लुम्पति—०ते। लोप्ता। अलूलुपत्, अलुलोपत्।

लिप्। लिम्पति—०ते। अलिपत्। लिम्पादीनामात्मनेपदे वा। अलिपत्। अलिप्त। लेप्ता।

षिचिर्। सिञ्चति—०ते। असिचत्। असिचत। असिक्त। सेक्ता।

रुधादौ—रुधिर्। रुणद्धि। रुन्द्धः। रुन्धन्ति। रुन्द्धे। रुन्धाते। रुन्धते। हौ रुन्द्धि। दौ अरुणत्। सौ अरुणः। अरुणत्। अरुधत्। अरौत्सीत्। अरुद्ध। रोद्धा।

भिदिर्। भिनत्ति। भिन्त्ते। भेत्ता। इत्यादि पूर्ववत्।

एवं छिदिर्, क्षुदिर्। क्षुणत्तीत्यादि।

रिचिर्। रिणक्ति। रिङ्क्ते। अरिणक्। रेक्ता।

एवं विचिर्।

एवं युजिर्। युनक्तीत्यादि। युज समाधाविति दैवादिकेन युज्यते। रु० स्वराद्यन्तादुपसर्गादयज्ञपात्रेषु। युजिर्। उपयुङ्क्ते। प्रयुङ्क्ते। यज्ञपात्रं प्रयुनक्ति।

उ छृदिर् । छृणत्ति । छृन्त्ते । छर्दिता । कृतादेर्वाऽपि सेऽसिचीति वेट्, छर्त्स्यति, छर्दिष्यति । छृत्त्वा । छर्दित्वा । छृत्तः ।

एवमु तृदिर् । इत्युभयपदिनः ।

पिष्लृ । पिनष्टि । पिंष्टः । पिंषन्ति । पिनक्षि । हौ पिण्ड्ढि । अपिणट् । पेष्टा ।

एवं शिष्लृ ।

भुज् । भुनक्ति पृथ्वीम् । हौ भुंग्धि । रु० अशने भुज् । भुङ्क्ते । भोक्ता ।

ओ विजी । विनक्ति । तुदादिपाठाच्च उद्विजते विजेरिटीत्यगुणत्वम्, उद्विजिता । उद्विग्नः । कथम् ? "उद्वेजिता वृष्टिभिराश्रयन्ते ।" इनन्तस्यायं प्रयोगः । इति परस्मैपदिनः ।

तनादौ – क्षिण् । क्षिणोति । क्षिणुतः । क्षिण्वन्ति । क्षिणुते । क्षिण्वाते । क्षिण्वते । क्षित्वा । क्षिणित्वा । क्षितम् ।

एवं तृणु, घृणु । केचित् गुणमिच्छन्ति तेन तर्णोति, घर्णोत्यपि ।

क्र्यादौ – मुष् । मुष्णाति । मुष्णीतः । मुष्णन्ति । हौ मुषाण । मुषित्वा । मुमुषिषति ।

कुष् । कुष्णाति । कोषिता । अपिति निष्कुषोरिति वर्जनात् निष्कुषो वेडस्तीति गम्यते । निष्कोष्टा । निष्कोषिता । निष्कुषितः ।

मृदु । मृद्नाति । मृदित्वा । एवं मृडु, गुधु ।

चुरादौ – चुर् । चोरयति । अचूचुरत् । इत्यादि पाठिवत् ।

पृथु । पर्थयति । अपीपृथत् । अपपर्थत् । इति परस्मैपदिनः ।

चित् । चेतयते । अचीचितत् । अचीचितेताम् । अचीचितत ।

दिवु परिकूजने । देवयते । दीव्यतीत्यन्यत् ।

युज्, पृच् । योजयति । पक्षे योजति । पर्चयति । पक्षे पर्चति ।

इति त्यादिप्रक्रमे प्रथमो ह्रस्वोपधाधिकारः ।

अथ दीर्घोपधाः । खादृ भक्षणे । खादति । चखाद । चिखादिषति । चखाद्यते । खादयति । 'न शास्वृदनुबन्धाना'मिति ह्रस्वाभावे अचखादत् ।

शील् । शीलति । शिशील । शिशीलिषति । शेशील्यते । शीलयति । अशीशिलत् ।

एवं कूज् । कूजति । चुकूजेत्यादि पूर्ववत् ।

क्रीड़्। क्रीडति। रु० अनुपरिभ्यां च क्रीडः। यथा – दिवमुपरि परिक्रीडते ताडकेयम्। चकारादाङः, आक्रीडते। समोऽकूजने, संक्रीडन्ते कुमाराः। कूजने तु संक्रीडन्ति शकटानि, अव्यक्तं शब्दं कुर्वन्तीत्यर्थः। क्रीडयति। अचिक्रीडत्।

रोड़ृ। रोडन्ति। रुरोडेत्यादि। एवं शौड़ृ। शौडति। शुशौडेत्यादि।

धूप् धूपायति। दुधूप। धूपायाञ्चकार।

जीव्। जीवति। जेजीवीति। वलोपे जेजेति। जेज्यूतः। भ्राजभासेत्यादिना अजीजिवत्, अजिजीवत्।

हेड़्। हेडति। हेडयति। घटादिपाठबलात् ह्रस्वत्वे गुणो न स्यात्। अहिडि, अहेडि। हिडं २, हेडं २, केचित् ह्रस्वत्वे दीर्घमिच्छन्ति, अहीडि। हीडं हीडमित्यपि। इति परस्मैपदिनः।

ह्लादी। ह्लादते। प्रह्लान्नः।

रु० [नाथ।] आशिषि नाथः, सर्पिषो नाथते। आशिषोऽन्यत्र परस्मैपदमेव, नाथति माणवकम्।

भ्राज। भ्राजते। भ्रृजादीनां षः इत्यत्र राजिसहचरितस्य भ्राजेर्भ्राष्टिः। अस्य तु भ्राक्तिरेव।

वेष्ट। वेष्टते। ववेष्टि। वीष्टीत्यत्वपक्षे अववेष्टत्, अविवेष्टत्।

क्षीवृ। क्षीवते। निष्ठायां अनुपसर्गात्फुल्लक्षीवेत्यादिना क्षीवः।

भ्राम्। भ्रामते। बाभ्राम्यते। कश्चिद्बंभ्राम्यत इत्येव।

पूयी। पूयते। पूतः। प्वोर्व्यञ्जने ये।

क्नूयी। क्नूयते। क्नूतः। अर्त्तिह्रीव्लीरी क्नूयी क्ष्माय्यादतानामन्तः पो यलोपो गुणश्च नामिनाम्, क्नोपयति।

क्ष्मायी। क्ष्मायते। क्ष्मातः। क्ष्मापयति।

स्फायी ओ प्यायी वृद्धौ। स्फायते। स्फीतः। ईदनुबन्धबलात् स्फायः स्फीरादेशो भवत्यनित्य इति, स्फातः। स्फावयति, स्फायेर्वादेशः। आप्यायते। प्यायः पिः परोक्षायाम्। आपिप्ये। दीपेत्यादिना आप्यायि। आप्यायिष्ट। प्यायः पी स्वाङ्गे, पीनौ स्तनौ। आप्यानश्चन्द्रः।

भाष्। भाषते। अबीभषत्। अबभाषत्।

कासृ शब्दकुत्सायाम्। कासते। कासांचक्रे। काशृ भासृ दीप्तौ। काशते। दैवादिकेन काश्यते। चकाशे। भासते। अबीभसत्। अबभासत्।

वाह्व । वाहते । वाढं भृशम्, वाहितमन्यत् ।

गाह्व । गाहते । विगाढा । विगाहिता । विगाढम् ।

मान् । मीमांसते । चौरादिकेन मानयति ।

टु भ्राज, टु भ्रास, टु भ्लासृ दीप्तौ । भ्राजते । 'राजि - भ्राजि - भ्रासि - भ्लासीनां वे'ति वचनादेत्वं पक्षे, भ्रेजे । बभ्राजे । अविभ्रजत् । अबभ्राजत् । 'भ्रासभ्लासि'त्यादिना पक्षे यन्, भ्रास्यते, भ्रासते । शेषं पूर्ववत् ।

एवं भ्लासृ । अबभ्लासत् । नित्यम् । इत्यात्मनेपदिनः ।

राजृ । राजति - ०ते । रराज । रेजतुः । रराजतुः ।

धावु गतिशुद्ध्योः । धावति । धौत्वा । धावित्वा । धौतः पटः । गतौ निष्ठायामडस्त्येव, धावितः ।

चायृ । चायति - ०ते । चेकीयते । चायः किश्चेकीयिते ।

दासृ । दासति - ०ते । वंसौ दास्वान् ।

दान् । दीदांसति - ०ते ।

शान् । शीशांसति - ०ते ।

अदादौ - चकासृ । चकास्ति । चकास्तः । चकासति । अचकात् । अचकास्ताम् । यक्षादिश्चेत्यभ्यस्तत्वात्, अन उस् । अचकासुः । सौ अचकात्, अचकाः । चकासाञ्चकार । अचचकासत् ।

शास् । शास्ति । शासेरिदुपधाया अण् व्यञ्जनयोः, शिष्टः । शासति । शिष्यात् । शाधि हौ । अशात् । अशिष्टाम् । अशासुः । अशात् । अशाः । अशिषत् । शासिता । शिष्ट्वा । शासित्वा । शेशिष्यते । शिष्टः । कथं शास्तिरित्यौणादिकोऽयम् । न शास्वृदनुबन्धानामित्यशशासत् । इति परस्मैपदिनौ ।

आङः शासु इच्छायाम् । आशास्ते । पक्षे धातुसकारस्य धकारे लोपः, आशाध्वे । सस्य दत्वे । आशाद्ध्वे । आशास्यते । आशीशसत् ।

दिवादौ - दीपी । दीप्यते । दीपेत्यादिना अदीपि । अदीपिष्ट ।

पूरी । पूर्यते । अपूरि । अपूरिष्ट । पूर्णः । पूरयति । पूर्णः, पूरितः ।

जूरी । जूर्यते । जूर्णः । इत्यात्मनेपदिनः ।

राध, साध् । राध्यति - ०ते । साध्यति - ०ते । राद्धा । साद्धा । राध्नोति । साध्नोति । स्वादिपाठात् ।

चुरादौ - पूज । पूजयति । अपूपुजत् ।

पीड। पीडयति। अपीपिडत्। अपिपीडत्।

सूच। सूचयति। 'ञप्रभृतिभ्यश्चे'ति। सोसूच्यते।

सूत्र एवम्। मार्ग। मार्गयति। मार्गति। युजादित्वाद्विभाषयेत्।

इति त्यादिप्रक्रमे दीर्घोपधाधिकारो द्वितीयः।

*

अथ व्यञ्जनोपधाः। यथा—जल्प। जल्पति। जजल्प। अजल्पीत्। जिजल्पिषति। जाजल्प्यते। जल्पयति। अजजल्पत्।

म्लेच्छ। म्लेच्छति। म्लिष्टमविस्पष्टम्। म्लेच्छितमन्यत्।

मूर्च्छा। मूर्च्छति। मूर्त्तः। मूर्त्तमनेन। मूर्च्छितमनेन। प्रमूर्त्तः, प्रमूर्च्छितः। कथं मूर्च्छितः? मूर्च्छा अस्यास्तीति, 'तारकादिभ्य इतः' इति रूढितो दृश्यते। मूर्त्तिः। मूः। मुरौ। मुरः।

एवं हूर्च्छा, स्फूर्च्छा।

चुण्डु (चुड्डु) दोपधोऽयम्। क्विपि संयोगान्तलोपे तस्य श्रुतिः, चुत्। अन्यत्र च ट वर्गयोगे च ट वर्ग एव स्यात्। शुच्यी। चुच्यी। शुच्यति। शुक्तः। चुच्यति। चुक्तः।

तुर्वी। तूर्वति। तुतूर्व। तूर्णः। तुः। तुरौ। तुरः।

तक्ष्। संतक्षति वाग्भिः। तनूकरणे तक्ष्णोति च। तष्टा, तक्षिता। इति परस्मैपदिनः।

स्पर्द्ध। स्पर्द्धते। पास्पर्ध्यते। पास्पर्द्धि। ह्य० दौ अपास्पर्त्त्। सौ अपास्पर्त्त्। अपास्पाः। वा धस्य रत्वे, रो रे लोपः स्वरश्च पूर्वो दीर्घः।

दक्ष। दक्षते। दक्षयति। अदक्षि। अदाक्षि। घटादिपाठबलाद् अनुपधाया अपि दीर्घत्वम्।

अदादौ—चक्षिङ्। इकार उच्चारणार्थः। आचष्टे। आचक्षाते। आचक्षते। आचक्षे। आचक्षाथे। आचड्ढ्वे। असार्वधातुक० 'चक्षिङः ख्याञ्', 'वा परोक्षायाम्', अनुबन्धत्वादुभय० आचख्यौ। आचख्ये। आचचक्षे। इत्यात्मनेपदिनः।

जक्ष्। रुदादित्वात् जक्षिति। जक्षितः। अभ्यस्तसंज्ञकत्वात् जक्षति। ह्य० 'दिस्योरीट्', अजक्षीत्। अजक्षीः। अट् वा, अजक्षत्, अजक्षः।

तुदादौ—पृच्छ। पृच्छति। पप्रच्छ। पप्रच्छिथ। पप्रष्ठ। 'छशोश्चे'ति 'षत्वनिमित्ताभावे' इत्यादिना चस्य लोपे उपधाभूतस्याकारस्य दीर्घे, अप्राक्षीत्। प्रष्टा। प्रक्ष्यति। रु० 'आङः प्रच्छ'; आपृच्छते गुरून्,

मुत्कलापयतीत्यर्थः । 'समोऽकर्मकः ।' सम्पृच्छते । पिपृच्छिषति । परिपृच्छयते । पृष्टः । पृच्छनीयमिह रूढित्वात्सम्प्रसारणम् । प्रच्छयति । अपप्रच्छत् ।

एवं व्रश्चू । किन्तु 'क्त्वि जॄव्रश्चोरिट्' नित्यम्, व्रश्चित्वा । विव्रृक्षति । इट् पक्षे तु अव्रश्चीत् । व्रश्चिता । वृक्णः, व्रश्चेः क्न च ।

टु मस्जी । मज्जति । अमाङ्क्षीत् । 'मस्जि नशोर्धुटि' नागमे । मङ्क्ता । मङ्क्त्वा, मक्त्वा । मग्नः ।

विच्छ । विच्छायति । विश्नः । इति परस्मैपदिनः ।

ओ लस्जी । लज्जते । लग्नः । इत्यात्मनेपदी ।

भ्रस्ज । भृज्जति—० ते । बभ्रज्ज । बभर्ज । भ्रष्टा । भ्रक्ष्यति । बिभ्रक्षति । बिभ्रज्जिषति । बरीभृज्यते । भृष्टः । इत्युभयपदी ।

चुरादौ – लक्ष । विभाषितोऽयमित्येके । लक्षयति—० ते । अललक्षत् ।

अथानुषङ्गिणः । 'अत एव वर्जनादिदनुबन्धानां धातूनां नास्ती'ति तस्य च क्वचिल्लोपो न स्यात् । यथा टु नदि । नन्दति । ननन्द । अनन्दीत् । निनन्दिषति । नानन्द्यते । नानन्ति । अनानन्त् । सौ अनानन्त्, अनानः । वा दधोरत्वात् । नन्दितम् । नन्दयति । अननन्दत् ।

णिदि । निन्दति । निनिन्द । नेनिन्द्यते । एवमिदनुबन्धाः ।

'अनिदनुबन्धानामगुणे अनुषङ्गलोपः ।' यथा मन्थ । मन्थति । मथ्नाति, क्र्यादिपाठात् । ममन्थ । 'परोक्षायामिन्धि श्रन्थि ग्रन्थि दम्भीनामेवे'ति नियमात् नलोपाभावे ममन्थतुः, ममन्थुः । अमन्थीत् । मन्थिता । मिमन्थिषति । मामथ्यते । मामन्थीति । मामन्ति । 'अगुणे नलोपः', मामत्तः । मामथति । 'थफान्तानां चानुषङ्गिणाम्' इति वा गुणी, मथित्वा, मन्थित्वा । मथितः । ममथ्वान् । ममथानः ।

वि० खेत्यादि । लगि । लंगति । 'लंगि-कम्प्योरुपतापशरीरविकारयोर्नलोप' इष्यते । विलग्यते । विलगितः ।

वञ्च गतौ । वञ्चति । वनीवच्यते । तृषि मृषीत्यादिना वञ्चित्वा, वचित्वा, वक्त्वा । वक्तः । प्रलम्भने चौरादिकेन वटुं वञ्चयते ।

लुञ्च् । लुञ्चति । लुचित्वा, लुञ्चित्वा ।

अचेत्यादि रिवि रवि धवि । रिण्वति । रविः, अत्र वकारस्य धुट्त्वाभावादनुस्वारो नास्ति, णत्वमेव स्यात्, रण्वति, धण्वति ।

वृहि वृहि । वृंहति । वृढो बलवान् । वृंहितमन्यत् । 'वृंहेः स्वरेऽनिटि वा'इति पक्षे पञ्चमलोपः, वर्हति, वृंहति । वृंहिता । वर्हकः, वृंहकः । परिवृढः प्रभुः । वृंहितमन्यत् ।

स्कन्दिर् । स्कन्दति । अस्कन्दत् । अस्कान्त्सीत् । 'अस्य च दीर्घ' इत्यत्र पृथग्योगान्नोपधाया अपि दीर्घत्वम् । स्कन्ता । चनीस्कद्यते । स्कत्त्वा, स्कन्त्त्वा । प्रस्कद्य । प्रस्कन्नः ।

दंशि । 'दंशिसञ्जिष्वञ्जिरञ्जीनामनि' इति नलोपे दशति । अदांक्षीत् । दंष्टा । दिदङ्क्षति । दन्दश्यते । दष्टः ।

षञ्ज । सजति । सञ्जिग्रहणात् षत्वे नलोपाभावे अभिषञ्जति । सङ्क्ता । 'जान्तनशामनिटाम्' इति सक्त्वा । सक्तः । इति परस्मैपदिनः ।

ष्वञ्ज । परिष्वजते । 'ष्वञ्जेर्वे'ति नलोपे परिषष्वजे, परिषष्वञ्जे । परिष्वङ्क्ता ।

कम्पि । कम्पते । कम्पितः । 'लंगिकम्प्योरुपतापे'त्यादिना विकप्यते । विकपितः ।

आङः शसि इच्छायाम् । आशंसते । आशंसुः । आशंस्यते । आशंसितम् । आङः पर एवायं प्रयुज्यते । शंसु स्तुतावित्यस्य प्रशस्यते । प्रशस्तम् । प्रशंसेति ।

भ्रंसु प्रमादे । भ्रंसते । वञ्चिभ्रंसीत्यादौ नीविधाने भ्रंसिसहचारिणो ग्रहणादस्य शाभ्रस्यत एव । उषाभ्रदिति । वञ्चिभ्रंसीत्यादौ नीविधाने भ्रंसिसहचारिणो द्वाभ्यामपि स्यात् ।

भ्रंसु भ्रंसु अवभ्रंसने । भ्रंसते । अद्यतन्यां द्युतादीनामित्युभयम्, अभ्रसत्, अभ्रंसिष्ट । शनीभ्रस्यते ।

ध्वंसु । ध्वंसते । अध्वसत् । दनीध्वस्यते ।

भ्रम्भु । भ्रम्भते । अभ्रभत् ।

स्पन्दू । स्पन्दते । अस्पन्दत् । अस्पन्तः । अस्पन्दिष्ट । स्पन्ता । स्पन्दिता । वृतादित्वात् स्पसनोरुभयम्, इट् च तयोः परस्मैपदे नेष्यते, स्पन्त्स्यति, स्पन्दिष्यते । सिस्पन्त्सति, सिस्पन्दिषते । स्पन्त्त्वा, स्पन्दित्वा । प्रस्पन्द्य । स्पन्नः । इत्यात्मनेपदिनः ।

रञ्ज् । रजति, रजते । दैवादिकाच रज्यति-०ते । रङ्क्ता । रक्त्वा, रङ्क्त्वा । रक्तः । रजयति मृगान् । रञ्जेर्मृगरमणे अनुषङ्गलोपः । अन्यत्र रञ्जयति वस्त्रम् । इत्युभयपदी ।

स्वादौ - धिवि । 'धिन्विकृण्व्योर्धि कृ चे'ति वा वक्तव्यम् । धिनोति, धिनुतः, धिन्वन्ति । दिधिन्व ।

कृवि । कृणोति ।

दम्भ् । दभ्नोति, दभ्नुतः, दभ्नुवन्ति । ददम्भ । देभतुः । देभुः । ददम्भिथ । धिप्सति, धीप्सति । दिदम्भिषति । दब्ध्वा, दम्भित्वा । दब्धः ।

तुदादौ - तृम्प । 'तृम्पादीनां शुभान्तानामनि न च लुप्यते' इति तृम्पति । तरीतृप्यते ।

रुधादौ - भञ्जो भनक्ति, भङ्क्तः, भञ्जन्ति । भनक्षि । भञ्ज्यात् । भङ्ग्धि भनजानि । ह्य० दि्स्योः अभनक् । अभाङ्क्षीत् । भङ्क्ता । भज्यते 'भञ्जेरिचि वा' अभाञ्जि, अभञ्जि । भक्त्वा, भङ्क्त्वा । भग्नः ।

तृहि हिसि । गुणिनि व्यञ्जने तृहेरिड्विकरणात्, तृणेढि । तृण्ढः । तृंहन्ति । तृणेक्षि । तृण्ढि । अतृणेट् । हिनस्ति, हिंस्तः, हिंसन्ति । ह्य० दौ अहिनत् । सौ अहिनत्, अहिनः ।

क्र्यादौ - बध बन्धने । बध्नाति, बध्नीतः, बध्नन्ति । हौ बधान । अभान्त्सीत् । बन्द्धा । श्रन्थ विमोचनप्रतिहर्षणयोः । श्रथ्नाति । शश्रन्थ । श्रेथतुः । श्रेथः । शश्रन्थिथ । श्रथित्वा, श्रन्थित्वा ।

एवं ग्रन्थ सन्दर्भे । रु० 'श्रन्थि - ग्रन्थी कर्मकर्तृस्थौ', श्रथ्नीते, ग्रथ्नीते मालाः स्वयमेव ।

श्रथि शैथिल्ये, ग्रथि वकि कौटिल्ये इति भौवादिकाभ्यां श्रन्थते, ग्रन्थते । श्रन्थ ग्रन्थ सन्दर्भे इति चौरादिकाभ्यां श्रन्थयति, श्रन्थति, ग्रन्थयति, ग्रन्थति ।

स्तम्भु स्तुम्भु स्कम्भु स्कुम्भु एते सौत्रा धातवः । स्तभ्नाति, स्तभ्नोति । स्तब्ध्वा, स्तम्भित्वा । स्तब्धः । एवं स्तुम्भ्वादयः । स्तम्भेस्तु 'जॄ श्विस्तम्भे'त्यादिना अस्तभत्, अस्तम्भीत् । इति परस्मैपदिनः ।

इति त्यादिप्रक्रमे व्यञ्जनोपधाधिकारस्तृतीयः ।

*

अथ आदिस्वराः यथा - अट् । अटति । आट । आटतुः । आटुः । आटिथ । आटीत् । आटिष्टाम् । आटिषुः । मा भवानटीत् । अट्यते । आटि । आटिषाताम् । आटिषत । आटिटिषति । स्वरादित्वाचेक्रीयिता प्राप्तावत्रैव 'ऋप्रभृतिभ्यश्चे'ति अटाट्यते । आटयति । आटिटत् ।

वि० अक्षू । 'अक्षतेर्वे'ति अक्ष्णोति, अक्षति । 'तस्मान्नागमः परादिरन्तश्चेत् संयोगः ।' आनक्ष, आनक्षतुः, आनक्षुः । इड्यनिटि च आक्षीत् । आक्षिष्टाम् । आक्षुः । आक्षिषुः । अष्टा । अक्षिता । अक्षयति । आचिक्षत् ।

अर्द । अर्दति । आनर्द । 'संनिविभ्योऽर्देः', समर्णः, न्यर्णः, व्यर्णः । सामीप्येऽभेः, अभ्यर्णा नदी । अर्दितमन्यत् । 'न नबदराः संयोगादयोऽये', एतेन द्विरुच्यते, अर्दिदिषति । आर्दिदत् ।

अति । अन्तति । आनन्त । अन्त्यते । अन्तितिषति । आन्तितत् ।

अञ्चु गति-पूजनयोः । अञ्चति । अनपादाने अञ्चेः समक्तः । अपादाने तु उदक्तमुदकं कूपात्, उद्धृतमित्यर्थः । अञ्चिता गुरवः । अञ्चेः पूजायामिडिष्यते नलोपाभावश्च ।

अञ्चू गतावित्यस्य अञ्चति-० ते ।

अर्च । अर्चति । आनर्च । अर्चिचिषति । आर्चिचत् । चौरादिकादर्चयति ।

अज । अजति । असार्वधातुक० अजेर्वी । विवाय । विव्यतुः । विव्युः । व्यञ्जनादौ वेति केचित् । प्राजिता, प्रवेता । घञ् अल् क्यप्सु च न स्यात् । समाजः । उदजः । समज्या ।

अड्ड । अड्डति । दोपधोऽयम्, तस्य द्विरुक्तेरभावात् अड्डिडिषति ।

अम गतौ । अमति । 'वा रुष्यमत्वरसंघुषास्वलाम्', अभ्यान्तः । अभ्यमितः । आमयति ।

अव् । अवति । ऊः । उवौ । उवः ।

आच्छि । आच्छति । आच्छ । आच्छतुः । आच्छुः । 'तस्मान्नागम' इत्यत्र तस्माद्दीर्घीभूतादिति व्याख्यानान्नागमो नास्ति ।

इट् । एटति । वृद्धौ ऐटत् । इयेट । ईटतुः । ईटुः । इयेटिथ । ऐटीत् । एटिटिषति । एटयति । ऐटिटत् । मा भवानैटिटत् ।

उख । ओखति । 'उपसर्गावर्णस्य लोपो धातोरेदोतोः ।' प्रोखति । उवोख । ऊखतुः । ऊखुः । इत्यादि पूर्ववत् । अटेत्यादि ।

इ गतौ । अयति । आयत् । इयाय । ईयतुः । ईयुः । इययिथ । इयेथ । ऐषीत् । ऐष्टाम् । ऐषुः । एता । ऐयात् । ईयते । ऐयत । आयि । ऐषाताम् । आयिषाताम् । एष्यते । आयिष्यते । ईषिषति । ईयिवान् । ईयानः ।

इदि । इन्दति । 'नाम्यादेर्गुरुमतोऽनृच्छः' इत्याम्, इन्दाञ्चकार । ऐन्दीत् ।

ओखृ । ओखति । प्रोखति । ओखाञ्चकार । औखीत् ।

एजृ । एजति । ऐजीत् ।

ईर्क्ष्य ईर्ष्य । ईर्क्ष्यति । ईर्क्ष्यिषिषति । ईर्ष्यति । 'ईर्ष्यतेर्यशब्दस्य सनो वा द्विर्वचनम्', ईर्ष्यियिषति । ईर्ष्यिषिषति ।

उर्वी । उर्वति । ऊर्णः । ऊः । उरौ । उरः ।

उष दाहे । ओषति । प्रौषति । ओषाञ्चकार । उवोष ।

ऋच्छ । ऋच्छति । 'ऋकारे चे'ति नागमः, आनर्च्छ । आर्च्छीत् । रु० 'समोऽकर्मकः', समृच्छते ।

ऋत इति सौत्रो धातुः । ऋतेर्णी यङ् वक्तव्यः, ऋतीयते । असार्वधातुके वा आनर्त्त । ऋतीयाञ्चक्रे । ऋतित्वा, अर्त्तित्वा, ऋतीयित्वा । इति परस्मैपदिनः ।

एध् एधते । 'इणेधत्योर्णः' इत्यलोपाभावे उपैधते । एधाञ्चक्रे । एधामासे । एधाम्बभूवे । कर्त्तरि सर्वत्र अस्-भुवोः प्रयोजनात् परस्मैपदं चातिदिश्यते, एधामास एधाम्बभूवेत्यपि ।

ऊह । ऊहते । रु० 'उपसर्गादस्यत्यूह्यो वा', समूहति – ०ते । समूह्यते उपसर्गात्पक्षे ह्रस्वः, समुह्यते । स्वमते च हिना सिद्धम् ।

ऋज् । अर्जते । आनृजे । आर्जिष्ट ।

अय् । अयते । उपसर्गस्यायतौ रेफस्य लत्वम्, पलायते । 'निर्दुरोर्वा' । निरयते, निलयते । पलायाञ्चक्रे ।

ऊयी । ऊयते । ऊतः ।

उङ् । अवते । ह्य० आवत । ऊवे । औष्ट । औषाताम् । औषत । ओता । ऊयते । आवि । औषाताम् । आविषाताम् । इत्यादि । ऊषिषते । इत्यात्मनेपदिनः ।

अदादौ – अद् । अत्ति । ह्य० 'दिस्योः अदोऽट्', आदत्, आदः । 'अदो घस्लृ सनद्यतन्योः', 'वा परोक्षायाम्', अघसत् । लृदनुबन्धस्य अण् प्रयोजनकत्वात्परस्मैपद एव घस्लृरादेशोऽनुमीयते । तथा केचित् घस्लृ अदने इति धात्वन्तरमपि मन्यन्ते । जघास, जक्षतुः, जक्षुः । जघसिथ । आद, आदतुः, आदुः । आदिथ । अत्ता । जिघत्सति । जक्षिवान् । आदिवान् । जग्ध्वा । प्रजग्ध्य । जग्धम् । कथमन्नं आदानम्? ते इति ज्ञापकात् ।

इण् । 'अणश्चे'ति निर्देशाय णकारः । एति उपैति, इतः, यन्ति । 'इणश्चे'ति यत्वम् । ऐत् , ऐताम् , आयन् । इयाय, ईयतुः, ईयुः । इययिथ । इयेथ । 'इणो गा', अगात् , अगाताम् , अगुः । 'इणोऽनुपसृष्टस्य' इति ईयात् । अन्वियात् । एता । ईयते । अगायि । अगासाताम्, अगायिषाताम् । एष्यते । आयिष्यते । 'सनीणिङोर्गमिः,' जिगमिषति । इत्वा, उपेत्य । इतः । प्रत्याययति ।

इक् । इण् वेदिकोऽपीति विशेषणार्थः ककारः । इङिकावधिपूर्वकावेव प्रयुज्येते । अध्येति । अधीतः । अधियन्तीत्यादि पूर्ववत् ।

असु भुवि । 'अस्तेरादे'रित्यगुणे अलोपः । अस्ति, स्तः, सन्ति । असि, स्थः, स्थ । अस्मि, स्वः, स्मः । स्यात् , स्याताम्, स्युः । हौ एधि । आसीत्, आस्ताम्, आसन् । आसीः । रुचादित्वाद् व्यतिस्ते । ह एकारे वक्तव्यः, व्यतिहे । शतृङ् सन् । 'अस्तेर्भूरसार्वधातुके ।'

अन् रुदादित्वात् प्राणिति, प्राणितः, प्राणन्ति । अन प्राणने इति दैवादिकेन अन्यते ।

ऋ गतौ । इयर्त्ति, इयृतः, इय्रति । इयृयात् । ऐयः । ऐयृताम् । ऐयरुः । ऐयः । अण्, आरत् । 'ऋ प्रापणे चे'ति भौवादिकेन ऋच्छति । आर्च्छत् । आर्षीत् । आर । आरिथ । अर्यात् । अर्त्ता । अरिष्यति । रु० 'समोऽकर्मकः ।' समियृते । समृच्छते । अरिरिषति । अरार्यते । अर्यते । आरि, आर्षाताम्, आरिषाताम्, इत्यादि । अर्त्ता, आरिता । अरिष्यते । आरिष्यते । ऋतं निपातनात् । ऋणं देयद्रव्यम् । अर्पयति । इति परस्मैपदिनः ।

ईर गतौ कम्पने च । ईर्त्ते । ऐर्त्त । ईर क्षेपणे इति चौरादिकेन ईरयति ।

ईड । ईट्टे । 'ईड्जनोः सध्वे चे'ति इट्, ईडिषे, ईडिध्वम् ।

ईश । ईष्टे । 'सध्वोरिट्', ईशिषे, ईशिध्वम् ।

आस् । आस्ते । आसाञ्चक्रे । आसीनः, ईतस्यासः ।

इङ् । अधीते, अधीयाते, अधीयते । अधीयीत । अधीष्व । अध्यैत, अध्यैयाताम् , अध्यैयत । अधिजगे । अद्यतनी - क्रियातिपत्त्योर्वा गीरादेश इष्यते, अध्यगीष्ट, अध्यैष्ट । गी अत्र दीर्घविधानाद् गुणो नास्ति । अध्येता । अधीयते । अध्यगायि, अध्यायि । अध्यगीषाताम् , अध्यगायिषाताम् । अध्यैषाताम्, अध्यायिषाताम् इत्यादि । 'इङ्धारिभ्यां शन्तृङ्ङकृच्छ्रे', अधी-

यन्, अन्यत्र अधीयानः। अधिजगिवान्, अधिजगानः। अधीत्य। अधीतः। अधिजिगांसते। अध्यापयति। 'इनि संश्च णोर्गा वा', अधिजिगापयिषति, अध्यापिपयिषति। अध्यजीगपत्, अध्यापिपत्। इत्यात्मनेपदिनः।

ऊर्णुञ्। 'उतो वृद्धिर्व्यञ्जनादौ गुणिनि सार्वधातुके', 'ऊर्णोतेर्गुणः', प्रोर्णोति, प्रोर्णुतः, प्रोर्णुवन्ति। प्रोर्णुते। 'ह्यस्तन्यां चे'ति गुण एव, प्रौर्णोत्, प्रौर्णुताम्, प्रौर्णुवन्। प्रोर्णुनाव। प्रोर्णुनुवे। इति। 'वा गुणः', प्रौर्णवीत्, प्रौर्णावीत्, प्रौर्णुवीदित्यपि। प्रोर्णविता, प्रोर्णुविता। प्रोर्णुनविषति। प्रोर्णुनूषति। 'ऋप्रभृतिभ्यश्च', प्रोर्णोनूयते, प्रोर्णूयते। प्रोर्णुवितः। इत्युभयपदी।

दिवादौ - असु क्षेपणे। अस्यति। अणि आस्थात्। ह० 'उपसर्गादस्यत्यूहौ वा,' अपास्यति - ० ते। अपास्थत् - ०त।

ऋधु। ऋध्यति। पुषादित्वाद् आर्धत्। स्वादेस्तु ऋध्नोति। आर्द्धीत्। द्वाभ्यां अर्दिधिषति, ईर्त्सति।

स्वादौ - आपॢ। आप्नोति, आप्नुतः, आप्नुवन्ति। आप। आपत्। आप्ता। ईप्सति। आपयति। इति परस्मैपदिनः।

अशू व्याप्तौ। अश्नुते। आनशे। अष्टा। अशिता। वेट्यपि 'स्मिङ्पूङ् रञ्ज्वशू०' इत्यादिना नित्यम्, अशिशिषति। अश भोजने इति क्र्यादिकेन अश्नाति। आश। द्वाभ्यामशाश्यते। इत्यात्मनेपदी।

तुदादौ - उब्ज्। उब्जति। उब्जाञ्चकार। उब्जिजिषति।

इषु। इच्छति। इयेष, ईषतुः, ईषुः। इयेषिथ। एष्टा। एषिता। एषिष्यति। इष्ट्वा, एषित्वा। इष्टः। अन्यत्र इष्यति। इष्णाति। एषिता।

रुधादौ - उन्दी। उनत्ति। औनत्। समुत्तः, समुन्नः।

अञ्जू। अनक्ति। हौ अङ्ग्धि। आनक्। वेट्यपि 'अञ्जेः सिची'ति नित्यमिट्, आञ्जीत्। अङ्क्ता, अञ्जिता। नित्यं आञ्जिजिषति। व्यक्तः। इति परस्मैपदिनः।

ञि इन्धी दीप्तौ। इन्द्धे, इन्धाते, इन्धते। ऐन्ध। समीधे। इत्यात्मनेपदी।

तनादौ - ऋणु। ऋणोति। तनाद्युपलक्षणं करोतिरिति केचित्, तेन समर्णोति। ऋत्वा, अर्णित्वा। ऋतम्।

क्र्यादौ - ऋ गतौ। 'प्वादीनां ह्रस्वः,' ऋणाति। आर्णात्। आरीत्। अरिता। ईर्यते। समीर्णः। इति परस्मैपदी।

इति त्यादिप्रक्रमे आदिस्वराधिकारश्चतुर्थः।

अथ स्वरान्ताः।

चुरादौ अदन्ताः स्वरादेशाः परि(र?)निमित्तकाः पूर्वविधिं प्रति स्थानिवत् इति तेषामिनि लुप्ताकारस्य स्थानित्वाद्दीर्घ–गुणौ न स्तः, समानलोपत्वाच्च 'णि सन्वद्भावः, उपधाया ह्रस्वश्च' नास्ति।

यथा – कथ। कथयति। अचकथत्।

गण। गणयति। अजगणत्, अजीगणत्, 'ईच गणः।'

स्पृह। स्पृहयति। अपस्पृहत्।

साम। सामयति। अससामत्।

अघ। अघयति। आजिघत्।

इत्यदन्ताः।

आदन्ता यथा – कै। 'सन्ध्यक्षरान्तानामाकारोऽविकरणे।' कायति। चकौ, चकतुः, चकुः। चकिथ। चकाथ। अकासीत्, अकासिष्टाम्, अकासिषुः। काता। रु० 'कर्मकर्तृस्थः स्वरान्तो धातुरद्यतन्यां वा।' अकास्त, अकायि वा शिष्यः स्वयमेव। कायते। अकायि। अकासाताम्, अकायिषाताम्, इत्यादि। कास्यते, कायिष्यते। चकिवान्। चकानः(नः?)। चिकासति। चाकायते। चाकेति, चाकाति, चाकीतः। चाकति। कापयति।

वि० गै। गायति। 'अगुणे दा मा गायति पिबति स्थास्यति जहातीनामीकारो व्यञ्जनादौ, आशिष्येकारः', गीयते। गेयात्। गासीष्ट। जिगासति। जेगीयते। जागेति, जागाति। गीत्वा। यपि 'मीनात्यादिदादीनामाः' प्रगाय। गीतम्। गाङस्तु गायते। गातम्।

ष्ठा। तिष्ठति। तस्थौ। 'स्थासेति-सेधति-सिच-सञ्ज-ष्वञ्जामडभ्यासान्तरस्य षत्वम्', प्रत्यष्ठात्। अस्थात्, अस्थाताम्, अस्थुः। स्थेयात्। रु० 'प्रतिज्ञानिर्णयप्रकाशनेषु स्था', नित्यं शब्दमातिष्ठते, अङ्गीकरोतीत्यर्थः। त्वयि तिष्ठते विवादः, त्वयि निर्णय इत्यर्थः। तिष्ठते कन्या छात्रेभ्यः, स्वाभिप्रायं प्रकाशयतीत्यर्थः। समवप्रविभ्यः, संतिष्ठते इत्यादि, अप्रतिज्ञाद्यर्थमिदम्। उदोऽनूर्ध्वचेष्टायाम्, मुक्तावुत्तिष्ठते, आराधयतीत्यर्थः। वा लिप्सायाम्, भिक्षुको धार्मिकमुपतिष्ठति–०ते, भिक्षामहं लभेयेति धार्मिकमुपतिष्ठतीत्यर्थः। 'अकर्मकश्चे'ति, भोजनकाले उपतिष्ठते। उपास्थित। 'स्थादोरिरद्यतन्यामात्मने', तस्य च 'स्थादोश्चे'ति न गुणः, स्थीयते। अस्थायि, अस्थिषाताम्, अस्थायिषातामित्यादि। तिष्ठासति। तेष्ठीयते। तास्थेति, तास्थाति। स्थित्वा। स्थितः। स्थापयति। अतिष्ठिपत्।

धेट्, पा पाने। 'श्विधेटोर्वा वक्तव्यम्' इति विशेषणार्थष्टकारः। धयति। पक्षे चण्, अदधत्। अधात्। अधासीत्। 'घ्राशाछासाधेटां वे'ति सिचूलोपो वा। धेयात्। धीयते। अधायि, अधिषाताम्, अधायिषातामित्यादि। धित्सति। देधीयते। दाधेति, दाधाति। 'उभयेषामीकार' इत्यादौ दावर्जनादीकारो नास्ति, दात्तः। दाधति। धीतः। पिबति। अपात्। पिपासति। पेपीयते। पापेति, पापाति, पापीतः, पापति। पीत्वा। पीतम्। पाययति। अपीप्यत्। पातेस्तु अपासीत्। पायते। पातः। पालयति।

पै ओवै शोषणे। पायति। अपासीत्। पायते। पातः। पाययति। अपीपयत्। उद्वायति। उद्वातः।

म्लै। म्लायति। 'वा संयोगादेरस्थ' इति म्लेयात्, म्लायात्। 'आतोऽन्तस्थासंयोगादि'ति नत्वम्, म्लानः, म्लानिः। म्लापयति।

एवं ग्लै। इनि तु ग्लपयति, ग्लापयति। सोपसर्गस्य प्रग्लापयति।

ष्ट्यै स्त्यै द्वयोरुपादानादिह धात्वादेः षः सो न। ष्ट्यायति। तष्ट्यौ। स्त्यायति। तस्त्यौ। स्त्यानः। 'वा प्रस्त्यो मः', प्रस्तीमः, प्रस्तीतः।

क्षै। क्षायति। क्षामः।

घ्रा। जिघ्रति। अघ्रात्। अघ्रासीत्। 'घ्राध्मोरी', जेघ्रीयते। घ्रायते। 'ह्रीघ्रात्रोन्दनुदविदां वा', घ्रातः, घ्राणः। घ्रापयति। जिघ्रतेर्वा, अजिघ्रिपत [अजिघ्रपत्]।

ध्मा। धमति। ध्मायते। देध्मीयते।

म्ना। मनति। इति परस्मैपदिनः।

च्युङित्यादि। गाङ् श्यैङ्। गाते ३। अगास्त। गायते। गातः। श्यायते। शीतं घृतम्, शीतो वायुः। संश्यानो वृश्चिकः, शीतेन संकुचित इत्यर्थः।

मेङ्। प्रणिमयते। प्रमित्सते। प्रमेमीयते। मित्वा। यपीत्वं वेष्यते, अपमित्य, अपमाय। मितः।

त्रैङ्। त्रायते। त्रातः, त्राणः।

प्यैङ्। आप्यायते। आपिप्ये,। 'प्यायः पिः परोक्षायाम्।' इत्यात्मनेपदिनः।

वेञ्। वयति—०ते। 'वा परोक्षायां वेञश्च वयिः।' उवाय, ऊयतुः, ऊयुः। उवयिथ। ववौ, ववतुः, ववुः। 'स्वपिवची'त्यादिना संप्रसारणम्। ऊयात्। वावायते। ऊयते। उत्वा। प्रवाय। उतः। ऊः, उवौ, उवः। वाययति।

व्येञ् । व्ययति—०ते । 'न व्ययतेः परोक्षायामि'ति नाकारः, संविव्याय । अगुणे संप्रसारणमस्त्येव । संविव्यतुः, संविव्युः । संविव्ययिथ । 'न व्य[य]तेरट् थलोरि'ति सिद्धे परोक्षाग्रहणं ज्ञापयति संप्रसारणविधिरत्रानित्य इति, [तेन] संविव्ययतुरित्याद्यपि । वीयात् । वीयते । उपव्याय । 'संपरिभ्यां वे'ति संप्रसारणम् । संव्याय, संवीय । संवीतः । व्याययति ।

ह्वेञ् । ह्वयति—०ते । जुहाव, जुहुवतुः, जुहुवुः । जुहविथ, जुहोथ । अण्, आह्वत् । 'लिम्पादीनामात्मने पदे वा ।' आह्वत, आह्वास्त । हूयात् । रु० 'निसंव्युपेभ्यो ह्वा ।' निह्वयते इत्यादि । स्पर्द्धायामाङः, मल्लो मल्लमाह्वयते । जुहूषति । जोहूयते । आहूय । आहूतः । ह्वाययति । अजूहवत् । जुहावयिषति ।

अदादौ—भा । भाति । अभात्, अभाताम् । ह्यस्तन्यनि वा स्यात्, अभान्, अभुः ।

एवं यादयः । तत्रापि वा । वाति । निर्वातो वातः । वातादन्यत्र निर्वाणोऽग्निः । वाययति ।

वा जोऽन्तः, कम्पने पक्षे उपवाजयति । स्वमते वजतेः रूपम् ।

श्रा पाके । श्राति । श्रायत्यन्यत्र । शृतं क्षीरम्, शृतं हविः । श्राणा यवागूः । श्रपयति । पाकादन्यत्र श्रापयति ।

पा पाति । अपासीत् । पातः । पालयति ।

ला । लाति । लापयति । रु० 'पूजाभिभवयोश्च लातेः', चकाराद्विप्रलम्भने च । जटाभिरालापयते, पूजामुपगच्छतीत्यर्थः । श्येनो वर्त्तिकामुल्लापयते, अभिभवतीत्यर्थः । कस्तामुल्लापयते, विसंवादयतीत्यर्थः । 'लीलोर्नलावन्तौ स्नेहद्रवीकरणे' इति पक्षे घृतं विलाळयति । स्वमते ललतेः रूपम् ।

ख्या । ख्याति । अण्, आख्यत् ।

मा । माति । माङस्तु मिमीते, मिमाते, मिमते । दैवादिकस्य मीयते । मित्सति । मेमीयते । मित्वा । प्रमाय । मितम् ।

दरिद्रा । दरिद्राति । इकारो दरिद्रातेः, दरिद्रितः । दरिद्रियात् । चकास्ग्रहणमनेकस्वरोपलक्षणमित्याम्, दरिद्राञ्चकार । 'दरिद्रातेरसार्वधातुके' इत्याकारलोपः, परं 'यमिरमी'त्यादौ अन्तग्रहणात् दरिद्रातेरालोपो न स्यात्, आगमस्यानित्यत्वाद्विभाषैव, अदरिद्रीत्, अदरिद्रासीत् । दरिद्रिता । दरिद्यात् । दिदरिद्रिषति । दिदरिद्रासति । दरिद्र्यते । अदरिद्रिषातामित्यादि । दरिद्रयति । अददरिद्रत् ।

ओहाक् । ककारो 'हाग्रहोरवधौ न भवती'ति विशेषणार्थः । जहाति । 'उभयेषामीकारो व्यञ्जनादावदः ।' इत्वं वा वक्तव्यम्, जहितः, जहीतः, जहति । लोपः सप्तम्यां जहातेः, जह्यात् । हौ चात्वमित्वमीत्वं चेष्टम्, जहाहि, जहिहि, जहीहि । अजहुः । जिहासति । जेहीयते । इज्जहातेः क्त्वि, हित्वा । विहाय । हितम् । हीनम् । हाङस्तु जिहीते, जिहाते, जिहते । जाहायते । हात्वा । हानः । इति परस्मैपदिनः ।

डु दाञ् । ददाति, दत्तः, ददति । ददासि, दत्थः, दत्थ । ददामि, दद्वः, दद्मः । दत्ते, ददाते, ददते । दद्यात्, ददीत । देहि, दत्तात् । अददात्, अदत्ताम्, अददुः । भौवादिकस्य दाणो यच्छति । देङो दयते । दिवादौ दो अवच्छेदने, तस्य द्यति । एवं चतुर्णामसार्वधातुके तुल्यरूपं यस्य यत्पदं तस्य तदेव ज्ञेयम् । देङस्तु 'दिगि दयतेः परोक्षायाम् ।' दिग्ये, दिग्याते, दिग्यिरे । अदात्, अदाताम्, अदुः । अदित, अदिषाताम्, अदिषत । देयात् । दासीष्ट । रु० 'आङो दाञ् अनात्मप्रसारणे' इति, आदत्ते गृह्णातीत्यर्थः । तथा 'दाण् सा चेच्चतुर्थ्यर्थे', 'समस्तृतीयायुक्त' इति वर्त्तते, दास्या सम्प्रयच्छते स्वर्णं कामुकः, दास्यै ददातीत्यर्थः । दित्सति । देदीयते । दादेति, दादाति, दात्तः, दादति । दत्त्वा । प्रदाय । दत्तम् । द्यतेस्तु दित्वा दितम् । भ्वाद्यदाद्योर्दैप्-दापोस्तु दा संज्ञा प्रतिषेधार्थः पकारः । ताभ्यां दायति । दाति । अदासीत् । दायात् । दिदासति । दादायते । दात्वा । दातः ।

डु धाञ् । दधाति । 'तथोश्च दधातेरि'ति चकारात् 'सध्वोश्च' लुप्ताकारस्य धाञो सस्य धत्वं, धत्तः, दधति । धत्ते, दधाते, दधते । धत्से । दधातेर्हि, हित्वा । विधाय । विहितम् । शेषं दाञ्वत् । इत्युभयपदिनौ ।

दिवादौ–षो । स्यति । 'घ्राशाछासाधेटां वे'ति षछो सिच्लोपे, असात् असासीत् । सिषासति । सेसीयते । सित्वा । अवसितम् । साययति ।

छो । छ्यति । अच्छात् । अच्छासीत् । 'वा छाशोः', छित्वा, छात्वा । छितः, छातः । छाययति ।

एवं शो ।

क्र्यादौ–ज्या । 'ग्रहिज्ये(ज्ये)' त्यादिना सम्प्रसारणम् । जिनाति, जिनीतः, जिनन्ति । जिज्यौ, जिज्यतुः, जिज्युः । जिज्यिथ, जिज्याथ । जीयात् । जजीयते । जित्वा । जीनः । ज्यानिः ।

ज्ञा । जानाति, जानीतः, जानन्ति । जज्ञौ । रु० निह्नवे ज्ञा, शतमपजानीते, अपह्नुत इत्यर्थः । मम जानीते, ज्ञानार्थे करणे षष्ठी, मया जानातीत्यर्थः । संप्रतिभ्यामस्मृतौ, संजानीते, अभ्युपगच्छतीत्यर्थः । मातुः

संजानातीत्यत्र स्मृत्यर्थे न भवति । स्मृदृशीत्यादौ 'अननुज्ञाश्च विज्ञेयः' इति जिज्ञासते । घटादौ मारणतोषणनिशामनेषु ज्ञा, ज्ञपयति, मारयति, तोषयति, निशामयति चेत्यर्थः । जिज्ञापयिषति । चुरादौ 'ज्ञपमानबन्धश्चे'ति पाठात् ज्ञपयति चार्थम् । जिज्ञपयिषति । ज्ञीप्सति । 'ऋधिज्ञप्योरीरीतावि'तीत्वम् पक्षे ज्ञप्तः, ज्ञपितः ।

इत्यादन्ताः ।

इवर्णान्ताः । श्रि । श्रयति । श्रयेत् । शिश्राय, शिश्रियतुः, शिश्रियुः । शिश्रयिथ, शिश्रेथ । शिश्रय, शिश्राय । अश्रैषीत्, अश्रैष्टम्, अश्रैषुः । श्रीयात् । श्रेता । शिश्रीषति । शेश्रीयते । शेश्रेति, शेश्रितः, शेश्रियति । श्रीयते । शिश्रिये । 'नाम्यन्ताद्धातोराशीरद्यतनीपरोक्षासु धो ढः', सेट्सु विभाषा सिद्धा, शिश्रियिढ्वे-ध्वे । अश्रायि, अश्रेषाताम्, अश्रायिषातामित्यादि । श्रेता, श्रायिता । शिश्रिवान् । शिश्रियाणः । श्रित्वा । विश्रित्य । ईदन्तानां च तोऽन्तो न स्यात् । श्रितः । श्राययति । अशिश्रयत् ।

वि० जि । जयति । 'जेर्गिः सन्-परोक्षयोः', जिगाय । 'य इवर्णस्यासंयोगपूर्वस्यानेकाक्षरस्ये'तीयूबाधकं यत्वम्, जिग्यतुः, जिग्यथुः । जिगीषति । रु० 'विपराभ्यां जिः ।' विजयते । विजापयति ।

क्षि क्षये । क्षयति । क्षीणः । क्षितवान् । क्षितमनेन । प्रक्षितश्छात्रो भवता । क्षि निवासगत्योः, क्षिणु हिंसायामिति तुदादि-क्र्याद्योस्तु क्षियति, क्षिणाति । प्रक्षित्य । इति परस्मैपदिनः ।

स्मिङ् । स्मयते । सिस्मये । अस्मेष्ट । सिस्मयिषते । रु० 'हेतुकर्तृभीस्म्योरिन्', विस्मापयते । करणाद्भये न स्यात्, कुञ्चिकयैनं विस्मापयति, रूपेण विस्मापयति । वृद्धिरागमो हेतुकर्तृभय एवेष्यते ।

डीङ् । डयते । दैवादिकस्य डीयते । अडयिष्ट । डयिता । डयितः । 'न डीङ्शीदनुबन्धवेटामपी'त्यादौ डीङो दैवादिकस्य ग्रहणम् । तस्य तु ओदनुबन्धेषु पठितत्वात् डीनः । इत्यात्मनेपदिनौ ।

णीञ् । नयति-०ते । निन्ये । रु० 'पूजोत्क्षेपणोपनयनज्ञानभृतिविगणनव्ययेषु णीञ् ।' पूजा सन्मानम् । उत्क्षेपणं ऊर्ध्वप्रापणम् । उपनयनं आचार्यक्रिया । ज्ञानं प्रमेयनिश्चयः । भृतिः कर्ममूल्यम् । विगणनं ऋणादेर्निर्यातनम् । व्ययो धर्मादिषु विनियोगः । नयते शर्ववर्मा व्याकरणे पदार्थान्, उपपत्तिभिः स्थिरीकृत्य शिष्येभ्यः प्रतिपादयति । अभिलषितार्थसंपादनमेव तेषां पूजेत्यादि । 'कर्तृस्थामूर्त्तकर्मश्च', क्रोधं विनयते, शमयतीत्यर्थः ।

श्रिञ्। श्रयति–०ते। अशिश्रियत्। श्रयिता। 'न श्र्युवर्णवृतां कानुबन्धे' इति नेट्, श्रितः। श्रित्वा। शिश्रयिषति–०ते। शिश्रीषति–०ते।

टु ओश्वि। श्वयति–०ते। 'श्वयतेर्वे'ति संप्रसारणम्, शुशाव, शुशुवतुः, शुशुवुः। शुशविथ। शिश्वाय, शिश्वियतुः, शिश्वियुः। शिश्वयिथ। पक्षे अण्चणौ श्वेरद् वक्तव्यः, अश्वत्, अशिश्वियत्। अश्वयीत्। श्वयिता। शूयात्। शिश्वयिषति–०ते। शोशूयते। शेश्वीयते। शूयते। शूनः। श्वाययति। अशूशवत्, अशिश्वयत्। शुशावयिषति, शिश्वाययिषति। इत्युभयपदिनः।

अदादौ–वी। वेति, वीतः, वियन्ति। अवेत्, अवीताम्। अडा-गमेन अनेकाक्षरत्वादियादेशबाधकं यत्वम्, अव्यन्। वाययति। 'वेतेः प्रजने' इत्यात्वम्। पक्षे पुरोवातो गाः, प्रवापयति, गर्भं ग्राहयतीत्यर्थः। स्वमते टु वप् प्रजनेऽपि, प्रजनं गर्भग्रहणम्।

ञि भी। बिभेति। 'भियो वे'ति वचनादित्वं वा, बिभितः, बिभीतः। बिभ्यति। अबिभयुः। बिभयाञ्चकार। बिभाय। अभैषीत्। मा भैषीः। मा भैरित्यपि केचित्। रु० 'हेतुकर्तृभीस्म्योरिन्।' भियो हेतुभये वा पुक्, मुण्डो भापयते, मुण्डो भीषयते। स्वमते भातिरिनन्तो हेतुभयेऽपि वर्त्तते। 'भीषिचिन्ती'ति वचनाद् भियः षान्तता।

ह्री। जिह्रेति। जिह्रीतः। जिह्रियति। अजिह्रयुः। जिह्रयांचकार जिह्राय। ह्रीतः, ह्रीणः। ह्रेपयति।

कि। चिकेति। चिकितः। चिक्यति। अचिकयुः। इति परस्मैपदिनः।

शीङ्। शेते, शयाते, शेरते। शयिता। अजीर्यें शाशय्यते। शेशेति। 'शीङः सार्वधातुके।' अत्र शीङो ङानुबन्धोक्तत्वात् तदुक्तगुणो न स्यात्। 'न स्यनुबन्धे'त्यादिवचनात्। शेशीतः। शेश्यति। शयित्वा। अधिशय्य। शयितः।

दीधीञ्। आदीधीते, आदीध्याते, आदीध्यते। 'दीधीवेव्योरिवर्णय-कारयोः' इत्यन्तलोपः, आदीधीत। 'दीधिवेव्योश्चे'ति पञ्चम्यां न गुणः, आदीध्यै। आदीधिता।

एवं वेवीङ्।

दिवादौ–मीङ्। मीयते। मेता। मित्सते। मीनः।

दीङ्। उपदीयते। दीङोऽन्तो यकारः स्वरादावगुणे, उपदिदीये। उपदाता। दिदासते। दिदीषते इति केचित्। उपदायः। दीनः।

रीङ् श्रवणे। रीयते। रिणाति, क्र्यादौ। री रेषणे इत्यस्य रीणः। रेपयति।

लीङ् श्लेषणे। लीयते। लिनाति क्र्यादिपाठात्। 'गुणवृद्धिस्थाने यपि चान्वमि'ति केचित्। विलाता, विलेता। विलाय, विलीय। विलापयति। पक्षे 'लीलोर्नलावन्तौ स्नेहद्रवीकरणे', घृतं विलीनयति। स्वमते विलीनं करोतीति तीन्। 'विसंवादाभिभवयोर्लियः कारिते' इत्यात्वपक्षे रुचादित्वात् कस्त्वामुल्लापयते। श्येनो वर्तिकामुल्लापयते। स्वमते लातेरेवायं प्रयोगः। ली द्रवीकरणे। यौजादिकस्य विलाययति।

व्रीङ्। व्रीयते। व्रीणः। क्र्यादेस्तु व्रीणाति। व्रीतः।

प्रीङ् प्रीतौ। प्रीयते। प्राययति। क्र्यादौ प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च। अस्य प्रीणाति। प्रीणीते। 'धूञ्प्रीणात्योर्णः', इति प्रीणयति। प्रीञ् तर्पणे इति यौजादिकस्य प्राययति-०ते। प्रयति-०ते च। इत्यात्मनेपदिनः।

स्वादौ-हि। प्रहिणोति, प्रहिणुतः, प्रहिण्वन्ति। उकारलोपो वमोर्वा। प्रहिण्वः, प्रहिणुवः। प्रहिण्मः, प्रहिणुमः। द्वौ प्रहिणु। 'हेरचणी'ति वक्तव्यादभ्यासात् हेर्घिः। प्रजिघाय। प्रजीहयत्।

चिरि। जिरि। चिरिणोति। चिरयाञ्चकार। चिरयिता।

एवं जिरि। इति परस्मैपदिनः।

डु मिङ्। मिनोति, मिनुते। क्र्यादौ मीञो मीनाति, मीनीते। 'मीनाति-मिनोति-दीङां गुणवृद्धिस्थाने' इत्यात्वम्। मिमौ, मिम्यतुः, मिम्युः। अमासीत्। प्रमाता। दैवादिकस्य मीङो मीयते। मेता। प्रमित्सति-०ते। प्रमाय। मी गताविति यौजादिकस्य माययति। मयति।

चिञ्। चिनोति। चिनुते। 'चेः किर्वे'ति सन्परोक्षयोः चिकीर्षति, चिचीर्षति। चिकाय, चिचाय। चाययति। 'चिस्फुरोर्णौ वे'त्यात्वम्। पक्षे चापयति। स्वमते चयनेऽपि चपते रूपम्।

षिञ्। सिनोति, सिनुते। क्र्यादिकस्य सिनाति, सिनीते।

क्र्यादौ-डु क्रीञ्। क्रीणाति, क्रीणीतः, क्रीणन्ति। क्रीणीते, क्रीणाते, क्रीणते। रु० 'परिव्यवेभ्यः क्रीञ', परिक्रीणीते इत्यादि। क्रापयति। इत्युभयपदिनः।

इति इवर्णान्ताः।

उदन्ताः यथा-दु गतौ। दवति। दुदाव, दुदुवतुः, दुदुवुः। दुदविथ, दुदोथ। दुदव, दुदाव, दुदविव, दुदविम। अदौषीत्। दोता। दूयात्। दूयते। अदावि। अदोषाताम्, अदाविषातामित्यादि। दोता, दाविता। दुदू-

षति । दोदूयते । दोदवीति । दोदोति, दोदुतः, दोदुवति । दुदुवान् । दुदुवानः । दुत्वा । संदुत्य । दुतः । दावयति । 'इनि यत्कृतं तत्सर्वं स्थानिवद्' इति न्यायात् दु इति द्विर्वचने अदूदुवत् । दुदावयिषति ।

वि० द्रु । द्रवति । 'सृवृभृस्तुद्रुस्रुश्रुव एव परोक्षायाम्' इत्यनिट् । दुद्रुम । थलि तु पूर्ववत् । 'श्रीद्रुस्रु'इत्यादिना चण् । अदुद्रवत् । द्रावयति । अदुद्रवत् । 'श्रुद्रुस्तुप्रुप्लुच्युङां वा वक्तव्यम् ।' दिद्रावयिषति । दुद्रावयिषति ।

एवं स्तु ।

श्रु श्रवणे । शृणोति, शृणुतः, शृण्वन्ति । शुश्रुव । अश्रौषीत् । रु० 'समोऽकर्मकः ।' संशृणुते, अंगीकरोतीत्यर्थः । रुचादौ 'श्रुरनाङ् प्रती'ति । सनन्तात् शुश्रूषते । शिश्रावयिषति, शुश्रावयिषति ।

षु प्रसवे । सवति । अदादिकेन सौति, सुतः, सुवन्ति । सुञ् अभिषवे इति सौवादिकेन सुनोति । सुनुते । उपसर्गात् 'सुनोति-सुवति-स्यति-स्तौति-स्तोभतीनामडभ्यासान्तरेऽपी'ति षत्वम्, अभ्यषुणोत् । 'स्तुसुधुञ्भ्यः परस्मै' इति सिचीट्, प्रासावीत् । सोता । इति परस्मैपदिनः ।

कुङ् । कवते । अकोष्ट । 'न कवतेश्चेक्रीयिते', कोकूयते खरः । कौति-कुवत्योस्तु चोकूयते ।

रुङ् । रवते । रोता । रौतेस्तु रविता । 'उवर्णस्य जान्तस्थापवर्गपरस्यावर्णे' इतीत्वम्, रिरावयिषति । अरीरवत् ।

अदादौ–ह्नुङ् । अपह्नुते, अपह्नुवाते, अपह्नुवते । इत्यात्मनेपदिनः ।

यु । यौति, युतः, युवन्ति । युहि । यविता । 'इवन्तर्धे'त्यादिना सनि वेट्, यियविषति, युयूषति । 'न श्र्युवर्णवृतां कानुबन्धे' इति नेट्, युत्वा । युतम् ।

णु । नौति । 'तुरुणुस्तुल्य ई वानदी ।' नुतः, नुवन्ति । प्रणविता । 'उवर्णान्ताच्चे'ति सनि नेट्, नुनूषति । नुत्वा । नुतः । आङो रु० आनुते शृगालः, उत्कण्ठापूर्वं संशब्दनं करोतीत्यर्थः ।

क्ष्णु । क्ष्णौति । क्ष्णविता । चुक्ष्णूषति । क्ष्णुत्वा । क्ष्णुतम् । रु० समः क्ष्णु । संक्ष्णुते शस्त्रम्, उत्तेजयतीत्यर्थः । एवं स्नुनमौ स्वयं प्रस्नुते गौः, स्वयमेव पयो मुञ्चतीत्यर्थः ।

टुक्षु रु कु शब्दे । क्षौति । क्षविता । चुक्षूषति । क्षुतम् । रौति । रवीति । रविता । रुरूषति । रुतम् । कौति । कोता । कौति शब्दमात्रे । कुवतिरार्त्तस्वरे । कवतिरव्यक्ते शब्दे ।

हु। जुहोति, जुहुतः, जुह्वति। जुहुधि। अजुहवुः। जुहवाञ्चकार। जुहाव। इति परस्मैपदिनः।

ष्टुञ्। स्तौति, स्तवीति, स्तुतः, स्तुवन्ति। स्तुते, स्तुवाते, स्तुवते। तुष्टाव। तुष्टुवे। तुष्टु। पक्षे 'सिचीट्' अस्तावीति।

स्वादौ – धुञ् कम्पने। धुनोति। धुनुते। प० 'सिचीट्।' अधावीत्। इत्युभयपदिनौ।

तुदादौ – [गु] गुवति। कुटादित्वात्। गुता। गतौ भौवादिकस्य गवते। गोता।

एवं ध्रु। भौवादिकस्य ध्रवति। ध्रोता। इति परस्मैदिनः।

कुङ्। कुवते। कुता। अन्यत्र कोता। कश्चिद् दीर्घान्तमाह। "आकूतमस्याः प्रतिभाति रुच्य"मिति। इत्यात्मनेपदी।

क्र्यादौ – स्कुञ्। स्कुनाति। स्कुनीते। स्कुनोति। स्कुनुते।

युञ्। युनाति। युनीते। योता। यौतेस्तु (स्तु?) यविता। इत्युभयपदिनौ।

इत्युदन्ताः।

ऊदन्ताः। भू। भवति। भवेत्। 'अस्तेश्च भूः।' 'भुवो वोऽन्तः परोक्षाद्यतन्योरि'ति विभक्तिस्वरे बभूव, बभूवतुः, बभूवुः। बभूविथ। बभूविव –०म। अभूत्, अभूताम्, अभूवन्। भविता। भूयते। 'भवतेरः', अत्र कर्तृनिर्देशाद् भावकर्मणोरत्वं नेक्ष्यते, तेन बुभूवे। अन्वभावि। अन्वभविषाताम्, अन्वभाविषाताम्, इत्यादि। बुभूषति। बोभूयते। बोभवीति, बोभोति, बोभूतः। बोभुवति। भुवो व्यक्त्यन्तरेऽपि सिचो लुगस्त्येव। 'अभुव' इत्यनु सः प्रतिषेधो वोऽन्तश्च नास्ति। अबोभूत्, अबोभूताम्, अबोभुवुः। बभूवान्। बभूवानः। भूत्वा। भूतः। भावयति। बिभावयिषति। इति परस्मैपदी।

पूङ्। पवते। पुपुवे। अपविष्ट। पविता। 'स्मिङ्पूङ्' इत्यादि नेट्, पिपविषते। 'पूङ्क्लिशोर्वा', पूत्वा, पवित्वा। पूतः, पवितः। क्र्यादिपाठात् पुनाति। पुनीते। पूतः। पुपूषति।

अदादौ – षूङ् प्राणगर्भविमोचने। सूते। सुवाते। सुवते। 'सूतेः पञ्चम्यामि'त्यगुणित्वम्, सुवै। चेक्रीयितलुगि सोषवाणि; सूतेरत्र तिपोक्तत्वात् तदुक्तगुणप्रतिषेधो नास्ति।

षूङ् प्राणिप्रसवे इति दैवादिकस्य सूयते। 'स्वरति-सूति-सूयत्यूदनुबन्धादि'ति वेट्, सोता, सविता। षू प्रेरणे इति तौदादिकस्य सुवति।

सविता । सूत्वा । सूतः । दैवादिकस्य प्रसूनः, प्रसूनवान् । इत्यात्मनेपदिनः ।

ब्रूञ् । ब्रवीति, ब्रूतः, ब्रुवन्ति । ब्रवीषि, ब्रूथः, ब्रूथ । 'आहो ब्रुवस्तु पञ्चानामि'ति त्यादीनामडादयो निपात्यन्ते, आह, आहतुः, आहुः । आत्थ, आहथुः । ब्रूते, ब्रुवाते, ब्रुवते । अब्रवीत् । असार्वधातुके ब्रुवो वचिः, उवाच । ऊचे । इत्युभयपदी ।

तुदादौ – णू स्तवने । नुवति । कुटादित्वात् अनुवीत् । नुविता । नुनूषति । नूतः । इति परस्मैपदी ।

क्र्यादौ – लू । लुनाति । लुनीते । लविता । लुलूषति । लूनः । लूनिः । लिलावयिषति ।

धूञ् कम्पने । धुनाति, धुनीते । धविता । दुधूषति । धूनः । कश्चित् स्वादावपि पठति, तदा धुनोति । धुनुते । धूतः । धूनयति । चौजादिकस्य धावयति । कश्चित् धूनयति । धवति । धवते । धू विधूनने इति तौदादिकस्य धुवति । अधुवीत् । धुविता । धूतं वनम् । धावयति ।

इत्यूदन्ताः ।

ऋदन्ताः । गॄ । गरति । जगार, जग्रतुः, जग्रुः । जगर्थ । जगर, जगार । जग्रिम । अगार्षीत्, अगार्ष्टाम्, अगार्षुः । गर्त्ता । 'हन्नृदन्तात्स्ये' इतीट्, गरिष्यति । ग्रियात् । ग्रियते । जग्रे । अगारि, अगृषाताम्, अगारिषातामित्यादि । गृषीष्ट, गारिषीष्ट । गरिष्यते, गारिष्यते । जिगीर्षति । जेग्रीयते । जेग्रयीति । जेग्रेति । जेग्रीतः । जेग्रियति । जगृवान् । जग्राणः । गृत्वा । विगृत्य । गृतं । गारयति ।

वि० सृ वेगे धावति । अन्यत्र प्रियामनुसरति । असार्षीत् । आदादिकस्य । ससर्त्ति । असरत् । ससृम ।

स्मृ । स्मरति । सस्मार । 'ऋतश्च संयोगादेरि'ति परोक्षायामगुणे गुणः, सस्मरतुः । सस्मरुः । 'गुणोऽर्त्तिसंयोगाद्योरि'ति ये स्मर्यात् । स्मर्यते । अस्मारि । अस्मृषाताम् । तथा ।

'ऋद्वृञ्वृङां सनीड्वा स्यात्, आत्मने च सिजाशिषोः ।
संयोगादेर्ऋतो वाच्यः, सुङसिद्धो बहिर्भवः ।

इति अस्मरिषाताम्, अस्मारिषाताम् इत्यादि । स्मृषीष्ट, स्मरिषीष्ट, स्मारिषीष्ट । 'उरोष्ठ्योपधस्य च', 'स्मृदृशी तु', 'सनन्तौ त्वि'ति रुचादित्वात् सुस्मूर्षते । पक्षे सिस्मरिषति । स्मरणादन्यत्र विस्मारयति । अससमरत् । 'अत्वरादीनां च ।'

स्वृ। स्वरति। स्वर्त्ता। स्वरिता। स्वरिष्यति। रु० समोऽकर्मकः, संस्वरते इति परस्मैपदिनः।

धृञ् धारणे। धरति। धृङ् अवध्वंसने इत्यत्र धरते। धृङः अनवस्थाने इति तौदादिकस्य ध्रियते, इरन्यगुणे।

हृञ्। हरति-०ते। रु० गत्यनुकरणे हृञ्। पैतृकमश्वा अनुहरन्ते, पितुरागतं पैतृकम्, पितृवत् अश्वा गच्छन्तीत्यर्थः। हृ प्रसह्यकरणे इत्यादादिकस्य जहर्त्ति। अजहरुः।

भृञ्। भरति-०ते। डु भृञित्यादादिकस्य बिभर्त्ति, बिभृतः, बिभ्रति। बिभृते। अबिभः, अबिभृताम्, अबिभरुः। बिभराञ्चकार, बभार। बिभरिषति, बुभूर्षति। बोभूर्यते। भ्रियते। इत्युभयपदिनः।

अदादौ–घृ, घर्त्ति। ह्य० दिस्योः, अजघः।

पृ पालनपूरणयोः। पिपर्त्ति। अपिपः। पृ प्रीताविति सौवादिकेन पृणोति। पृङ् व्यायामे इति तौदादिकेन व्याप्रियते। पृ पूरणे इति चौरादिकेन पारयति।

जागृ। जागर्त्ति, जागृतः, जाग्रति। अजागः, अजागृताम्, अजागरुः। जागराञ्चकार। जजागार। अजागरीत्। जागरिता। जागर्यात्। जागराञ्चक्रे। जजागरे। अजागारि, अजागरिषाताम्, इत्यादि। जागराञ्चकृवान्। जजागर्वान्। जागराञ्चक्राणम्। जजागरणम्। जागरितः। जागरयति। अजीजागरत्। अनेकव्यवहितेऽपि लघुनि स्यादेवेति 'गतमि'ति सन्वद्भावो दीर्घश्च। इति परस्मैपदिनः।

स्वादौ–स्तृञ्। स्तृणाति। स्तृणुते। तस्ता।

वृञ् वरणे। वृणोति। वृणुते। क्र्यादौ वृङ् संभक्तावित्यस्य वृणीते। 'वृव्येऽदां नित्यमिट् थली'ति ववरिथ। ववृम। अवारीत्, अवारिष्टाम्, अवारिषुः। 'ऋतोऽवृङ् वृञ' इति सेट्त्वेऽपि।

"ऋद्वृञ्वृङां सनीड् वा स्यादात्मने च सिजाशिषोः।"

अपरं च।

"ऋद्वृञ् वृङोऽपि वा दीर्घो न परोक्षाऽऽशिषोरिटः।

न परस्मै सिचि प्रोक्त इति योगविभञ्जनात्।" इति।

अवृत। अवरिष्ट, अवरीष्ट। वृषीष्ट, वरिषीष्ट। वरिता, वरीता। विवरिषति, वुवूर्षति। व्रियते। वृतम्। इत्युभयपदिनः।

तुदादौ–दृङ्। आद्रियात्।

मृङ्। म्रियते। रु० 'आशीर्ल्यतन्योश्च मृङ्', चकारादनि च, आत्मनेपदिनोऽप्यस्य नियमार्थमिदम्, अन्यत्र परस्मैपदमेव। तर्हि परस्मैपदमुच्यताम्, सत्यम्, ऋदन्तत्वात्तैः सह पठितत्वान्न दोषः। ममार। अमृत। मृषीष्ट। मरिष्यति। मुमूर्षति।

तनादौ–डुकृञ्। करोति, कुरुतः, कुर्वन्ति। करोषि, कुरुथः, कुरुथ। करोमि, कुर्वः, कुर्मः। कुरुते, कुर्वाते, कुर्वते। कुर्यात्। कुर्वीत। चकार, चक्रतुः, चक्रुः। चकर्थ। चकृम। 'सुड् भूषणे सम्पर्युपात्,' संचस्कार, संचस्करतुः, संचस्करुः। संचस्करिथ। संचस्करिम। अकार्षीत्। समस्कार्षीत्। पर्यस्कार्षीत्। अडभ्यासव्यवधानेऽपि षत्वमिष्यते। रु० 'सूचनाऽवक्षेपण-सेवन-साहस-प्रतियत्न-कथोपयोगेषु कृञ्।' सूचनमपकारप्रयुक्तं परदोषाविष्करणम्। अवक्षेपणं तिरस्करणम्। सेवनमनुवर्त्तनम्। साहसं यदबुद्धिपूर्वकं करणम्। प्रतियत्नः सतो गुणान्तरापादनम्। कथा आख्यानम्। उपयोगो धर्मादिप्रयोजने द्रव्यस्य विनियोगः। सूचने अयमिदमुपकुरुते इत्यादि। अधेः शक्तौ, शत्रूनधिकुरुते,ताननभिभवतीत्यर्थः। 'वेः शब्दकर्मकः', क्रोष्टा विकुरुते स्वरान्। अकर्मकश्च, वैरित्येव विकुरुते। अनुकरोति, पराकरोतीति नित्यं वक्तव्यम्।

इति ऋदन्ताः।

ॠदन्ता यथा–तॄ। तरति। ततार। तॄ प्लवन-तरणयोः। 'तॄ फले'त्यादिना तेरतुः, तेरुः। तरिथ। अन्येषां नेत्वमभ्यासलोपश्च। अतारीत्, अतारिष्टाम्, अतारिषुः। तरिता, तरीता। तीर्यात्। तीर्यते। अतारि। अतीर्षातां अतरिषातां अतरीषातां अतारिषातामित्यादि। तीर्षीष्ट तरिषीष्ट तारिषीष्ट। तरिष्यते तरीष्यते तारिष्यते। तितरिषति तितीर्षति। "ऋदूवृञ् वृङां सनीड् वा स्यात्०" अत्र श्लोके "ॠदूवृञ्वृङोऽपि वा दीर्घो०" अत्र श्लोके यदुक्तं तदिदमुदाहृतम्। तेतीर्यते। तातरीति। तातर्त्ति। तातीर्त्तः। तातिरति। तीर्त्वा। वितीर्य। तीर्णः। तीर्णिः। तेरिवान्। तेराणः। अन्येषां तु यथा जिगीर्वान्, जिगिराणः।

दिवादौ–जॄ। जीर्यति। जजार, जेरतुः, जजरतुः। अजरत्, अजारीत्। जरा। जरयति। क्रैयादिकेण जृणाति। 'जॄव्रश्च्योरिट्', जरित्वा। जीर्णः। जारयति।

तुदादौ–कॄ। किरति। 'स्मिङ् पूङि'त्यादिना नित्यमिट्, चिकरिषिति। रु० अपस्किरः, अपस्किरते वृषभो हृष्टः। अपस्किरते कुक्कुटो

भक्ष्यार्थी । अपस्किरते श्वा निवासार्थी । अपाचतुष्पाच्छकुनिषु हृष्ट-भक्ष्य-निवासार्थेषु किरतेः सुडागमः ।

गॄ निगरणे । 'वा स्वरे लत्वम्', गिरति, गिलति । 'स्मिङी'त्यादिना नित्यमिट्, जिगरिषति । निजेगिल्यते । रु० 'अवाद्गिर्', अवगिरते । 'समः प्रतिज्ञायाम्', शतं संगिरते । अङ्गीकरोतीत्यर्थः ।

क्र्यादौ – गॄ शब्दे । गृणाति । जिगरिषति, जिगीर्षति । जेगीर्यते ।

पॄ । पृणाति । पोपूर्यते । पूर्यते । पूर्त्तः ।

दॄ । दृणाति । दरयति । भयादन्यत्र विदारयति ।

स्तॄञ् । स्तृणाति । स्तृणीते । अस्तृणीत । अतस्तरत् ।

वॄञ् । वृणाति । वृणीते । वूर्णः ।

इति ॠदन्ताः ।

इति त्यादिप्रक्रमे पञ्चमः स्वराधिकारः ।

*

यिन् आयि काम्य इन् – एते चत्वारः प्रत्ययाः । अथ तदन्ता नामधातवः कथ्यन्ते । यिन् यथा–'यङ्यवर्णस्ये'तीकारः । आत्मेच्छायाम्–घटमिच्छति घटमिवाचरति इत्यर्थे घटीयति । घटीयाञ्चकार । अघटीयीत् । घटीयिता । घटीय्यते । अघटीयि । घटीयन् । जिघटीयिषति ।

एवं पुत्रीयति । 'नामधातोराद्यस्य द्वितीयस्य तृतीयस्य क्रमेण युगपद्वा', पुपुत्रीयिषति, पुतित्रीयिषति, पुत्रीयियिषति, पुपुतित्रीयियिषति ।

अश्वीयति । 'क्वचिद् द्वितीय-तृतीययोरि'ति अशिश्वीयिषति, अश्वीयियिषति ।

इन्द्रीयति । ऐन्द्रीयीत् । इन्दिद्रीयिषति ।

अशनायोदन्यधनाया बुभुक्षापिपासाकांक्षासु निपाता रूढाः । अशनमिच्छति भोक्तुम्, अशनायति । उदकमिच्छति पातुम्, उदन्यति । धनमिच्छति तृष्णक् धनायति । अन्यत्र अशनमिच्छति दातुम्, अशनीयति । उदकमिच्छति स्नातुम्, उदकीयति । धनमिच्छति दातुम्, धनीयति ।

मालामिच्छति मालीयति ।

'नाम्यन्तानां यणायियिन्नाशीर्ङ्विचेक्रीयितेषु ये दीर्घः', अग्रीयति पटूयति ।

ऋत ईदन्तश्चिवचेक्रीयितयिन्नायिषु, पित्रीयति ।

ओतो यिन्नायी स्वरवत्, औतश्च, गव्यति नाव्यति ।

नलोपश्च, विद्वस्यति, राजीयति, पथीयति । पुंस्यतीति नियमः किम्? दीव्यतीत्यादि । कथं चतुर्यति, अनडुह्यति, गीर्यति, धूर्यति, शब्दाश्रयत्वाद्धि नियमः । सर्पिष्यति, धनुष्यति, षत्वं स्यादेव ।

आयिर्यथा-हंस इवाचरति हंसायते । हंसायाञ्चक्रे । अहंसायिष्ट । हंसायिता । हंसाय्यते । अहंसायि । जिहंसायिषते । हंसायमानः । वा आयेश्च लोपः । 'आद्यन्ताद्ये'त्यन्तग्रहणादायिलोपे न तल्लक्षणमात्मनेपदम् । हंसति । हंसाञ्चकार । हंसिता । हंसन् ।

एवं मालेवाचरति मालायते, मालाति । मालिता । मालान् ।

नामि व्यजनान्तादायेरादेः, अग्नीयते, अग्नयति । विभूयते । विभवति ।

ऋत ईदन्तः, पित्रीयते पितरि (°रति?) । रैयते रायति । गव्यते गवति । नाव्यते नावति । विधुरर्कति, चन्दनमनलति, मित्राणि रिपवन्ति, "वक्रे वेधसि, विधुरे चेतसि विपरीतानि भवन्ति" इत्यादिप्रयोगाश्च दृश्यन्ते । 'न लोपश्चे'ति विद्वस्यते इत्यादि पूर्ववत् । ओजायते, अप्सरायते, पयायते, पयस्यते ।

ओजसोऽप्सरसो नित्यं पयसस्तु विभाषया ।
आयिलोपश्च विज्ञेयो न चाश्वो गर्दभत्यपि ॥

भाषितपुंस्कं पुंवदायौ, ब्राह्मणीवाचरति ब्राह्मणायते । विदुषीवाचरति विद्वस्यते ।

काम्य यथा-पुत्रमिच्छति पुत्रकाम्यति । पुत्रकामाञ्चकार । पुत्रकामिता ।

इन् यथा-'इनि लिङ्गस्यानेकाक्षरस्यान्त्यस्वरादेर्लोपः ।' गृह्णात्यर्थे-हलिं गृह्णाति हलयति । कलयति । 'हलि-कल्योरत्', अजहलत्, अचकलत् । वर्णयति । त्वचयति ।

तत्करोति तदाचष्टे, मुण्डं करोति मुण्डयति । मिश्रयति ।

'रशब्द ऋतो लघोर्व्यञ्जनादेः', पृथु प्रथयतीत्यादि ।

इनिङ् अङ्गनिरसनेऽपि, हस्तौ निरस्यति पादौ निरस्यति हस्तयते पादयते । इनिङोऽपि कारितसंज्ञकत्वात् 'कारितस्यानामिङ् विकरणे' इति कारितलोपो भवत्येव ।

यणि हस्यते । पाद्यते ।

'श्वेताश्वाश्वतरगालोडिताह्वरकाणामश्व-तरे-त-कलोपश्च', चकारादिनिडत्र । श्वेताश्वमाचष्टे तेनातिक्रामति वा श्वेतयते । अश्वतरमाचष्टे अश्वयते । एवं गालोडयते आह्वरयते । बहुलत्वादिन्नपि, श्वेतयतीत्यादि ।

'मन्तु-वन्तु-विनां लुग् च', इनिडिह न स्मर्यते, ईशानमीट् क्विप्, ईडस्यास्तीति मन्तुप्रत्ययः, ततः ईण्मन्तमाचष्टे इतीति कृते मन्तोर्लुक्, 'निमित्ताभावे' इत्यादिना प्रकृतेरेव रूपे स्थिते ईशयति । एवं गोमन्तमाचष्टे गवयति । शुग्वन्तमाचष्टे शुचयति । स्रग्विणमाचष्टे स्रजयति ।

'प्रशस्यस्य श्रः, वृद्धस्य च ज्यः', चकारात् प्रशस्यस्य ज्यादेशः, प्रशस्यमाचष्टे श्रापयति, ज्यापयति । वृद्धमाचष्टे ज्यापयति । 'एकस्वराणामदन्तानां चे'त्यापागमः ।

'अन्तिक-बाढयोर्नेदसाधौ ।' अन्तिकमाचष्टे नेदयति । बाढमाचष्टे साधयति ।

'युवाल्पयोः कन् वा ।' युवानमाचष्टे कनयति युवयति । अल्पमाचष्टे कनयति अल्पयति ।

'स्थूल-दूर-युव-क्षिप्र-क्षुद्राणामन्तस्थादेर्लोपो गुणश्च ।' स्थूलमाचष्टे स्थवयति । एवं दूर दवयति । युवन् यवयति । क्षिप्र क्षेपयति । क्षुद्र क्षोदयति ।

'बहोर्यादिर्भू च', बहु भूययति ।

'प्रियस्थिरस्फिरोरुगुरुबहुलतृप्रदीर्घह्रस्ववृद्धवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवरगरबंहत्रेपद्राघह्रसवर्षवृन्दाः ।' प्रियमाचष्टे प्रापयति । एवं स्थिर स्थापयति । स्फिर स्फापयति । ऊरु वरयति । गुरु गरयति । बहुल बंहयति । तृप्र त्रेपयति । दीर्घ द्राघयति । ह्रस्व ह्रसयति । वृद्ध वर्षयति । वृन्दारक वृन्दयति ।

'तद्वदिष्ठेमेयःसु बहुलम्', तस्मिन्निव तद्वत्, इनीवेत्यर्थः, इत्यादि पूर्वोक्तम् । इनि यत्कृतं तदिष्ठ-इमन्-ईयःस्वपि भवति । यथा पटुमाचष्टे 'अन्त्यस्वरादिलोपे' पटयति । अयमेषामतिशयेन पटुः पटिष्ठः । पटोर्भावः पटिमा । अयमनयोरतिशयेन पटुः पटीयान् । इत्थमन्त्यस्वरादिलोपे मन्त्वादि लुक्, 'प्रशस्यस्य श्रः' इत्याद्यादेशश्च सर्वमेत-

दिष्टादिप्रत्ययेषु बोद्धव्यम् । 'सत्यार्थवेदानामन्त आपकारित एव', सत्यमाचष्टे सत्यापयति, अर्थापयति, वेदापयति । कथं कारापयति । एवमन्येऽपि घञन्ताः, यथा–पठनं पाठः, पाठस्यापः, तं करोतीति पाठापयतीत्यादि ।

इति त्यादिप्रक्रमे षष्ठः प्रत्ययान्तनामाधिकारः । ग्रं० ९१० ॥

※

इति ठ० संग्रामसिंहविरचितायां बालशिक्षायां त्यादिप्रक्रमोऽष्टमः । सर्वग्रं० १८५० ।



सदोपकार्यात्साध्योऽयं लक्षणद्रव्यसंग्रहः ।
सार्द्धाष्टादशशत्यंकोऽप्यक्षयः सन् तदर्थिनाम् ॥ १ ॥

मुञ्चन्ति मुक्ता जलजन्तवोऽपि, स्वात्यम्भसां तल्ललितं न तेषाम् ।
यच्चोपला अप्यमृतं श्रवन्ते, तद्वल्गितं चन्द्रमसः कराणाम् ॥ २ ॥
सतां प्रसादः स हि यन्मयाऽपि, श्रीमालवंश्येन कृतिः कृतेयम् ।
साढाकभू-ठक्कुरकूंरसिंहपुत्रेण षँट्त्रिँत्रिँयुतैकँवर्षे (१३३६) ॥
बहूनि शास्त्राणि विलोक्य तावत्, विनिर्मितेयं महतोद्यमेन ।
संशोधिता सद्भिरथापि शोध्या, सल्लक्षणं क्षोदसहं सहैव ॥ ४ ॥

यावद्धत्ते गगनसरसी राजहंसप्रचारं
मेरुश्चाग्निर्वरदिनवधू शर्वरी मङ्गलानि ।
तावद्बोधं भृति विदधती बालशिक्षा सदैषा
जीयाद् योगादतिमतिमतां वर्द्धमानाऽधिकश्रीः ॥ ५ ॥

॥ इति प्रशस्तिः परिपूर्णा ॥

*
* *

बालशिक्षाव्याकरणस्याकाराद्यनुक्रमेण सूत्रसूचिः ।

T CC-0. RORI. Digitized by Sri Muthulakshmi Research Academy

॥ इति श्रीबालशिक्षाव्याकरणस्याकाराद्यनुक्रमेण सूत्रसूचि सम्पूर्णा ॥

बालशिक्षाव्याकरणस्याकाराद्यनुक्रमेण धातुरूपसूचिः ।

॥ इति श्रीबालशिक्षाव्याकरणस्याकाराद्यनुक्रमेण धातुरूपसूचिः ॥

बालशिक्षाव्याकरणस्याकाराद्यनुक्रमेण पारिभाषिकशब्दसूचिः ।

T

॥ इति श्रीबालशिक्षाव्याकरणस्याकाराद्यनुक्रमेण पारिभाषिकशब्दसूचिः ॥

बालशिक्षाव्याकरणस्याकाराद्यनुक्रमेण भाषाशब्दसूचिः ।

क्रमाङ्काः	शब्दरूपाणि	पृष्ठाङ्काः
३९६	भांजइ भनक्ति ।	५३
३९७	भांवइ प्रतिभासते ।	१४
	प्रतिभाति, रोचते वा ।	४८
३९८	भीजइ क्लिद्यते ।	४६
३९९	भोष (ख) इ भिक्षति ।	४७
४००	भूराई भूतराजः ।	४७
४०१	भेटइ सभाजयति ।	४८
४०२	भोगल भुजार्गला ।	४८
४०३	मथइ मथ्नाति मथति ।	५०
४०४	मनावइ सांत्वयति ।	५०
४०५	मरइ म्रियते विपद्यते ।	५२
४०६	मरदइ मृद्नाति ।	५२
४०७	मलइ मलते वा ।	५२
४०८	मसाहणो महासाधनिक ।	४६
४०९	मसिहाईउ मातृष्वस्रीयः ।	४६
४१०	मांकइ मंकते	६०,५३
४११	मांजइ मार्ष्टि ।	५२
४१२	मागइ याचते वा ।	५४
४१३	माचइ माद्यति ।	२४,४९
४१४	मानइ मन्यते ।	५०
४१५	मायइ माति, मिमीते ।	४९
४१६	मारइ मारयति ।	५३
४१७	माहरउं मदीयम् ।	४५
४१८	मोचइ मीलयति निमीलयति	४६,५०
४१९	मुखामुखि मुखामुख्यता ।	४६
४२०	मुलइ मृद्न लुनाति, मृदुलयति ।	४९
४२१	मांहियां मुधा ।	४५
४२२	मूसरीषउं मादृशः ।	४५
४२३	मूहइ मुह्यति ।	४९
४२४	मदेइ भिनत्ति, भिन्ते ।	५१
४२५	मेराईउ मेराद्यकम् ।	४६
४२६	मेल्हई मुंचति ।	५४
४२७	मेहरु मेहत्तरः ।	४७
४२८	मोकलई मुत्कलति, विसृजति प्रहिणोति ।	५१
४२९	मोकलवाई मुत्कलानुयति, आपृच्छते अपि च ।	५३
४३०	यसउ एतादृशः ।	४५
४३१	यिम यथा ।	४५
४३२	रंजइ रंजयत्ययम् ।	८६,५३
४३३	रउडउ खाट (?) ।	४६
४३४	रमई क्रीडति, दीव्यति, रमते ।	५०
४३५	रहई तिष्ठति रहति ।	५४
४३६	राउलवायु राजकुलायत्तः ।	४६
४३७	रावइ रच्यते ।	५४
४३८	राष(ख)इ रक्षति, गोपायति, पाति, त्राति, त्रायते, अवति च ।	४७
४३९	रुंधइ रुणद्धि, रंद्धे ।	५०
४४०	रूसइ रुष्यति ।	४९
४४१	रोअइ रोदति, परिदेवयति ।	५०
४४२	लहइ लभते ।	४२,५
४४३	लांषइ अस्यति, निरस्यति, क्षिपति	२६।४९
४४४	लाजइ जिह्लति, मज्जते, त्रपते	
	१८। व्रीडयति ।	८४

क्रमाङ्काः	शब्दरूपाणि	पृष्ठाङ्काः
४९२	विढइ विध्यति, कलहायते ।	४९
४९३	विणसइ विनश्यति ।	४७
४९४	विमासइ विमृशति ।	४७
४९५	वियारिउ विप्रतारिकः	४७
४९६	विलोजवइ वेः ।	५३
४९७	विसाहइ विसाधयति क्रीणाति; क्रीणीते ।	५१
४९८	विस्तरइ विपूर्वो तु थु ।	५०
४९९	विस्तारइ विस्तरति, विस्तारयति, तनोति-ते ।	४०.५०
५००	विहुंचइ विभजति ।	५१
५०१	विहडइ विघटते वेः ।	५०
५०२	विहाइ विभाति ।	५३
५०३	वटींइ वेष्टते ।	६३ ५१
५०४	वींधइ विध्यति ।	४९
५०५	वीआरइ विप्रतारइ (य१)ति	५९ ५१
५०६	वीकइ विक्रीणते ।	५२
५०७	वीनवइ विज्ञपयति ।	४८
५०८	वीष (ख) रइ विकिरति, विक्षिपति ।	४८
५०९	वीसमइ विश्राम्यति	५१
५१०	वीससइ वेस्तु, विश्रंभते ।	५३
५११	वेचइ व्ययति, व्येति ।	४७
५१२	व्यापइ अश्नुते व्याप्नोति च ।	४९
५१३	शपइ शपति तु शप्यति ।	५३
५१४	शीष (स्य) वइ अनुशास्ति ।	४७
५१५	ष (ख) डष (ख) डइ खटत्करोति ।	५४
५१६	षडहडइ किल खटत्पतति ।	५१
५१७	षा (खा) जूअइ कंडूयति-ते ।	५२
५१८	षा (खा णउतुंषा (खा) दन्तस्थानम् ।	४६
५१९	षा (खा) सइ कासते ।	६४,५०
५२०	षिसइ स्रंसते ।	५४
५२१	षी (खी) लइ कीलति ।	४९
५२२	षु (खु सइ गोपायते लीयते	५३
५२३	षूटइ षूटइ क्षुन्ते क्षुणत्ति च ।	५१
५२४	षू (खू) भइ क्षुभ्यते क्षोभते ।	४९
५२५	षो(खो) डाअइ षं (खं) जायते ।	५०
५२६	सो (खो) त्रइ क्षतयत्यसौ	८६,५३
५२७	संभोरइ विसजयति ।	६४,५३
५२८	सघूरवइ सधुक्षते ।	४९
५२९	सकइ शक्नोति ।	७४,५२
५३०	सगलइ सर्वत्र ।	४५
५३१	स-यसइ सन्यस्यति ।	५३
५३२	समारइ समारचयति ।	४९
५३३	समेटइ समः ।	५१
५३४	सरवइ निष्यन्दते, स्रवति ।	५१
५३५	सरीषउ सदृशः ।	४५
५३६	सपइ वार सर्वदा, सदा ।	४५
५३७	सवहिगमा समन्तात्, सर्वतः	४५
५३८	सवेहिपरि सर्वथा ।	४६
५३९	ससइ स्वसति ।	५३
५४०	सहइ क्षमते तितिक्षते सहते क्षाम्यते मृष्यते-ति च ।	५२

॥ इति बालशिक्षाव्याकरणस्थाकाराद्यनुक्रमेण भाषाशब्दसूचिः ॥

शर्ववर्माचार्यप्रणीत-

कातन्त्रव्याकरणसूत्रपाठः ।

प्रथमं सन्धिप्रकरणम् ।

प्रथमेऽध्याये प्रथमः पादः ।

सिद्धो वर्णसमाम्नायः ।[1] तत्र चतुर्दशादौ स्वराः ।[2] दश समानाः ।[3] तेषां द्वौ द्वावन्योन्यस्य सवर्णौ ।[4] पूर्वो ह्रस्वः ।[5] परो दीर्घः ।[6] स्वरोऽवर्णवर्जो नामी ।[7] एकारादीनि सन्ध्यक्षराणि ।[8] कादीनि व्यञ्जनानि ।[9] ते वर्गाः पञ्च पञ्च पञ्च ।[10] वर्गाणां प्रथम-द्वितीयाः शषसाश्चाघोषाः ।[11] घोषवन्तोऽन्ये ।[12] अनुनासिका ङ-ञ-ण-न-माः ।[13] अन्तःस्था य-र-ल-वाः ।[14] ऊष्माणः श-ष-स-हाः ।[15] अः इति विसर्जनीयः ।[16] ×क इति जिह्वामूलीयः ।[17] ×प इत्युपध्मानीयः ।[18] अं इत्यनुस्वारः ।[19] पूर्वपरयोरर्थोपलब्धौ पदम् ।[20] व्यञ्जनमस्वरं परं वर्णं नयेत् ।[21] अनतिक्रमयन् विश्लेषयेत् ।[22] लोकोपचाराद् ग्रहणसिद्धिः ।[23] — इति प्रथमः पादः ।

प्रथमेऽध्याये द्वितीयः पादः ।

समानः सवर्णे दीर्घीभवति परश्च लोपम् ।[1] अवर्ण इवर्णे ए ।[2] उवर्णे ओ ।[3] ऋवर्णे अर् ।[4] ऌवर्णे अल् ।[5] एकारे ऐ ऐकारे च ।[6] ओकारे औ औकारे च ।[7] इवर्णो यमसवर्णे न च परो लोप्यः ।[8] वमुवर्णः ।[9] रमृवर्णः ।[10] लम्ऌवर्णः ।[11] ए अय् ।[12] ऐ आय् ।[13] ओ अव् ।[14] औ आव् ।[15] अयादीनां य-वलोपः पदान्ते न वा लोपे तु प्रकृतिः ।[16] एदोत्परः पदान्ते लोपमकारः ।[17] न व्यञ्जने स्वराः संधेयाः ।[18] — इति द्वितीयः पादः ।

प्रथमेऽध्याये तृतीयः पादः ।

ओदन्ता अ-इ-उ-आ निपाताः स्वरे प्रकृत्या ।[1] द्विवचनमनौ ।[2] बहुवचनममी ।[3] अनुपदिष्टाश्च ।[4] — इति तृतीयः पादः ।

प्रथमेऽध्याये चतुर्थः पादः ।

वर्गप्रथमाः पदान्ताः स्वरघोषवत्सु तृतीयान् ।[१] पञ्चमे पञ्चमांस्तृतीयान्न वा ।[२] वर्गप्रथमेभ्यः शकारः स्वर-य-व-र-परश्छकारं न वा ।[३] तेभ्य एव हकारः पूर्वचतुर्थं न वा ।[४] पररूपं तकारो ल-च-ट-वर्गेषु ।[५] चं शे ।[६] ङ-ण-ना ह्रस्वोपधाः स्वरे द्विः ।[७] नोऽन्तश्च-छयोः शकारमनुस्वारपूर्वम् ।[८] ट-ठयोः षकारम् ।[९] त-थयोः सकारम् ।[१०] ले लम् ।[११] ज-झ-ञ-शकारेषु ञकारम् ।[१२] शि न्चौ वा ।[१३] ड-ढ-ण परस्तु णकारम् ।[१४] मोऽनुस्वारं व्यञ्जने ।[१५] वर्गे तद्वर्गपञ्चमं वा ।[१६] —इति चतुर्थः पादः ।



प्रथमेऽध्याये पञ्चमः पादः ।

विसर्जनीयश्चे छे वा शम् ।[१] टे ठे वा षम् ।[२] ते थे वा सम् ।[३] क-खयोर्जिह्वामूलीयं न वा ।[४] प-फयोरुपध्मानीयं न वा ।[५] शे षे से वा वा पररूपम् ।[६] उमकारयोर्मध्ये ।[७] अघोषवतोश्च ।[८] अपरो लोप्योऽन्यस्वरे यं वा ।[९] आ-भोभ्यामेवमेव स्वरे ।[१०] घोषवति लोपम् ।[११] नामिपरो रम् ।[१२] घोषवत्स्वरपरः ।[१३] रप्रकृतिरनामिपरोऽपि ।[१४] एष-सपरो व्यञ्जने लोप्यः ।[१५] न विसर्जनीयलोपे पुनः सन्धिः ।[१६] रो रे लोपं स्वरश्च पूर्वो दीर्घः ।[१७] द्विर्भावं स्वरपरच्छकारः ।[१८] —इति पञ्चमः पादः । समाप्तश्च प्रथमोऽध्यायः ।



द्वितीयं नाम्निचतुष्टयप्रकरणम् ।

द्वितीयेऽध्याये प्रथमः पादः ।

धातुविभक्तिवर्जमर्थवल्लिङ्गम् ।[१] तस्मात्परा विभक्तयः ।[२] पञ्चादौ घुट् ।[३] जस्-शसौ नपुंसके ।[४] आमन्त्रिते सिः संबुद्धिः ।[५] आगम उदनुबन्धः स्वरादन्त्यात्परः ।[६] तृतीयादौ तु परादिः ।[७] इदुदग्निः ।[८] ईदूत् स्त्र्याख्यौ नदी ।[९] आ श्रद्धा ।[१०] अन्त्यात्पूर्व उपधा ।[११] व्यञ्जनान्नोऽनुषङ्गः ।[१२] धुड् व्यञ्जनमनन्तःस्थानुनासिकम् ।[१३] अकारो दीर्घं घोषवति ।[१४] जसि ।[१५] शसि सस्य च नः ।[१६] अकारे लोपम् ।[१७] भिसैस् वा ।[१८] धुटि बहुत्वे त्वे ।[१९] ओसि च ।[२०] ङसिरात् ।[२१] ङस् स्य ।[२२] इन टा ।[२३] ङेर्यः ।[२४] सै सर्वनाम्नः ।[२५] ङसिः स्मात् ।[२६] ङिः स्मिन् ।[२७] विभाष्येते पूर्वादेः ।[२८] सुरामि सर्वतः ।[२९] जस् सर्व इः ।[३०] अल्पादेर्वा ।[३१] द्वन्द्वस्थाच ।[३२] नान्य-

त्सार्वनामिकम् ।[३३] तृतीयासमासे च ।[३४] बहुव्रीहौ ।[३५] दिशां वा ।[३६] श्रद्धायाः सिर्लोपम् ।[३७] टौसोरे ।[३८] संबुद्धौ च ।[३९] ह्रस्वोऽम्बार्थानाम् ।[४०] औरीम् ।[४१] ङवन्ति यै यास् यास् याम् ।[४२] सर्वनाम्नस्तु ससवो ह्रस्वपूर्वाश्च ।[४३] द्वितीया-तृतीयाभ्यां वा ।[४४] नद्या ऐ आस् आस् आम् ।[४५] संबुद्धौ ह्रस्वः ।[४६] अम्-शसोरादिर्लोपम् ।[४७] ईकारान्तात् सिः ।[४८] व्यञ्जनाच्च ।[४९] अग्नेरमोऽकारः ।[५०] औकारः पूर्वम् ।[५१] शसोऽकारः सश्च नोऽस्त्रियाम् ।[५२] टा ना ।[५३] अदोऽमुश्च ।[५४] इरेदुरोज्जसि ।[५५] संबुद्धौ च ।[५६] ङे ।[५७] ङसि-ङसोरलोपश्च ।[५८] गोश्च ।[५९] ङिरौ सपूर्वः ।[६०] सखिपत्योर्ङिः ।[६१] ङसि-ङसोरुमः ।[६२] ऋदन्तात् सपूर्वः ।[६३] आ सौ सिलोपश्च ।[६४] अग्निवच्छसि ।[६५] अर्डौ ।[६६] घुटि च ।[६७] धातोस्तृशब्दस्यार् ।[६८] स्वस्रादीनां च ।[६९] आ च न संबुद्धौ ।[७०] ह्रस्वनदी-श्रद्धाभ्यः सिर्लोपम् ।[७१] आमि च नुः ।[७२] त्रेस्त्रयश्च ।[७३] चतुरः ।[७४] संख्यायाः ष्णान्तायाः ।[७५] कतेश्च जस्-शसोर्लुक् ।[७६] नियो ङिराम् ।[७७] — इति प्रथमः पादः ।

❀

द्वितीयेऽध्याये द्वितीयः पादः ।

न सखिष्टादावग्निः ।[१] पतिरसमासे ।[२] स्त्री नदीवत् ।[३] स्त्र्याख्यावियुवौ वामि ।[४] ह्रस्वश्च ङवति ।[५] नपुंसकात् स्यमोर्लोपो न च तदुक्तम् ।[६] अकारादसंबुद्धौ मुश्च ।[७] अन्यादेस्तु तुः ।[८] औरीम् ।[९] जस्-शसोः शिः ।[१०] घुट्स्वराद् घुटि नुः ।[११] नामिनः स्वरे ।[१२] अस्थि-दधि-सक्थ्यक्ष्णामन्नन्तष्टादौ ।[१३] भाषितपुंस्कं पुम्वद्वा ।[१४] दीर्घमामि सनौ ।[१५] नान्तस्य चोपधायाः ।[१६] घुटि चासंबुद्धौ ।[१७] सान्त-महतोर्नोपधायाः ।[१८] अपश्च ।[१९] अन्तवसन्तस्य चाधातोः सौ ।[२०] इन-हन्-पूषार्यम्णां शौ च ।[२१] उशनः-पुरुदंशोऽनेहसां सावनन्तः ।[२२] सख्युश्च ।[२३] घुटि त्वै ।[२४] दिव उद् व्यञ्जने ।[२५] औ सौ ।[२६] वाम्या ।[२७] युजेरसमासे नुर्घुटि ।[२८] अभ्यस्तादन्तिरनकारः ।[२९] वा नपुंसके ।[३०] तुदभादिभ्य ईकारे ।[३१] हनेर्हेर्धिरुपधालोपे ।[३२] गोरौ घुटि ।[३३] अम्-शसोरा ।[३४] पन्थि-मन्थ्यृभुक्षीणां सौ ।[३५] अनन्तो घुटि ।[३६] अघुट्स्वरे लोपम् ।[३७] व्यञ्जने चैषां निः ।[३८] अनुषङ्गश्चाक्रुञ्चेत् ।[३९] पुंसोऽन्शब्दलोपः ।[४०] चतुरो वाशब्दस्योत्वम् ।[४१] अनडुहश्च ।[४२] सौ नुः ।[४३] संबुद्धावुभयोर्ह्रस्वः ।[४४] अदसः पदे मः ।[४५] अघुट्स्वरादौ सेट्कस्यापि वन्सेर्वशब्दस्योत्वम् ।[४६] श्व-युव-मघोनां च ।[४७] वाहेर्वाशब्दस्यौ ।[४८] अन्चेरलोपः पूर्वस्य च दीर्घः ।[४९] तिर्यङ् तिरश्चिः ।[५०] उदङ् उदीचिः ।[५१] पात्पदं समासान्तः ।[५२] अवमसंयोगादनोऽलोपोऽलुप्तवच्च

पूर्वविधौ ।[५३] ई-ङ्योर्वा ।[५४] आ धातोरघुट्स्वरे ।[५५] ईदूतोरियुवौ स्वरे ।[५६] सुधीः ।[५७] भूरवर्षाभूरपुनर्भूः ।[५८] अनेकाक्षरयोस्त्वसंयोगाद् यवौ ।[५९] भ्रूर्धातुवत् ।[६०] स्त्री च ।[६१] वाम्-शसोः ।[६२] भवतो वादेरुत्वं संबुद्धौ ।[६३] अव्यय-सर्वनाम्नः स्वरादन्त्यात् पूर्वोऽक् कः ।[६४] के प्रत्यये स्त्रीकृताकारपरे पूर्वोऽकार इकारम् ।[६५] —इति द्वितीयः पादः ।



द्वितीयेऽध्याये तृतीयः पादः ।

युष्मदस्मदोः पदं पदात् षष्ठी-चतुर्थी-द्वितीयासु वस्-नसौ ।[१] वामनौ द्वित्वे ।[२] त्वन्मदोरेकत्वे ते मे त्वा मा तु द्वितीयायाम् ।[३] न पादादौ ।[४] चादियोगे च ।[५] एषां विभक्तावन्तलोपः ।[६] युवावौ द्विवाचिषु ।[७] अमौ चाम् ।[८] आम् शस् ।[९] त्वम् अहम् सौ सविभक्त्योः ।[१०] यूयम् वयम् जसि ।[११] तुभ्यम् मह्यम् ङयि ।[१२] तव मम ङसि ।[१३] अत् पञ्चम्यद्वित्वे ।[१४] भ्यस् अभ्यम् ।[१५] सामाकम् ।[१६] एत्वमस्थानिनि ।[१७] आत्वं व्यञ्जनादौ ।[१८] रैः ।[१९] अष्टनः सर्वासु ।[२०] औ तस्माज्जस्-शसोः ।[२१] अर्वन्नर्वन्तिरसावनञ् ।[२२] सौ च मघवान् मघवा वा ।[२३] जरा जरस् स्वरे वा ।[२४] त्रि-चतुरोः स्त्रियां तिसृ चतसृ विभक्तौ ।[२५] तौ रं स्वरे ।[२६] न नामि दीर्घम् ।[२७] नृ वा ।[२८] त्यदादीनामविभक्तौ ।[२९] किम् कः ।[३०] दोऽद्वेर्मः ।[३१] सौ सः ।[३२] तस्य च ।[३३] इदमियमयम् पुंसि ।[३४] अद् व्यञ्जनेऽनक् ।[३५] टौसोरनः ।[३६] एतस्य चान्वादेशे द्वितीयायां चैनः ।[३७] तस्माद् भिस् भिर् ।[३८] अदसश्च ।[३९] सावौसिलोपश्च ।[४०] उत्वं मात् ।[४१] एद् बहुत्वे त्वी ।[४२] अपां भे दः ।[४३] विरामव्यञ्जनादिष्वनडुन्नहिवन्सीनां च ।[४४] स्रसि-ध्वसोश्च ।[४५] ह-श-षछान्तेजादीनां डः ।[४६] दादेर्हस्य गः ।[४७] चवर्ग-दृगादीनां च ।[४८] मुहादीनां वा ।[४९] ह-चतुर्थान्तस्य धातोस्तृतीयादेरादिचतुर्थत्वमकृतवत् ।[५०] सजुषाशिषो रः ।[५१] इरुरोरीरूरौ ।[५२] अहः सः ।[५३] संयोगान्तस्य लोपः ।[५४] संयोगादेर्धुटः ।[५५] लिङ्गान्तनकारस्य ।[५६] न संबुद्धौ ।[५७] न संयोगान्तावलुप्तवच्च पूर्वविधौ ।[५८] इसुसदोषां घोषवति रः ।[५९] धुटां तृतीयः ।[६०] अघोषे प्रथमः ।[६१] वा विरामे ।[६२] रेफ-सोर्विसर्जनीयः ।[६३] विरामव्यञ्जनादावुक्तं नपुंसकात् स्यमोर्लोपेऽपि ।[६४] —इति तृतीयः पादः ।



द्वितीयेऽध्याये चतुर्थः पादः ।

अव्ययीभावादकारान्ताद् विभक्तीनाममपञ्चम्याः ।[१] वा तृतीयासप्तम्योः ।[२] अन्यस्माल्लुक् ।[३] अव्ययाच्च ।[४] रूढानां बहुत्वेऽस्त्रियाम-

प्रत्ययस्य ।[५] गर्ग-यस्क-विदादीनां च ।[६] भृग्वत्र्यङ्गिरसकुत्सवसिष्ठगोतमेभ्यश्च ।[७] यतोऽपैति भयमादत्ते वा तदपादानम् ।[८] ईप्सितं च रक्षार्थानाम् ।[९] यस्मै दित्सा रोचते धारयते वा तत् संप्रदानम् ।[१०] य आधारस्तदधिकरणम् ।[११] येन क्रियते तत् करणम् ।[१२] यत् क्रियते तत् कर्म ।[१३] यः करोति स कर्ता ।[१४] कारयति यः स हेतुश्च ।[१५] तेषां परमुभयप्राप्तौ ।[१६] प्रथमा विभक्तिर्लिङ्गार्थवचने ।[१७] आमन्त्रणे च ।[१८] शेषाः कर्मकरणसंप्रदानापादानस्वाम्याद्यधिकरणेषु ।[१९] पर्यपाङ्योगे पञ्चमी ।[२०] दिगितरर्तेऽन्यैश्च ।[२१] द्वितीयैनेन ।[२२] कर्मप्रवचनीयैश्च ।[२३] गत्यर्थकर्मणि द्वितीया-चतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि ।[२४] मन्यकर्मणि चानादरेऽप्राणिनि ।[२५] नमः-स्वस्ति-स्वाहा-स्वधा-ऽलं-वषड्योगे चतुर्थी ।[२६] तादर्थ्ये ।[२७] तुमर्थाच्च भाववाचिनः ।[२८] तृतीया सहयोगे ।[२९] हेत्वर्थे ।[३०] कुत्सितेऽङ्गे ।[३१] विशेषणे ।[३२] कर्तरि च ।[३३] काल-भावयोः सप्तमी ।[३४] स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैः षष्ठीच ।[३५] निर्धारणे च ।[३६] षष्ठी हेतुप्रयोगे ।[३७] स्मृत्यर्थकर्मणि ।[३८] करोतेः प्रतियत्ने ।[३९] हिंसार्थानामज्वरेः ।[४०] कर्तृ-कर्मणोः कृति नित्यम् ।[४१] न निष्ठादिषु ।[४२] षडो णो ने ।[४३] म-नोरनुस्वारो धुटि ।[४४] वर्गे वर्गान्तः ।[४५] तवर्गश्च-टवर्गयोगे च-टवर्गौ ।[४६] नामिकरपरः प्रत्ययविकारागमस्थः सिः षं नुविसर्जनीयषान्तरोऽपि ।[४७] रषृवर्णेभ्यो नो णमनन्त्यः स्वर-ह-य-व-कवर्ग-पवर्गान्तरोऽपि ।[४८] स्त्रियामादा ।[४९] नदाद्यन्चिवाह्यस्यन्तृसखिनान्तेभ्य ई ।[५०] ईकारे स्त्रीकृतेऽलोप्यः ।[५१] स्वरो ह्रस्वो नपुंसके ।[५२] — इति चतुर्थः पादः । नाम्नि चतुष्टये कारकप्रकरणं समाप्तम् ॥

❀

द्वितीयेऽध्याये पञ्चमः पादः ।

नाम्नां समासो युक्तार्थः ।[१] तत्स्था लोप्या विभक्तयः ।[२]
प्रकृतिश्च स्वरान्तस्य ।[३] व्यञ्जनान्तस्य यत्सुभोः ॥[४] (१)
पदे तुल्याधिकरणे विज्ञेयः कर्मधारयः ।[५]
संख्यापूर्वो द्विगुरिति ज्ञेयः ।[६] तत्पुरुषावुभौ ॥[७] (२)
विभक्तयो द्वितीयाद्या नाम्ना परपदेन तु ।
समस्यन्ते समासो हि ज्ञेयस्तत्पुरुषः स च ॥[८] (३)
स्यातां यदि पदे द्वे तु यदि वा स्युर्बहून्यपि ।
तान्यन्यस्य पदस्यार्थे बहुव्रीहिः ।[९] विदिक् तथा ॥[१०] (४)
द्वन्द्वः समुच्चयो नाम्नोर्बहूनां वापि यो भवेत् ।[११]
अल्पस्वरतरं तत्र पूर्वम् ।[१२] यच्चार्चितं द्वयोः ॥[१३] (५)

पूर्वं वाच्यं भवेद्यस्य सोऽव्ययीभाव इष्यते ।[१४]
स नपुंसकलिङ्गं स्यात् ।[१५] द्वन्द्वैकत्वम् ।[१६] तथा द्विगोः ॥[१७] (६)
पुंवद्भाषितपुंस्कानूङ्पूरण्यादिषु स्त्रियाम् ।
तुल्याधिकरणे ।[१८] संज्ञापूरणीकोपधास्तु न ॥[१९] (७)
कर्मधारयसंज्ञे तु पुंवद्भावो विधीयते ।[२०]
आकारो महतः कार्यस्तुल्याधिकरणे पदे ॥[२१] (८)
नस्य तत्पुरुषे लोप्यः ।[२२] स्वरेऽक्षरविपर्ययः ।[२३]
कोः कत् ।[२४] का त्वीषदर्थेऽक्षे ।[२५] पुरुषे तु विभाषया ॥[२६] (९)
याकारौ स्त्रीकृतौ ह्रस्वौ क्वचित् ।[२७] ह्रस्वस्य दीर्घता ।[२८]
अनव्ययविसृष्टस्तु सकारं क-पवर्गयोः ॥[२९] (१०)

॥ इति पञ्चमः पादः । नाम्नि चतुष्टये समासप्रकरणं समाप्तम् ॥



द्वितीयेऽध्याये षष्ठः पादः ।

वाणपत्ये ।[१] ण्य गर्गादेः ।[२] कुञ्जादेरायनण् स्मृतः ।[३]
स्त्र्यत्र्यादेरेयण् ।[४] इणतः ।[५] बाह्वादेश्च विधीयते ॥[६] (१)
रागान्नक्षत्रयोगाच्च समूहात्सास्य देवता ।
तद् वेत्त्यधीते तस्येदमेवमादेरण् इष्यते ॥[७] (२)
तेन दीव्यति संसृष्टं तरतीकण् चरत्यपि ।
पण्याच्छिल्पान्नियोगाच्च क्रीतादेरायुधादपि ॥[८] (३)
नावस्तार्ये विषाद् वध्ये तुलया संमितेऽपि च ।
तत्र साधौ यः ।[९] ईयस्तु हिते ।[१०] यदुगवादितः ॥[११] (४)
उपमाने वतिः ।[१२] तत्वौ भावे ।[१३] यण् च प्रकीर्तितः ।[१४]
तदस्यास्तीति मन्त्वन्त्वीन् ।[१५] संख्यायाः पूरणे डमौ ॥[१६] (५)
द्वेस्तीयः ।[१७] त्रेस्तृ च ।[१८] अन्तस्थो, डे षोः ।[१९] कतिपयात्कतेः ।[२०]
विंशत्यादेस्तमट् ।[२१] नित्यं, शतादेः ।[२२] षष्ठ्याद्यतत्परात् ॥[२३] (६)
विभक्तिसंज्ञा विज्ञेया वक्ष्यन्तेऽतः परं तु ये ।
अद्व्यादेः सर्वनाम्नस्ते बहोश्चैव पराः स्मृताः ॥[२४] (७)
तत्रेदमिः ।[२५] रथोरेतेत् ।[२६] तेषु त्वेतदकारताम् ।[२७]
पञ्चम्यास्तस् ।[२८] त्रसप्तम्याः ।[२९] इदमो हः ।[३०] किमः ।[३१] अत् क च ॥[३२] (८)

तद्धोः कुः ।[33] काले किंसर्वयदेकान्येभ्य एव दा ।[34]
इदमोऽर्ह्यधुनादानीम् ।[35] दादानीमौ तदः स्मृतौ ॥[36] (९)
सद्य आद्या निपात्यन्ते ।[37] प्रकारवचने तु था ।[38]
इदम्-किम्भ्यां थमुः कार्यः ।[39] आख्याताच्च तमादयः ॥[40] (१०)
समासान्तगतानां वा राजादीनामदन्तता ।[41]
डानुबन्धेऽन्त्यस्वरादेर्लोपः ।[42] तेर्विंशतेरपि ॥[43] (११)
इवर्णावर्णयोर्लोपः स्वरे ये च ।[44] नस्तु क्वचित् ।[45]
उवर्णस्त्वोत्वमापाद्यः ।[46] एयेऽकद्रूवास्तु लुप्यते ॥[47] (१२)
कार्याववावापादेशावौकारौकारयोरपि ।[48]
वृद्धिरादौ सणे ।[49] न य्वोः, पदाद्योर्वृद्धिरागमः ॥[50] (१३)

इति षष्ठः पादः ।

॥ इति नाम्नि चतुष्टये तद्धितः समाप्तः । समाप्तश्चायं द्वितीयोऽध्यायः ॥



तृतीयमाख्यातप्रकरणम् ।

तृतीयेऽध्याये प्रथमः पादः ।

अथ परस्मैपदानि ।[1] नव पराण्यात्मने ।[2] त्रीणि त्रीणि प्रथम-मध्य-मोत्तमाः ।[3] युगपद्वचने परः पुरुषाणाम् ।[4] नाम्नि प्रयुज्यमानेऽपि प्रथमः ।[5] युष्मदि मध्यमः ।[6] अस्मद्युत्तमः ।[7] अदाब्दाधौ दा ।[8] क्रियाभावो धातुः ।[9] काले ।[10] संप्रति वर्तमाना ।[11] सेनातीते ।[12] परोक्षा ।[13] भूतकरणवत्यश्च ।[14] भविष्यति भविष्यन्त्याशीः श्वस्तन्यः ।[15] तासां स्वसंज्ञाभिः कालविशेषः ।[16] प्रयोगतश्च ।[17] पञ्चम्यनुमतौ ।[18] समर्थनाशिषोश्च ।[19] विध्यादिषु सप्तमी च ।[20] क्रियासमभिहारे सर्वकालेषु मध्यमैकवचनं पञ्चम्याः ।[21] मायोगेऽद्यतनी ।[22] मास्मयोगे ह्यस्तनी च ।[23] वर्तमाना ।[24] सप्तमी ।[25] पञ्चमी ।[26] ह्यस्तनी ।[27] एवमेवाद्यतनी ।[28] परोक्षा ।[29] श्वस्तनी ।[30] आशीः ।[31] स्यसंहितानि त्यादीनि भविष्यन्ती ।[32] स्यादीनि क्रियातिपत्तिः ।[33] षडाद्याः सार्वधातुकम् ।[34] — इति प्रथमः पादः ।



तृतीयेऽध्याये द्वितीयः पादः ।

प्रत्ययः परः ।[1] गुप्-तिज्-किद्भ्यः सन् ।[2] मान्-बध-दान्-शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य ।[3] धातोर्वा तुमन्तादिच्छतिनैककर्तृकात् ।[4] नाम्न

आत्मेच्छायां यिन् ।[५] काम्य च ।[६] उपमानादाचारे ।[७] कर्तुरायिः सलोपश्च ।[८] इन् कारितं धात्वर्थे ।[९] धातोश्च हेतौ ।[१०] चुरादेश्च ।[११] इनि लिङ्गस्यानेकाक्षरस्यान्त्यस्वरादेर्लोपः ।[१२] रशब्द ऋतो लघोर्व्यञ्जनादेः ।[१३] धातोर्यशब्दश्चेक्रीयितं क्रियासमभिहारे ।[१४] गुपू-धूप-विच्छि-पणि-पने-रायः ।[१५] ते धातवः ।[१६] चकास-कासप्रत्ययान्तेभ्य आम् परोक्षायाम् ।[१७] दयायासश्च ।[१८] नाम्यादेर्गुरुमतोऽनृच्छः ।[१९] उष-विद-जागृभ्यो वा ।[२०] भी-ह्री-भृ-हुवां तिवच्च ।[२१] आमः कृञनुप्रयुज्यते ।[२२] अस्-भुवौ च परस्मै ।[२३] सिज् अद्यतन्याम् ।[२४] सण् अनिटः शिडन्तान्नाम्युपधाददृशः ।[२५] श्रि-द्रु-स्रु-कमि-कारितान्तेभ्यश्चण् कर्तरि ।[२६] अण् असु-वचि-ख्याति-लिपि-सिचि ह्वः ।[२७] पुषादिद्युताद्यॢकारानुबन्धार्ति-शास्तिभ्यश्च परस्मै ।[२८] इजात्मने पदेः प्रथमैकवचने ।[२९] भाव-कर्मणोश्च ।[३०] सार्वधातुके यण् ।[३१] अन् विकरणः कर्तरि ।[३२] दिवादेर्यन् ।[३३] नुः स्वादेः ।[३४] श्रुवः शृ च ।[३५] स्वराद् रुधादेः परो नशब्दः ।[३६] तनादेरुः ।[३७] ना क्र्यादेः ।[३८] आन व्यञ्जनान्ताद्धौ ।[३९] आत्मनेपदानि भाव-कर्मणोः ।[४०] कर्मवत् कर्मकर्ता ।[४१] कर्तरि रुचादि-ङानुबन्धेभ्यः ।[४२] चेक्रीयितान्तात् ।[४३] आय्यन्ताच्च ।[४४] इन्-ञ-यजादेरुभयम् ।[४५] पूर्ववत् सनन्तात् ।[४६] शेषात् कर्तरि परस्मैपदम् ।[४७] — इति द्वितीयः पादः ।



तृतीयेऽध्याये तृतीयः पादः ।

द्विर्वचनमनभ्यासस्यैकस्वरस्याद्यस्य ।[१] स्वरादेर्द्वितीयस्य ।[२] न न बदराः संयोगादयोऽये ।[३] पूर्वोऽभ्यासः ।[४] द्वयमभ्यस्तम् ।[५] जक्षादिश्च ।[६] चण्-परोक्षा-चेक्रीयित-सनन्तेषु ।[७] जुहोत्यादीनां सार्वधातुके ।[८] अभ्यासस्यादिर्व्यञ्जनमवशेष्यम् ।[९] शिट्परोऽघोषः ।[१०] द्वितीय-चतुर्थयोः प्रथम-तृतीयौ ।[११] हो जः ।[१२] कवर्गस्य चवर्गः ।[१३] न कवतेश्चेक्रीयिते ।[१४] ह्रस्वः ।[१५] ऋवर्णस्याकारः ।[१६] दीर्घ इणः परोक्षायामगुणे ।[१७] अस्यादेः सर्वत्र ।[१८] तस्मान्नागमः परादिरन्तश्चेत् संयोगः ।[१९] ऋकारे च ।[२०] अश्नोतेश्च ।[२१] भवतेरः ।[२२] निजि-विजि-विषां गुणः सार्वधातुके ।[२३] भृञ्-हाङ्-माङामित् ।[२४] अर्ति-पिपर्त्योश्च ।[२५] सन्यवर्णस्य ।[२६] उवर्णस्य जान्तःस्था-पवर्गपरस्यावर्णे ।[२७] गुणश्चेक्रीयिते ।[२८] दीर्घोऽलागमस्य ।[२९] वन्चि-स्रन्सि-ध्वन्सि-भ्रन्सि-कसि-पति-पदि-स्कन्दामन्तो नी ।[३०] अतोऽन्तोऽनुस्वारोऽनुनासिकान्तस्य ।[३१] जपादीनां च ।[३२] चर-फलोरुच्च परस्यास्य ।[३३] ऋमतो रीः ।[३४] अलोपे समानस्य सन्वल्लघुनीनि चणपरे ।[३५] दीर्घो

लघोः ।[३६] अत् त्वरादीनां च ।[३७] इतो लोपोऽभ्यासस्य ।[३८] सनि मि-मी-
मा-दा-रभ-लभ-शक-पत-पदामिस् स्वरस्य ।[३९] आप्नोतेरीः ।[४०] दन्भेरिच ।[४१]
दिगि दयतेः परोक्षायाम् ।[४२] —इति तृतीयः पादः ।

❀

तृतीयेऽध्याये चतुर्थः पादः ।

सपरस्वरायाः संप्रसारणमन्तःस्थायाः ।[१] ग्रहि-ज्या-वयि-व्यधि-वष्टि-
व्यचि-प्रच्छि-व्रश्चि-भ्रस्जीनामगुणे ।[२] स्वपि-वचि-यजादीनां यण्परो-
क्षाशीःषु ।[३] परोक्षायामभ्यासस्योभयेषाम् ।[४] व्यथेश्च ।[५] न वाश्व्योरगुणे
च ।[६] स्वपि-स्यमि-व्येञां चेक्रीयिते ।[७] स्वापेश्चणि ।[८] ग्रहि-स्वपि-प्रच्छां
सनि ।[९] चायः किश्चेक्रीयिते ।[१०] प्यायः पिः परोक्षायाम् ।[११] श्वयतेर्वा ।[१२]
कारिते च संश्चणोः ।[१३] ह्वयतेर्नित्यम् ।[१४] अभ्यस्तस्य च ।[१५] द्युति-स्वाप्यो-
रभ्यासस्य ।[१६] न संप्रसारणे ।[१७] वशेश्चेक्रीयिते ।[१८] प्रच्छादीनां परोक्षा-
याम् ।[१९] सन्ध्यक्षरान्तानामाकारोऽविकरणे ।[२०] न व्ययतेः परोक्षायाम् ।[२१]
मीनाति-मिनोति-दीङां गुणवृद्धिस्थाने ।[२२] सनि दीङः ।[२३] स्मि-जि-क्रीङा-
मिनि ।[२४] सृजि-दृशोरागमोऽकारः स्वरात्परो धुटि गुणवृद्धिस्थाने ।[२५]
दीङोऽन्तो यकारः स्वरादावगुणे ।[२६] आ लोपोऽसार्वधातुके ।[२७] इटि च ।[२८]
दा-मा-गायति-पिबति-स्थास्यति-जहातीनामीकारो व्यञ्जनादौ ।[२९] आशि-
ष्येकारः ।[३०] अन उस् सिजभ्यस्त - विदादिभ्योऽभुवः ।[३१] इचस्तलोपः ।[३२]
हेरकारादहन्तेः ।[३३] नोश्च विकरणादसंयोगात् ।[३४] उकाराच्च ।[३५] उकारलोपो
वमोर्वा ।[३६] करोतेर्नित्यम् ।[३७] ये च ।[३८] अस्योकारः सार्वधातुकेऽगुणे ।[३९]
रुधादेर्विकरणान्तस्य लोपः ।[४०] अस्तेरादेः ।[४१] अभ्यस्तानामाकारस्य ।[४२]
क्र्यादीनां विकरणस्य ।[४३] उभयेषामीकारो व्यञ्जनादावदः ।[४४] इकारो
दरिद्रातेः ।[४५] लोपः सप्तम्यां जहातेः ।[४६] धुटि हन्तेः सार्वधातुके ।[४७]
शासेरिदुपधाया अण-व्यञ्जनयोः ।[४८] हन्तेर्ज हौ ।[४९] दास्त्योरेऽभ्यासलो-
पश्च ।[५०] अस्यैकव्यञ्जनमध्येऽनादेशादेः परोक्षायाम् ।[५१] थलि च सेटि ।[५२]
तॄ-फल-भज-त्रप-श्रन्थि-ग्रन्थि-दन्भीनां च ।[५३] न शस-दद-वादिगुणि-
नाम् ।[५४] स्वरादाविवर्णो वर्णान्तस्य धातोरियुवौ ।[५५] अभ्यासस्यास-
वर्णे ।[५६] नोर्विकरणस्य ।[५७] य इवर्णस्यासंयोगपूर्वस्यानेकाक्षरस्य ।[५८]
इणश्च ।[५९] नोर्वकारो विकरणस्य ।[६०] जुहोतेः सार्वधातुके ।[६१] भुवो वोऽन्तः
परोक्षाऽद्यतन्योः ।[६२] गोहेरूदुपधायाः ।[६३] दुषेः कारिते ।[६४] मानुबन्धानां
ह्रस्वः ।[६५] इचि वा ।[६६] जनि-बध्योश्च ।[६७] ओतो यिन्-आयी स्वरवत् ।[६८]
औतश्च ।[६९] नाम्यन्तानां यण्-आयि-यिन्-आशीश्चि-चेक्रीयितेषु ये

दीर्घः ।[७०] इणोऽनुपसृष्टस्य ।[७१] ऋत ईदन्तश्चिव-चेक्रीयित-यिन्-आयिषु ।[७२] इरन्यगुणे ।[७३] यणाशिषोर्ये ।[७४] गुणोऽर्तिसंयोगाद्योः ।[७५] चेक्रीयिते च ।[७६] घ्रा-ध्मोरी ।[७७] यिन्यवर्णस्य ।[७८] अदेर्घस्लृ सनद्यतन्योः ।[७९] वा परोक्षायाम् ।[८०] वेञश्च वयिः ।[८१] हन्तेर्वधिराशिषि ।[८२] अद्यतन्यां च ।[८३] इणो गा ।[८४] इङः परोक्षायाम् ।[८५] सनीण्-इङोर्गमिः ।[८६] अस्तेर्भूरसार्वधातुके ।[८७] ब्रुवो वचिः ।[८८] चक्षिङः ख्याञ् ।[८९] वा परोक्षायाम् ।[९०] अजेर्वी ।[९१] अदादेर्लुग् विकरणस्य ।[९२] इण्-स्था-दा-पिबति-भूभ्यः सिचः परस्मै ।[९३]

इति चतुर्थः पादः ।



तृतीयेऽध्याये पञ्चमः पादः ।

नाम्यन्तयोर्धातुविकरणयोर्गुणः ।[१] नामिनश्चोपधाया लघोः ।[२] अनि च विकरणे ।[३] करोतेः ।[४] मिदेः ।[५] अभ्यस्तानामुसि ।[६] न णकारानुबन्ध-चेक्रीयितयोः ।[७] अभ्यस्तस्य चोपधाया नामिनः स्वरे गुणिनि सार्वधातुके ।[८] सनि चानिटि ।[९] सिजाशिषोश्चात्मने ।[१०] ऋदन्तानां च ।[११] स्था-दोश्च ।[१२] भुवः सिज्लुकि ।[१३] सूतेः पञ्चम्याम् ।[१४] दी-धी-वेव्योश्च ।[१५] रुद-विद-मुषां सनि ।[१६] नाम्यन्तानामनिटाम् ।[१७] सर्वेषामात्मने सार्वधातुकेऽनुत्तमे पञ्चम्याः ।[१८] द्वित्व-बहुत्वयोश्च परस्मै ।[१९] परोक्षायां च ।[२०] सर्वत्रात्मने ।[२१] आशिषि च परस्मै ।[२२] सप्तम्यां च ।[२३] हौ च ।[२४] तुदादेरनि ।[२५] आमि विदेरेव ।[२६] कुटादेरनिनिचट्सु ।[२७] विजेरिटि ।[२८] स्थादोरिरद्यतन्यामात्मने ।[२९] मुचादेरागमो नकारः स्वरादनि विकरणे ।[३०] मस्जिनशोर्धुटि ।[३१] रधि-जभोः स्वरे ।[३२] नेटि रधेरपरोक्षायाम् ।[३३] रभि-लभोरविकरणपरोक्षयोः ।[३४] हु-धुड्भ्यां हेर्धिः ।[३५] अस्तेः ।[३६] शा शास्तेश्च ।[३७] लोपोऽभ्यस्तादन्तिनः ।[३८] आत्मने चानकारात् ।[३९] शेते रिरन्तेरादिः ।[४०] आकारादट औ ।[४१] ॠदन्तस्येरगुणे ।[४२] उरोष्ठ्योपधस्य च ।[४३] इन्यसमानलोपोपधाया ह्रस्वश्चणि ।[४४] न शास्वृदनुबन्धानाम् ।[४५] लोपः पिबतेरीचाभ्यासस्य ।[४६] तिष्ठतेरित् ।[४७] जिघ्रतेर्वा ।[४८] —इति पञ्चमः पादः ।



तृतीयेऽध्याये षष्ठः पादः ।

अनिदनुबन्धानामगुणेऽनुषङ्गलोपः ।[१] न शब्दाच्च विकरणात् ।[२] परोक्षायामिन्धि-श्रन्थि-ग्रन्थि-दन्भीनामगुणे ।[३] दन्शि-सन्जि-स्वन्जि-रन्जीनामनि ।[४] अस्योपधाया दीर्घो वृद्धिर्नामिनामिनिचट्सु ।[५] सिचि

परस्मै स्वरान्तानाम् ।[६] व्यञ्जनान्तानामनिटाम् ।[७] अस्य च दीर्घः ।[८] वद-व्रज-रलन्तानाम् ।[९] श्विजाग्रोर्गुणः ।[१०] अर्ति-सत्योरणि ।[११] जागर्तेः कारिते ।[१२] यणाशिषोर्ये ।[१३] परोक्षायामगुणे ।[१४] ऋतश्च संयोगादेः ।[१५] ऋदन्तानां च ।[१६] ऋच्छ ऋतः ।[१७] शीङः सार्वधातुके ।[१८] अयीर्ये ।[१९] आयिरिच्यादन्तानाम् ।[२०] शा-छा-सा-ह्वा-व्या-वे-पामिनि ।[२१] अर्ति-ह्री-व्ली-री-क्नूयी-क्ष्माय्यादन्तानामन्तः पो यलोपो गुणश्च नामिनाम् ।[२२] पातेर्लोऽन्तः ।[२३] धूञ्-प्रीणात्योर्नः ।[२४] स्फायेर्वादेशः ।[२५] शादेरगतौ तः ।[२६] हन्तेस्तः ।[२७] हस्य हन्तेर्घिरिनिचोः ।[२८] लुप्तोपधस्य च ।[२९] अभ्यासाच्च ।[३०] जेर्गिः सन्-परोक्षयोः ।[३१] चेः कि वा ।[३२] सणोऽलोपः स्वरेऽबहुत्वे ।[३३] दरिद्रातेरसार्वधातुके ।[३४] व्रश्चि-मस्जोर्धुटि ।[३५] यन्योकारस्य ।[३६] आकारस्योसि ।[३७] सन्ध्यक्षरे च ।[३८] अस्तेः सौ ।[३९] असन्ध्यक्षरयोरस्य तौ सल्लोपश्च ।[४०] दी-धी-वे-व्योरिवर्णयकारयोः ।[४१] नामिव्यञ्जनान्तादायेरादेः ।[४२] गम-हन-जन-खन-घसामुपधायाः स्वरादावनण्यगुणे ।[४३] कारितस्यानामिड्विकरणे ।[४४] यस्यापत्यप्रत्ययस्यास्वरपूर्वस्य यिन्आयिषु ।[४५] न लोपश्च ।[४६] व्यञ्जनादिस्योः ।[४७] यस्यानिनि ।[४८] अस्य च लोपः ।[४९] सिचो धकारे ।[५०] धुटश्च धुटि ।[५१] ह्रस्वाच्चानिटः ।[५२] इटश्चेटि ।[५३] स्कोः संयोगाद्योरन्ते च ।[५४] चवर्गस्य किरसवर्णे ।[५५] हो ढः ।[५६] दादेर्घः ।[५७] नहेर्धः ।[५८] भृजादीनां षः ।[५९] छ-शोश्च ।[६०] भाषितपुंस्कं पुंवदायौ ।[६१] आ-दा-ता-मा-था-मादेरिः ।[६२] आते आथे इति च ।[६३]

याशब्दस्य च सप्तम्याः ।[६४] याम्-युसोरियमियुसौ ।[६५]

शमादीनां दीर्घो यनि ।[६६] ष्ठिवु-क्लम्वाचमामनि ॥[६७]

क्रमः परस्मै ।[६८] गमिष्यमां छः ।[६९] पः पिबः ।[७०] घ्रो जिघ्रः ।[७१] ध्मो धमः ।[७२] स्थस्तिष्ठः ।[७३] म्नो मनः ।[७४] दाणो यच्छः ।[७५] दृशेः पश्यः ।[७६] अर्तेर्ऋच्छः ।[७७] सर्तेर्धावः ।[७८] शदेः शीयः ।[७९] सदेः सीदः ।[८०] जा जनेर्विकरणे ।[८१] ज्ञश्च ।[८२] प्वादीनां ह्रस्वः ।[८३]

उतो वृद्धिर्व्यञ्जनादौ गुणिनि सार्वधातुके ।[८४]

ऊर्णोतेर्गुणः ।[८५] ह्यस्तन्यां च ।[८६] तृहेरिड् विकरणात् ॥[८७]

ब्रुव ईड् वचनादिः ।[८८] अस्तेर्दि-स्योः ।[८९] सिचः ।[९०] रुदादिभ्यश्च ।[९१] अदोऽट् ।[९२] सस्य सेऽसार्वधातुके तः ।[९३] अणि वचेरोदुपधायाः ।[९४] अस्यतेः स्थोऽन्तः ।[९५] पतेः पप्तिः ।[९६] कृपे रोलः ।[९७] गिरतेश्चेक्रीयिते ।[९८] वा स्वरे ।[९९] तृतीयादेर्घ-ढ-ध-भान्तस्य धातोरादिचतुर्थत्वं स-ध्वोः ।[१००] लोपे च दि-स्योः ।[१०१] त-थोश्च दधातेः ।[१०२] —इति षष्ठः पादः ।

❀

तृतीयेऽध्याये सप्तमः पादः ।

इडागमोऽसार्वधातुकस्यादिर्व्यञ्जनादेरयकारादेः ।[१] स्नु-क्रमिभ्यां परस्मै ।[२] रुदादेः सार्वधातुके ।[३] ईशः से ।[४] ईड्जनोः सध्वे च ।[५] से गमः परस्मै ।[६] हन्नृदन्तात् स्ये ।[७] अञ्जेः सिचि ।[८] स्तु-सु-धूञ्भ्यः परस्मै ।[९] यमि-रमि-नम्यादन्तानां सिरन्तश्च ।[१०] स्मिङ्-पूङ्-रञ्ज्वशू-कॄ-गॄ-दृ-धृ-प्रच्छां सनि ।[११] इटो दीर्घो ग्रहेरपरोक्षायाम् ।[१२] अनिडेकस्वरादातः ।[१३] इवर्णादश्वि-श्रि-डीङ्-शीङः ।[१४] उतोऽयु-रु-णु-स्नु-क्षु-क्ष्णुवः ।[१५] ऋतोऽवृङ्वृञः ।[१६] शकेः कात् ।[१७] पचि-वचि-सिचि-रिचि-मुचेश्चात् ।[१८] प्रच्छेश्छात् ।[१९] युजि-रुजि-रञ्जि-भुजि-भजि-भञ्जि-सञ्जि-त्यजि-भ्रस्जि-यजि-मस्जि-सृजि-निजि-विजि-स्वञ्जेर्जात् ।[२०] अदि-तुदि-नुदि-क्षुदि-स्विद्यति-विद्यति-विन्दति-विनत्ति-छिदि-भिदि-हदि-शदि-सदि-पदि-स्कन्दि-खिदेर्दात् ।[२१] राधि-रुधि-क्रुधि-क्षुधि-बन्धि-शुधि-सिध्यति-बुध्यति-युधि-व्यधि-साधेर्धात् ।[२२] हनि-मन्यतेर्नात् ।[२३] आपि-तपि-तिपि-स्वपि-वपि-शपि-छुपि-क्षिपि-लिपि-लुपि-सृपेः पात् ।[२४] यभि-रभि-लभेर्भात् ।[२५] यमि-रमि-नमि-गमेर्मात् ।[२६] रिशि-रुशि-क्रुशि-लिशि-विशि-दिशि-दृशि-स्पृशि-मृशि-दन्शेः शात् ।[२७] द्विषि-पुष्यति-कृषि-श्लिष्यति-त्विषि-पिषि-विषि-शिषि-शुषि-तुषि-दुषेः षात् ।[२८] वसति-घसेः सात् ।[२९] दहि-दिहि-दुहि-मिहि-रिहि-रुहि-लिहि-लुहि-नहि-वहेर्हात् ।[३०] ग्रह-गुहोः सनि ।[३१] उवर्णान्ताच्च ।[३२] इवन्तर्ध-भ्रस्ज-दन्भु-श्रियूर्णु-भर-ज्ञपि-सनि-तनि-पति-दरिद्रां वा ।[३३] भुवः सिज्लुकि ।[३४] सृ-वृ-भृ-स्तु-द्रु-स्रु-श्रुव एव परोक्षायाम् ।[३५] थल्यृकारात् ।[३६] कृञोऽसुटः ।[३७] सुड् भूषणे संपर्युपात् ।[३८] — इति सप्तमः पादः ।

❀

तृतीययेऽध्याये अष्टमः पादः ।

पदान्ते धुटां प्रथमः ।[१] र-सकारयोर्विसृष्टः ।[२] घ ढ ध भेभ्यस्तथोर्धोऽधः ।[३] षढोः कः से ।[४] तवर्गस्य ष-टवर्गाट् टवर्गः ।[५] ढे ढ लोपो दीर्घश्चोपधायाः ।[६] सहि-वहोरोदवर्णस्य ।[७] धुटां तृतीयश्चतुर्थेषु ।[८] अघोषेष्वशिटां प्रथमः ।[९] भृजः स्वरात् स्वरे द्विः ।[१०] अस्य वमोर्दीर्घः ।[११] स्वरान्तानां सनि ।[१२] हनिङ्गमोरुपधायाः ।[१३] नामिनोर्वोरकुर्छुरोर्व्यञ्जने ।[१४] सस्य ह्यस्तन्यां दौ तः ।[१५] अड् धात्वादिर्ह्यस्तन्यद्यतनीक्रियातिपत्तिषु ।[१६]

स्वरादीनां वृद्धिरादेः ।[१७] अवर्णस्याकारः ।[१८] अस्तेः ।[१९] एतेर्ये ।[२०] न मास्मायोगे ।[२१] नास्यन्ताद्धातोराशीरद्यतनीपरोक्षासु धो ढः ।[२२] मजों मार्जिः ।[२३] धात्वादेः षः सः ।[२४] णो नः ।[२५] निमित्तात्प्रत्ययविकारागमस्थः सः षत्वम् ।[२६] शासि-वसि-घसीनां च ।[२७] स्तौतीनन्तयोरेव सनि ।[२८] लुग्-लोपे न प्रत्ययकृतम् ।[२९] स्वरविधिः स्वरे द्विर्वचननिमित्ते कृते द्विर्वचने ।[३०] योऽनुबन्धोऽप्रयोगी ।[३१] शिडिति शादयः ।[३२] संप्रसारणं य्वृतोऽन्तःस्थानिमित्ताः ।[३३] अर् पूर्वे द्वे सन्ध्यक्षरे च गुणः ।[३४] आरुत्तरे च वृद्धिः ।[३५]– इति अष्टमः पादः । समाप्तश्चायं तृतीयोऽध्यायः ।

॥ इति तृतीयमाख्यातप्रकरणम् ॥



चतुर्थं कृतप्रकरणम् ।

———

चतुर्थेऽध्याये प्रथमः पादः ।

सिद्धिरिज्वद् ञ्णानुबन्धे ।[१] हन्तेस्तः ।[२] न सेटोऽमन्तस्यावमिकमिचमाम् ।[३] प्रत्ययलुकां चानाम् ।[४] सार्वधातुकवच्छे ।[५] ङे न गुणः ।[६] के यण्वच्च योक्तवर्जम् ।[७] जागुः कृत्यशन्तृङ्क्यो ।[८] गुणी क्त्वा सेड् अरुदादिक्षुध-कुश-क्लिश-गुध-मृड-मृद-वद-वसग्रहाम् ।[९] स्कन्दस्यन्दोः क्त्वा ।[१०] व्यञ्जनादेर्व्युपधस्यावो वा ।[११] तृषि-मृषि-कृशि-वञ्चि-लुञ्च्यृतां च ।[१२] थ-फान्तानां चानुषङ्गिणाम् ।[१३] जान्तनशामनिटाम् ।[१४] शीङ्-पूङ्-धृषि-क्ष्विदि-स्विदि-मिदां निष्ठा सेट् ।[१५] मृषः क्षमायाम् ।[१६] भावादिकर्मणोर्वोदुपधात् ।[१७] ह्लादो ह्रस्वः ।[१८] छादेर्घस्-मन्-त्रन्-क्विप्सु ।[१९] दीर्घस्योपपदस्यानव्ययस्य खानुबन्धे ।[२०] नाभिनोऽम् प्रत्ययवच्चैकस्वरस्य ।[२१] ह्रस्वारुषोर्मोऽन्तः ।[२२] सत्यागदास्तूनां कारे ।[२३] गिलेऽगिलस्य ।[२४] उपसर्गादसु-दुर्भ्यां लभेः प्राग् भात् खल्-घञोः ।[२५] आङो यि ।[२६] उपात् प्रशंसायाम् ।[२७] वा कृति रात्रेः ।[२८] पुरंदर-वाचंयम-सर्वसह-द्विषंतपाश्च ।[२९] धातोस्तोऽन्तः पानुबन्धे ।[३०] ओदौद्भ्यां कृद् यः स्वरवत् ।[३१] जि-क्ष्योः शक्ये ।[३२] क्रीञस्तदर्थे ।[३३] वेर्लोपोऽपृक्तस्य ।[३४] य्वोर्व्यञ्जनेऽये ।[३५] निष्ठेटीनः ।[३६] नाल्विष्णवाय्यान्तेत्नुषु ।[३७] लघुपूर्वोऽय् यपि ।[३८] मीनात्यादिदादीनामाः ।[३९] क्षेर्दीर्घः ।[४०] निष्ठायां च ।[४१] स्फायः स्फीः ।[४२] प्यायः पीः स्वाङ्गे ।[४३] शृतं पाके ।[४४] प्रस्त्यः संप्रसारणम् ।[४५] द्रवघनस्पर्शयोः श्यः ।[४६] प्रतेश्च ।[४७] वाभ्यवाभ्याम् ।[४८] न वे-ज्योर्यपि ।[४९]

ञ्यश्च ।[५०] सं-परिभ्यां वा ।[५१] तद् दीर्घमन्त्यम् ।[५२] वः क्वौ ।[५३] ध्या-प्योः ।[५४]
पञ्चमोपधाया धुटि चागुणे ।[५५] छ्वोः शूटौ पञ्चमे च ।[५६] श्रि-व्यवि-मवि-
ज्वरि-त्वरामुपधया ।[५७] राल्लोप्यौ ।[५८] वनति-तनोत्यादिप्रतिषिद्धेटां धुटि
पञ्चमोऽचातः ।[५९] यपि च ।[६०] वा मः ।[६१] न तिकि दीर्घश्च ।[६२] उन्देर्मनि ।[६३]
घञीन्धेः ।[६४] स्यदो जवे ।[६५] रञ्जेर्भाव-करणयोः ।[६६] घुष-घिनिणोश्च ।[६७]
वृंहेः स्वरेऽनिटि वा ।[६८] यम-मन-तन-गमां क्वौ ।[६९] विडवनोरा ।[७०] धुटि
खनि-सनि-जनाम् ।[७१] ये वा ।[७२] सनस्तिकि वा ।[७३] स्फुरि-स्फुल्योर्घ-
ञ्योतः ।[७४] इज्जहातेः क्त्वि ।[७५] द्यति-स्यति-मा-स्थां त्यगुणे ।[७६] वा
छाशोः ।[७७] दधातेर्हिः ।[७८] चर-फलोरुदस्य ।[७९] दद् दोऽधः ।[८०] स्वरादुप-
सर्गात् तः ।[८१] यपि चादो जग्धिः ।[८२] घञलोर्घस्लृः ।[८३] क्त-क्तवन्तु निष्ठा ।[८४]
—इति प्रथमः पादः ।



चतुर्थेऽध्याये द्वितीयः पादः ।

धातोः ।[१] सप्तम्युक्तमुपपदम् ।[२] तत् प्राङ् नाम चेत् ।[३] तस्य तेन
समासः ।[४] नाव्ययेनानमा ।[५] तृतीयादीनां वा ।[६] कृत् ।[७] वासरूपो-
ऽस्त्रियाम् ।[८] तव्यानीयौ ।[९] स्वराद् यः ।[१०] शकि-सहि-पवर्गान्ताच्च ।[११]
आत्खनोरिच्च ।[१२] यमि-मदि-गदां त्वनुपसर्गे ।[१३] चरेराङि चागुरौ ।[१४]
पण्यावद्यवर्या विक्रेयगर्ह्यानिरोधेषु ।[१५] वह्यं करणे ।[१६] अर्यः स्वामि-
वैश्ययोः ।[१७] उपसर्या काल्या प्रजने ।[१८] अजर्यं संगते च ।[१९] नाम्नि वदः
क्यप् च ।[२०] भावे भुवः ।[२१] हनस् त च ।[२२] वृञ्-दृ-जुषीण-शासु-स्तु-
गुहां क्यप् ।[२३] ऋदुपधाच्चाकॢपिचृतेः ।[२४] भृञोऽसंज्ञायाम् ।[२५] ग्रहो-
ऽपि-प्रतिभ्यां वा ।[२६] पद-पक्ष्ययोश्च ।[२७] वौ नी-पूञ्भ्यां कल्क-मुञ्ज-
योः ।[२८] कृ-वृषि-मृजां वा ।[२९] सूर्य-रुच्याव्यथ्याः कर्तरि ।[३०] भिद्योद्ध्यौ
नदे ।[३१] पुष्य-सिध्यौ नक्षत्रे ।[३२] युग्यं पत्रे ।[३३] कृष्ट-पच्य-कुप्ये संज्ञा-
याम् ।[३४] ऋवर्ण-व्यञ्जनान्ताद् घ्यण् ।[३५] आसु-युव-पि-रपि-लपि-
त्रपि-दभिचमां च ।[३६] उवर्णादावश्यके ।[३७] पा-धोर्मानसामिधेन्योः ।[३८]
प्राङोर्नियोऽसंमतानित्ययोः स्वरवत् ।[३९] संचिकुण्डपः क्रतौ ।[४०] राजसू-
यश्च ।[४१] सांनाय्य-निकाय्यौ हविर्निवासयोः ।[४२] परिचाय्योपचाय्यावग्नौ ।[४३]
चित्याग्निचित्ये च ।[४४] अमावस्या वा ।[४५] ते कृत्याः ।[४६] वुण्-तृचौ ।[४७]
अच् पचादिभ्यश्च ।[४८] नन्द्यादेर्युः ।[४९] ग्रहादेर्णिन् ।[५०] नाम्युपधप्री-कृ-
गृ-ज्ञां कः ।[५१] उपसर्गे त्वातो डः ।[५२] धेट्दृशि-पा-घ्रा-ध्मः शः ।[५३]
साहि-साति-वेद्युदेजि-चेति-धारि-पारि-लिम्प-विन्दां त्वनुपसर्गे ।[५४] वा

ज्वलादिदुनीभुवो णः ।[५५] समाङोः स्रुवः ।[५६] अवे हृस्रोः ।[५७] दिहि-लिहि-श्लिषि-श्वसि-व्यध्यतीणश्यातां च ।[५८] ग्रहेर्वा ।[५९] गेहे त्वक् ।[६०] शिल्पिनि वुष् ।[६१] गस्थकः ।[६२] ण्युट् च ।[६३] हः काल-व्रीह्योः ।[६४] आशिष्यकः ।[६५] प्रु-सृ-ल्वां साधुकारिणि ।[६६] —इति द्वितीयः पादः ।

❀

चतुर्थेऽध्याये तृतीयः पादः ।

कर्मण्यण् ।[१] ह्वावामश्च ।[२] शीलि-कामि-भक्ष्याचरिभ्यो णः ।[३] आतोऽनुपसर्गात् कः ।[४] नाम्नि स्थश्च ।[५] तुन्द-शोकयोः परिमृजापनुदोः ।[६] प्रे दाज्ञः ।[७] समि ख्यः ।[८] गष्ठक् ।[९] सुरा-सीध्वोः पिबतेः ।[१०] हृञोऽज् वयोऽनुद्यमनयोः ।[११] आङि ताच्छील्ये ।[१२] अर्हश्च ।[१३] धृञः प्रहरणे चादण्डसूत्रयोः ।[१४] धनुर्दण्ड-त्सरुलाङ्गलाङ्कुश-यष्टि-तोमरेषु ग्रहेर्वा ।[१५] स्तम्ब-कर्णयो रमिजपोः ।[१६] शंपूर्वेभ्यः संज्ञायाम् ।[१७] शीङोऽधिकरणे च ।[१८] चरेष्टः ।[१९] पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सर्तेः ।[२०] पूर्वे कर्तरि ।[२१] कृञो हेतु-ताच्छील्यानुलोम्येष्वशब्द-श्लोक-कलह-गाथा-वैर-चाटु-सूत्र-मन्त्रपदेषु ।[२२] तदाद्याद्यनन्तन्ताकार-बहु-बाह्वहर्दिवा-विभा-निशा-प्रभा-भाश्चित्रकर्तृ-नान्दी-किं-लिपि-लिबि-बलि-भक्ति-क्षेत्र-जङ्घा-धनुररुः-संख्यासु च ।[२३] भृतौ कर्मशब्दे ।[२४] इः स्तम्ब-शकृतोः ।[२५] हरतेर्दृति-नाथयोः पशौ ।[२६] फले-मल-रजःसु ग्रहेः ।[२७] देव-वातयोरापेः ।[२८] आत्मोदर-कुक्षिषु भृञः खिः ।[२९] एजेः खश् ।[३०] शुनी-स्तन-मुञ्ज-कूलास्य-पुष्पेषु धेटः ।[३१] नाडी-कर-मुष्टि-पाणि-नासिकासु ध्मश्च ।[३२] विध्वरुस्तिलेषु तुदः ।[३३] असूर्योग्रयोर्दृशः ।[३४] ललाटे तपः ।[३५] मित-नख-परिमाणेषु पचः ।[३६] कूल उद्रुजोद्वहोः ।[३७] वहंलिहाभ्रलिह-परंतपेरंमदाश्च ।[३८] वदेः खः प्रिय-वशयोः ।[३९] सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कषः ।[४०] भयर्तिमेघेषु कृञः ।[४१] क्षेम-प्रियमद्रेष्वण् च ।[४२] भाव-करणयोस्त्वाशिते भुवः ।[४३] नाम्नि तॄ-भृ-वृजि-धारि-तपि-दमि-सहां संज्ञायाम् ।[४४] गमश्च ।[४५] उरोविहायसोरुरविहौ च ।[४६] डोऽसंज्ञायामपि ।[४७] विहंग-तुरंग-भुजंगाश्च ।[४८] अन्यतोऽपि च ।[४९] हन्तेः कर्मण्याशीर्गत्योः ।[५०] अपात् क्लेशतमसोः ।[५१] कुमार-शीर्षयोर्णिन् ।[५२] टग् लक्षणे जायापत्योः ।[५३] अमनुष्यकर्तृकेऽपि च ।[५४] हस्ति-बाहु-कपाटेषु शक्तौ ।[५५] पाणिघ-ताडघौ शिल्पिनि ।[५६] नग्न-पलित-प्रियान्ध-स्थूलसुभग-गाढ्येष्वभूततद्भावे कृञः ख्युट् करणे ।[५७] भुवः खिष्णु-खुकञौ कर्तरि ।[५८] भजो विण् ।[५९] सहश्छन्दसि ।[६०] वहश्च ।[६१] अनसि डश्च ।[६२] दुहः को घश्च ।[६३] विट् क्रमि-गमि-खनि-सनि-जनाम् ।[६४] मन्त्रे श्वेतव-हुक्थशंस-पुरोडाशाव-यजिभ्यो विण् ।[६५] आतो मन्-कनिब्-वनिब्-विचः ।[६६] अन्येभ्योऽपि

दृश्यन्ते ।[६७] क्विप् च ।[६८] वहे पञ्चम्यां भ्रंशेः ।[६९] स्पृशोऽनुदके ।[७०] अदो-
ऽनन्ने ।[७१] क्रव्ये च ।[७२] ऋत्विग्-दधृक्-स्रग्-दिगुष्णिगहश्च ।[७३] सत्-सू-द्विष-
द्रुह-दुह-युज-विद-भिद-छिद-जि-नी-राजामुपसर्गेऽपि ।[७४] कर्मण्युपमाने
त्यदादौ दृशष्टक्-सकौ च ।[७५] नाक्व्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये ।[७६] कर्तर्यु-
पमाने ।[७७] व्रताभीक्ष्ण्ययोश्च ।[७८] मनः पुंवच्चात्र ।[७९] खश्चात्मने ।[८०]
करणेऽतीते यजः ।[८१] कर्मणि हनः कुत्सायाम् ।[८२] क्विब् ब्रह्म-भ्रूण-वृत्रेषु ।[८३]
कृञः सुपुण्य-पाप-कर्म-मन्त्र-पदेषु ।[८४] सोमे सुञः ।[८५] चेरग्नौ ।[८६] विक्रिय-
इन् कुत्सायाम् ।[८७] दृशेः क्वनिप् ।[८८] सहराज्ञोर्युधः ।[८९] कृञश्च ।[९०] सप्तमी-
पञ्चम्यन्ते जनेर्डः ।[९१] अन्यत्रापि च ।[९२] निष्ठा ।[९३] ङ्वनिप् सुयजोः ।[९४]
जीर्यतेरन्तृन् ।[९५] – इति तृतीयः पादः ।



चतुर्थेऽध्याये चतुर्थः पादः ।

क्वन्सु-कानौ परोक्षावच्च ।[१] वर्तमाने शन्तृङानशावप्रथमैकाधिक-
रणामन्त्रितयोः ।[२] लक्षण-हेत्वोः क्रियायाः ।[३] वेत्तेः शन्तुर्वन्सुः ।[४]
आनोऽत्रात्मने ।[५] ई तस्यासः ।[६] आन्मोऽन्त आने ।[७] पूङ्-यजोः शानङ् ।[८]
शक्तिवयस्ताच्छील्ये ।[९] इङ्धारिभ्यां शन्तृङ्ङकृच्छ्रे ।[१०] द्विषः शत्रौ ।[११]
सुञो यज्ञसंयोगे ।[१२] अर्हः प्रशंसायाम् ।[१३] तच्छीलतद्धर्मतत्साधुकारिष्वा
क्वेः ।[१४] तृन् ।[१५] भ्राज्यलंकृञ्भू-सहि-रुचि-वृति-वृधि-चरि-प्रजनापत्रपेना-
मिष्णुच् ।[१६] मदि-पति-पचामुदि ।[१७] जि-भुवोः स्नुक् ।[१८] ग्ला-म्ला-स्था-क्षि-प-
चि-परिमृजां स्नुः ।[१९] त्रसि-गृधि-धृषि-क्षिपां क्नुः ।[२०] शमामष्टानां घिनिण् ।[२१]
युज-भज-भुज-द्विष-द्रुह-दुह-दुषाङ्-क्रीड-त्यजानुरुधाङ्-यमाङ्-यस-र-
न्जाभ्याङ्हनां च ।[२२] समि-सृजि-पृचि-ज्वरित्वराम् ।[२३] वौ विच-कत्थ-स्र-
म्भु-कष-लषाम् ।[२४] प्रे द्रु-मथ-वद-वस-लपाम् ।[२५] परौ सृदहोः ।[२६] क्षिप-रट-व-
द-वादि-देविभ्यो वुण् च ।[२७] निन्द-हिंस-क्लिश-खा-दानेकस्वरविनाशिव्या-
भाषासूयां वुञ् ।[२८] देवि-कुशोश्चोपसर्गे ।[२९] क्रुधि-मण्डि-चलि-शब्दार्थेभ्यो
युः ।[३०] रुचादेश्च व्यञ्जनादेः ।[३१] जु-चंक्रम्य-दंद्रम्य-सृ-गृधि-ज्वल-शुच-लष-
पत-पदाम् ।[३२] न यान्तसूद-दीप-दीक्षाम् ।[३३] शॄ-कम-गम-हन-वृष-भू-स्था-
लष-पत-पदामुकञ् ।[३४] वृङ्-भिक्षि-लुण्टि-जल्पि-कुट्टां षाकः ।[३५] प्रे जु-सु-
वोरिन् ।[३६] जीण्-दृक्षि-विश्रि-परिभू-वमाभ्यमाव्यथां च ।[३७] दयि-पति-गृहि-
स्पृहि-श्रद्धा-तन्द्रा-निद्राभ्य आलुः ।[३८] शदि-सदि-धेड्दासिभ्यो रुः ।[३९]
स्रदिघसां मरक् ।[४०] मिदि-भासि-भन्जां घुरः ।[४१] छिदि-भिदि-विदां कु-
रः ।[४२] जागुरूकः ।[४३] चेक्रीयितान्तानां यजि-जपि-दंशि-वदाम् ।[४४] तस्य

लुगचि ।[४५] ततो यातेर्वरः ।[४६] कसि-पिसि-भासीश-स्था-प्रमदां च ।[४७] सृ-जीण्-नशां करप् ।[४८] गमस्त च ।[४९] दीपि-कम्प्यजसि-हिंसि-कमि-स्मिनमां रः ।[५०] सनन्ताशंसिभिक्षामुः ।[५१] विन्दिच्छू च ।[५२] आदृवर्णोपधालोपिनां किद्द्वे च ।[५३] तृषि-धृषि-स्वपां नजिङ् ।[५४] शॄवन्द्योरारुः ।[५५] भियो रुग्-लुकौ च ।[५६] क्विप् भ्राजि-पॄ-धुर्वी-भासाम् ।[५७] द्युति-गमोर्द्वे च ।[५८] भुवो डुर्विशंप्रेषु ।[५९] कर्मणि धेटः ष्ट्रन् ।[६०] नी-दाप्-शसु-यु-युज-स्तु-तुद-सि-सिच-मिह-पत-दंश-नहां करणे ।[६१] हल-शूकरयोः पुवः ।[६२] अर्ति-लू-धू-सू-खनि-सहि-चरिभ्य इत्रन् ।[६३] पुवः संज्ञायाम् ।[६४] ऋषि-देवतयोः कर्तरि ।[६५] ञ्यनुबन्ध-मति-बुद्धि-पूजार्थेभ्यः क्तः ।[६६] उणादयो भूतेऽपि ।[६७] भविष्यति गम्यादयः ।[६८] वुण-तुमौ क्रियायां क्रियार्थायाम् ।[६९] भाववाचिनश्च ।[७०] कर्मणि चाण् ।[७१] शन्त्रानौ स्य-संहितौ शेषे च ।[७२]

—इति चतुर्थः पादः ।

❀

चतुर्थेऽध्याये पञ्चमः पादः ।

पद-रुज-विश-स्पृशोचां घञ् ।[१] सृ स्थिर-व्याध्योः ।[२] भावे ।[३] अकर्तरि च कारके संज्ञायाम् ।[४] सर्वस्मात् परिमाणे ।[५] इङाभ्यां च ।[६] उपसर्गे रुवः ।[७] समि द्रुवः ।[८] यु-द्रुवोरुदि च ।[९] श्रि-नी-भूभ्योऽनुपसर्गे ।[१०] क्षु-श्रुभ्यां वौ ।[११] स्त्रश्च प्रथनेऽशब्दे ।[१२] प्रे चायज्ञे ।[१३] छन्दोनाम्नि च ।[१४] प्रे द्रु-स्तु-स्रुवः ।[१५] नियोऽवोदोः ।[१६] निरभ्योः पूल्वोः ।[१७] यज्ञे समि स्तुवः ।[१८] उन्न्योर्ग्रिरः ।[१९] किरो धान्ये ।[२०] नौ वृञः ।[२१] उदि श्रि-पुवोः ।[२२] ग्रहश्च ।[२३] अवन्योराक्रोशे ।[२४] प्रे लिप्सायाम् ।[२५] समि मुष्टौ ।[२६] परौ यज्ञे ।[२७] वावे वर्षप्रतिबन्धे ।[२८] प्रे रश्मौ ।[२९] वणिजां च ।[३०] वृणोतेराच्छादने ।[३१] आङि रु-प्लुवोः ।[३२] परौ भुवोऽवज्ञाने ।[३३] चेस्तु हस्तादाने ।[३४] शरीर-निवासयोः कश्चादेः ।[३५] संघे चानौत्तराधर्ये ।[३६] परिन्योर्नीणोर्द्यूताभ्रेषयोः ।[३७] व्युपयोः शेतेः पर्याये ।[३८] अभिविधौ भाव इनुण् ।[३९] कर्मव्यतीहारे णच् स्त्रियाम् ।[४०] स्वर-वृ-दृ-गमि-ग्रहाम् अल् ।[४१] उपसर्गेऽदेः ।[४२] नौ ण च ।[४३] मदेः प्रसमोर्हर्षे ।[४४] व्यध-जपोश्चानुपसर्गे ।[४५] स्वन-हसोर्वा ।[४६] यमः संन्युपविषु च ।[४७] नौ गद-नद-पठ-स्वनाम् ।[४८] क्वणो वीणायां च ।[४९] पणः परिमाणे नित्यम् ।[५०] समुदोरजः पशुषु ।[५१] ग्लहोऽक्षेषु ।[५२] सर्तेः

प्रजने ।[५३] ह्वो हुश्चाभ्युपनिविषु च ।[५४] आङि युद्धे ।[५५] भावेऽनुपसर्गस्य ।[५६]
हन्तेर्वधिश्च ।[५७] मूर्तौ घनिश्च ।[५८] प्राद् गृहैकदेशे घञ् च ।[५९] अन्तर्घनो-
द्घनौ देशात्याधानयोः ।[६०] करणेऽयोविद्रुषु ।[६१] परौ डः ।[६२] नौ निमिते ।[६३]
समुदोर्गण-प्रशंसयोः ।[६४] उपात् क आश्रये ।[६५] स्तम्बेऽच ।[६६] ट्वनुब-
न्धादथुः ।[६७] ड्वनुबन्धात् त्रिमक् तेन निर्वृत्ते ।[६८] याचि-विछि-प्रछि-
यजि-स्वपि-रक्षि-यतां नङ् ।[६९] उपसर्गे दः किः ।[७०] कर्मण्यधिकरणे च ।[७१]
स्त्रियां क्तिः ।[७२] साति-हेति-यूति-जूतयश्च ।[७३] भावे पचि-गा-पा-
स्थाभ्यः ।[७४] व्रज-यजोः क्यप् ।[७५] समजासनि-सद-नि-पति-शीङ्-सु-
विद्यटि-चरि-मनि-भृञिणां संज्ञायाम् ।[७६] कृञः श च ।[७७] सर्तेर्यश्च ।[७८]
इच्छा ।[७९] शंसिप्रत्ययादः ।[८०] गुरोश्च निष्ठासेटः ।[८१] षानुबन्धभिदादि-
भ्यस्त्वङ् ।[८२] भीषि-चिन्ति-पूजि-कथि-कुम्बि-चर्चि-स्पृहि-तोलि-दोलि-
भ्यश्च ।[८३] आतश्चोपसर्गे ।[८४] ईषि-श्रन्थ्यासि-वन्दि-विदि-कारितान्तेभ्यो
युः ।[८५] कीर्तीषोः क्तिश्च ।[८६] रोगाख्यायां वुञ् ।[८७] संज्ञायां च ।[८८] पर्याया-
र्हणेषु च ।[८९] प्रश्नाख्यानयोरिञ् च वा ।[९०] नञ्यन्याक्रोशे ।[९१] कृत्ययुटोऽ-
न्यत्रापि च ।[९२] नपुंसके भावे क्तः ।[९३] युट् च ।[९४] करणाधिकरणयोश्च ।[९५]
पुंसि संज्ञायां घः ।[९६] गोचर-संचर-वह-व्रज-व्यज-क्रमापणनिगमाश्च ।[९७]
अवे तृस्त्रोर्घञ् ।[९८] व्यञ्जनाच ।[९९] उदङ्कोऽनुदके ।[१००] जालमानायः ।[१०१] ईषद्-
दुः-सुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल् ।[१०२] कर्तृ-कर्मणोश्च भू-कृञोः ।[१०३] आद्भ्यो
युवदरिद्रातेः ।[१०४] शासु-युधि-दृशि-धृषि-मृषां वा ।[१०५] इच्छार्थेष्वेककर्तृकेषु
तुम् ।[१०६] कालसमयवेलाशक्त्यर्थेषु च ।[१०७] अर्हतौ तृच् ।[१०८] शकि च
कृत्याः ।[१०९] प्रैष्यातिसर्गप्राप्तकालेषु ।[११०] आवश्यकाधमर्णयोर्णिन् ।[१११]
तिक्कृतौ संज्ञायामाशिषि ।[११२] धातुसंबन्धे प्रत्ययाः ।[११३] — इति पञ्चमः पादः ।

❁

चतुर्थेऽध्याये षष्ठः पादः ।

अलं-खल्वोः प्रतिषेधयोः क्त्वा वा[१] । मेङः ।[२] एककर्तृकयोः पूर्वकाले ।[३]
परावरयोगे च ।[४] णम् चाभीक्ष्णये द्विश्च पदम् ।[५] विभाषाग्रे-प्रथम-पूर्वेषु ।[६]
कर्मण्याक्रोशे कृञः खमिञ् ।[७] स्वादौ च ।[८] अन्यथैवंकथमित्थंसु सिद्धा-
प्रयोगश्चेत् ।[९] यथा-तथयोरसूयाप्रतिवचने ।[१०] दृशो णम् साकल्ये ।[११]
यावति विन्द-जीवोः ।[१२] चर्मोदरयोः पूरेः ।[१३] वर्षप्रमाण ऊलोपश्च वा ।[१४]

चेलार्थे क्नोपेः ।[15] निमूल-समूलयोः कषः ।[16] शुष्क-चूर्ण-रूक्षेषु पिषः ।[17] जीवे ग्रहः ।[18] अकृते कृञः ।[19] समूले हन्तेः ।[20] करणे ।[21] हस्तार्थे ग्रहवर्तिवृताम् ।[22] स्वार्थे पुषः ।[23] स्नेहने पिषः ।[24] बन्धोऽधिकरणे ।[25] संज्ञायां च ।[26] कर्त्रोर्जीव-पुरुषयोर्नशि-वहिभ्याम् ।[27] ऊर्ध्वे शुषि-पूरोः ।[28] कर्मणि चोपमाने ।[29] कषादिषु तैरेवानुप्रयोगः ।[30] तृतीयायामुपदंशेः ।[31] हिंसार्थाच्चैककर्मकात् ।[32] सप्तम्यां च प्रमाणासत्त्योः ।[33] उपपीड-रुध-कर्षश्च ।[34] अपादाने परीप्सायाम् ।[35] द्वितीयायां च ।[36] स्वाङ्गेऽध्रुवे ।[37] परिक्लिश्यमाने च ।[38] विशि-पति-पदि-स्कन्दां व्याप्यमानासेव्यमानयोः ।[39] तृष्य-स्वोः क्रियान्तरे कालेषु ।[40] नाम्न्यादिशिग्रहोः ।[41] कृञोऽव्ययेऽयथेष्टाख्याने क्त्वा च ।[42] तिर्यच्यपवर्गे ।[43] स्वाङ्गे तसि ।[44] भुवस्तूष्णीमि च ।[45] कर्तरि कृतः ।[46] भाव-कर्मणोः कृत्य-क्त-खलर्थाः ।[47] आदिकर्मणि क्तः कर्तरि च ।[48] गत्यर्थाकर्मकश्लिष-शीङ्-स्थास-वस-जन-रुह-जीर्यतिभ्यश्च ।[49] दाशगोघ्नौ संप्रदाने ।[50] भीमादयोऽपादाने ।[51] ताभ्यामन्यत्रोणादयः ।[52] क्तोऽधिकरणे ध्रौव्यगति-प्रत्यवसानार्थेभ्यः ।[53] युवु-झामनाकान्ताः ।[54] समासे भाविन्यनञः क्त्वो यप् ।[55] च-जोः क-गौ धुड-घानुबन्धयोः ।[56] न्यङ्क्वादीनां हश्च घः ।[57] न कवर्गादिव्रज्यजाम् ।[58] ण्यण्यावश्यके ।[59] प्रवचर्चि-रुचि-याचि-त्यजाम् ।[60] वचोऽशब्दे ।[61] नि-प्राभ्यां युजः शक्ये ।[62] भुजोऽन्ने ।[63] भुज-न्युब्जौ पाणि-रोगयोः ।[64] दृग्-दृश-दृक्षेषु समानस्य सः ।[65] इदमी ।[66] किम् की ।[67] अदोऽमूः ।[68] आ सर्वनाम्नः ।[69] विष्वग्देवयोश्चान्त्यस्वरादे-रद्र्यञ्चतौ कौ ।[70] सह-सं-तिरसां सध्रि-समि-तिरयः ।[71] रुहेर्धो वा ।[72] मो नो धातोः ।[73] वमोश्च ।[74] स्वरे धातुरनात् ।[75] अर्तीण्घसैकस्वरातामिड् वन्सौ ।[76] गम-हन-विद-विश-दृशां वा ।[77] दाश्वान् साह्वान् मीढ्वांश्च ।[78] न श्र्युवर्णवृतां कानुबन्धे ।[79] घोषवत्त्योश्च कृति ।[80] वेषु-सह-लुभ-रुष-रिषां ति ।[81] रधादिभ्यश्च ।[82] स्वरति-सूति-सूयत्यूदनुबन्धात् ।[83] उदनुबन्धपूक्लिशां क्त्वि ।[84] जृ-व्रश्चोरिट् ।[85] लुभो विमोहने ।[86] क्षुधि-वसोश्च ।[87] निष्ठायां च ।[88] पू-क्लिशोर्वा ।[89] न डीश्वीदनुबन्धवेटामपति-निष्कुषोः ।[90] आदनुबन्धाच्च ।[91] भावादिकर्मणोर्वा ।[92] क्षुभिवाहि-स्वनि-ध्वनि-फणि-कषि-घुषां क्ते नेड् मन्थ-भृशमनस्तमोऽनायासकृच्छ्राविशब्दनेषु ।[93] लग्न-म्लिष्ट-विरिब्धाः सक्ताविस्पष्टस्वरेषु ।[94] परिवृढ-

हढौ प्रभु-बलवतोः ।[९५] सं-नि-विभ्योऽर्देः ।[९६] सामीप्येऽभेः ।[९७] वा रुष्य-मत्वरसंघुषास्वनाम् ।[९८] हृषेर्लोमसु ।[९९] दान्त-शान्त-पूर्ण-दस्त-स्पष्ट-च्छन्न-ज्ञप्ताश्चेनन्ताः ।[१००] रान्निष्ठातो नोऽपृ-मूर्छि-मदि-ख्या-ध्याभ्यः ।[१०१] दादू दस्य च ।[१०२] आतोऽन्तःस्थासंयुक्तात् ।[१०३] ल्वाद्योदनुबन्धाच्च ।[१०४] व्रश्चेः क च ।[१०५] क्षेर्दीर्घात् ।[१०६] श्योऽस्पर्शे ।[१०७] अनपादानेऽन्चेः ।[१०८] अविजिगीषायां दिवः ।[१०९] ह्री-घ्रा-त्रोन्द-नुद-विन्दां वा ।[११०] क्षै-शुषि-पचां मकवाः ।[१११] वा प्रस्त्यो मः ।[११२] निर्वाणोऽवाते ।[११३] भित्तर्णवित्ताः शकलाधमर्ण-भोगेषु ।[११४] अनुपसर्गात् फुल्ल-क्षीब-कृशोल्लाघाः ।[११५] अवर्णादूटो वृद्धिः ।[११६]—इति षष्ठः पादः । समाप्तश्चायं चतुर्थोऽध्यायः ।

॥ इति चतुर्थं कृत्प्रकरणं समाप्तम् ॥

*

॥ इति कातन्त्रं समाप्तम् ॥

* *
*

कातन्त्रसूत्रपाठस्य

अकाराद्यनुक्रमेण सूचिः ।

